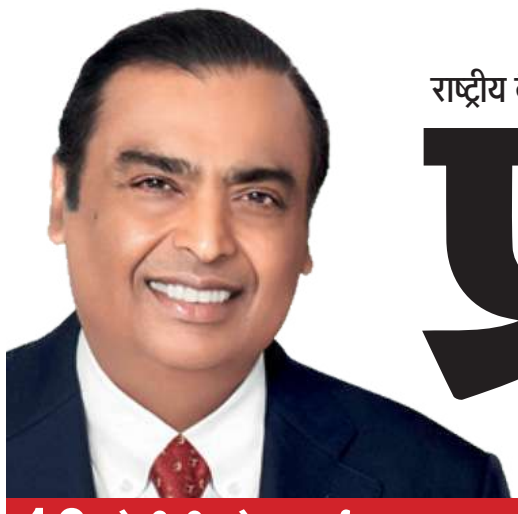

राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

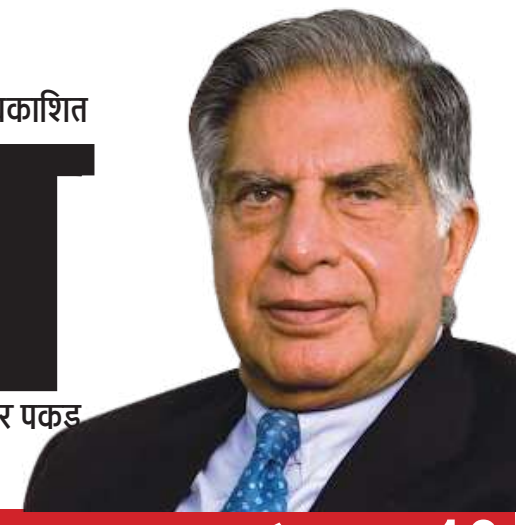

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

10 ओटीटी प्लेटफार्म पर अपना दबदबा बढ़ाना चाहते हैं अंबानी ...

टाटा ने अपने कर्मचारियों को दिया छह्रश्वपरफाड़ इनाम, 62 परसेंट तक ... 10

वर्ष : 11 | अंक : 34 | पटना, बुधवार, 14 जून, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 42°C

न्यूनतम तापमान 30.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,995
चांदी	72,500
सेंसेक्स	57,635
निफ्टी	16,986

शांति सैनिकों की सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग जरूरी : राजनाथ

प्रात : किरण एजेंसी

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि प्रभावित क्षेत्रों में तैनात संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों की सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नवाचार और अधिक से अधिक सहयोग समय की मांग है। श्री सिंह ने संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना तंत्र के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मंगलवार को यहां भारतीय सेना द्वारा आयोजित एक विशेष सेमिनार को संबोधित करते हुए संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों की सुरक्षा और उनकी तैनाती के उद्देश्य की सफलता सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार राष्ट्रों से नवाचारी दृष्टिकोण अपनाने और अधिक से अधिक सहयोग करने का आह्वान किया। रक्षा मंत्री ने शांति सैनिकों के सामने आ रही नई-नई चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए उनकी सुरक्षा और उनके अभियान की सफलता के लिए प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी और संसाधनों में अधिक से अधिक निवेश करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने शांति अभियानों में महिलाओं की सार्थक भागीदारी का समर्थन करते हुए इस बात पर जोर दिया कि संघर्ष से प्रभावित क्षेत्रों में चलाए जा रहे मिशन के दौरान उनके विशिष्ट योगदान को भी मान्यता दी जानी चाहिए। श्री सिंह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित संयुक्त राष्ट्र के निर्णय लेने वाले निकायों को दुनिया की जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने की आवश्यकता

पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि जब दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश भारत सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य के रूप में एक सीट प्राप्त नहीं कर पाता है, तो इससे संयुक्त राष्ट्र की नैतिक वैधता कमजोर होती है। इसलिए अब संयुक्त राष्ट्र के निकायों को अधिक लोकतांत्रिक और मौजूदा वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करने वाला बनाने का समय आ गया है। रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत के संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में योगदान की समृद्ध विरासत रही है और वह शांति सैनिकों के रूप में सबसे बड़ा योगदान देने वाला देश है। भारत ने अब तक शांति अभियानों में लगभग 2.75 लाख सैनिकों का योगदान दिया और अभी 12 संयुक्त राष्ट्र मिशनों में इसके लगभग 5,900 सैनिकों को तैनात है। वर्ष 1950 में कोरिया में अपनी पहली प्रतिबद्धता से लेकर अब तक भारतीय सैनिकों ने अपनी पेशेवर उत्कृष्टता के लिए सार्वभौमिक प्रशंसा अर्जित करते हुए जटिल, असहनीय शांति अभियानों में हिस्सा लिया है। उन्होंने उन सभी भारतीयों का आभार व्यक्त किया जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों के रूप में सेवा की है या अभी सेवा कर रहे हैं। श्री सिंह ने कहा, ह्यह्यहमारे साहसी सैनिक, पुलिस कर्मी और नागरिक विशेषज्ञों ने शांति स्थापना के लिए असाधारण समर्पण और अटूट प्रतिबद्धता का शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने सबसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों और कठिन से कठिन माहौल में निःस्वार्थ सेवा की है, शांति व्यवस्था की भावना को मूर्त रूप देते हुए संयुक्त राष्ट्र चार्टर में शामिल सिद्धांतों को बरकरार रखा है। उनकी अटूट प्रतिबद्धता, पेशेवर रुख और बलिदान हम सभी को प्रेरित करते हैं। श्री सिंह ने कर्तव्य निभाने के दौरान अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और उन्हें सरकारी सहायता देने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने अधिक न्यायसंगत, शांतिपूर्ण और समावेशी दुनिया का निर्माण करने वाले शांति सैनिकों के बलिदान का सम्मान करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, आइए हम राष्ट्रों के बीच संवाद, समझ और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को नया रूप प्रदान करें। एक साथ मिलकर हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहां हर व्यक्ति शांति, सद्भाव और सम्मान के साथ रह सके।

संक्षिप्त खबरें

सांसद प्रतिनिधि के परिवार के दो सदस्यों की डूबने से मौत

प्रातः किरण संवाददाता/ शाहकुंड (भागलपुर)। सुलतानगंज के अजगैवीनाथ गंगा घाट पर कोडरमा के सांसद अन्नपूर्णा देवी के प्रतिनिधि उषा देवी के श्राद्धक्रम के बाद सांसद अपने सपरिवार के साथ शुद्धिकरण के लिए गंगा स्नान करने पहुचे थे, जहां गंगा स्नान करने के दौरान लगभग दस लोग गंगा में स्नान करने के क्रम में डुबने लगने। स्थानीय दुकानदारों की मदद से सात व आठ लोगों की जान बचा ली गई, जबकि दो लोग गंगा में डुबने पर लापता होने की जानकारी बतायी जा रही है। वहीं, इस घटना में कोडरमा सांसद प्रतिनिधि उषा देवी के 15 बर्षीय बेटी प्रियांशु कुमारी व भांजा 25 बर्षीय पियूष कुमार जो गंगा में अबतक डुबने पर लापता बताया जा रहा है। घटना की जानकारी पुलिस को मिलने पर घटना स्थल पर स्थानीय पुलिस, अंचल के राजस्व अधिकारी रवि कुमार, एसडीआरएफ टीम मौके पर पहुचकर डुबे लोगों की खोजबीन करने की कवायद में जुटी हुई हैं। परिजन मिथलेश शर्मा ने बताया कि मां का देहांत होने के बाद श्राद्धक्रम घर में होने के बाद सपरिवार शुद्धिकरण के लिए गंगा स्नान करने पहुंचे थे।

सड़क हादसे में तीन की मौके पर हुई मौत, आधा दर्जन से ज्यादा लोग घायल

प्रातः किरण ब्यूरो/ भागलपुर। जिले भर में सड़क हादसे का दौर जारी है, आलम यह है कि बेलगाम वाहनों की जद्दोजहद में सड़क हादसों का दौर थमने का नाम नहीं ले रहा है, आए दिन सड़क हादसे का शिकार हो कर लोग की मौत की गाल समा रहे हैं, स्थिति ऐसी है कि सड़क हादसे के शिकार हो मौत की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इसी कड़ी में एक और ट्रैक्टर और ऑटो में जोरदार टक्कर की घटना घटित होने का मामला सामने आया है। घटना को लेकर बताया जा रहा है कि नवगछिया पुलिस जिला के रंगरा थाना क्षेत्र अंतर्गत एनएच 31 पर ट्रैक्टर और ऑटो की भीषण टक्कर में ऑटो रिक्शा पर सवार करीब एक दर्जन से ज्यादा लोग घायल होने की सूचना सामने आई है। वही सड़क हादसे की घटना को लेकर प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक तेज रफ्तार ट्रैक्टर चालक ने बिपरीत दिशा से आ रही यात्रियों से बड़ी एक ऑटो रिक्शा में जोड़दार टक्कर मार दी। वही उक्त घटना में तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी। वहीं करीब आधे दर्जन से ज्यादा लोग घायल हो गये। जिसे मौजूद राहगीरों व स्थानीय लोगों की मदद से त्वरित इलाज के लिए नबगछिया अनुमंडल अस्पताल लेजाया गया। जहां से चिकित्सक द्वारा प्राथमिक इलाज के साथ ही सभी घायलों को बेहतर इलाज के लिए मायागंज अस्पताल रैफर कर भेज दिया गया है। जहां चिकित्सकों द्वारा भर्ती कर सभी घायलों का इलाज किया जा रहा है। वही घटना को लेकर बताया जा रहा है कि घटना के सभी घायल हुए लोग अररिया से भागलपुर एक मुंडन संस्कार के लिए आये हुए थे।

नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक, 12 एजेंडों पर लगी मुहर

कैबिनेट का फैसला : राज्य सरकार ने विधायक व विधान पार्षदों का बढ़ाया फंड

अब विधायक हर साल चार करोड़ की योजनाओं की कर सकेंगे अनुशंसा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। नीतीश कैबिनेट ने बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने विधायकों और एमएलसी के फंड को बढ़ा दिया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई कैबिनेट की बैठक में इस फैसले पर मुहर लगी। बैठक में कुल 12 एजेंडों पर मुहर लगी है। नीतीश सरकार ने एमएलए, एमएलसी फंड में बदलाव किया है। सरकार ने एमएलए और एमएलसी फंड की राशि बढ़ाते हुए 3 करोड़ की बजाय 4 करोड़ रुपये कर दिया है। सीएम क्षेत्र विकास योजना के गाइडलाइन में संशोधन करते हुए वित्तीय वर्ष 2023-24 में अतिरिक्त राशि बढ़ा दी गई है। सरकार ने 318 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि की स्वीकृति दी है। इसमें विधानसभा सदस्यों के लिए विधानसभा में उनकी सदस्य संख्या के अनुसार 243 करोड़ और विधान परिषद के सदस्यों के लिए 75 करोड़ की स्वीकृति दी गई है। अब सभी विधायक हर साल चार करोड़ रू की योजनाओं की अनुशंसा कर सकेंगे। अब तक सभी विधायक-विधान पार्षद तीन करोड़ तक की योजनाओं की अनुशंसा करते थे। एक विधायक पांच सालों में 20 करोड़ की योजना की करेंगे अनुशंसा : सरकार ने कहा है कि वित्तीय वर्ष 2018-19 से प्रति विधान मंडल सदस्य हर साल तीन करोड़ की सीमा तक योजनाओं की अनुशंसा करते थे। लेकिन निर्माण सामाग्री में बढ़ोतरी की वजह से पूर्व के प्रावधान में बदलाव किया जा रहा है। अब मुख्यमंत्री क्षेत्र विकास योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2023-24 से प्रति विधानमंडल सदस्य हर साल चार करोड़ की सीमा तक योजनाओं की अनुशंसा कर सकते हैं।

दरभंगा मेडिल कॉलेज अस्पताल 2500 बेड का होगा : नीतीश सरकार ने दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय और अस्पताल में 3115 करोड़ रुपये खर्च करने का फैसला किया है। फिलहाल डीएमसीएच

में 569 करोड़ की लागत से 400 बेड का अस्पताल निमाणार्धीन है। शेष 2100 बेड वाले उपकरणों समेत अस्पताल भवन का निर्माण किया जाएगा। इस पर कुल लागत 2546.41 करोड़ रुपये का प्राक्कलन किया गया है। इस राशि से भवन निर्माण के साथ-साथ उपकरणों की खरीद एवं 5 साल तक के लिए रखरखाव होगा। दक्षिण बिहार एवं उत्तर बिहार के कुल 61.05 किलोमीटर लंबाई का सड़क चौड़ीकरण एवं मजबूती करण कार्य के लिए 234 करोड़ 30 लाख रुपए की मंजूरी दी गई है। इसके साथ ही विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग का नाम बदला कैबिनेट ने विज्ञान व प्राविधि की विभाग का नाम बदलने के प्रस्ताव पर भी मुहर लगा दी अब इस विभाग का नाम प्रार्थी की एवं तकनीकी शिक्षा विभाग होगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को एक विभाग के कार्यक्रम में इस संबंध में घोषणा की थी। दो जिलों के 3 लेवल क्रासिंग के बदले आरओबी निर्माण के लिये 149 करोड़ 21 लाख 13623 रुपये स्वीकृत किये गए हैं। मंत्रिमंडल द्वारा लिए गए फैसले की जानकारी मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ ने दी।

कैबिनेट के अन्य फैसले : राजगीर में लगने वाले मलमास मेले के लिए 22 करोड़ की स्वीकृति दी गई है। बिहार आकस्मिकता निधि से पैसा खर्च होगा। किशनगंज में 8 एकड़ गैरमजरूआ जमीन को नवनिर्मित इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रावास निर्माण के लिए निशुल्क हस्तांतरित किया गया है। दरभंगा शहर में जल निकासी के लिए 235 करोड़ 20 लाख रुपए की स्वीकृति दी गई है। बुडको को कार्यकारी एजेंसी तय किया गया है। वाणिज्य कर विभाग के 9 बड़े अंचल पटना मध्य, पटना दक्षिणी, दानापुर, भागलपुर, पूर्णिया, दरभंगा, गया, मुजफ्फरपुर पश्चिमी तथा सारण अंचल छपरा के विभाजन की स्वीकृति दी गई है। प्राथमिक सब्जी उत्पादक सहकारी समिति को संयत्र बैंक के लिए सहायता प्राथमिक सब्जी उत्पाद सहकारी समिति में सब्जी की खेती में प्रयुक्त होने वाले अत्याधुनिक कृषि यंत्रों का कृषि संयंत्र बैंक स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता दी जाएगी।

मुख्यमंत्री हरित कृषि संयंत्र योजना के तहत 439 करो रुपए से पैक्सो में कृषि संयंत्र बैंक स्थापित किए जाने के बाद और शेष राशि का उपयोग किया जाएगा। इसके तहत पृथ्वी प्राथमिक सब्जी उत्पादक सहकारी समिति को 15-15 लाख रुपए उपलब्ध कराया जाएगा। इसमें 50 फीसदी अनुदान जबकि 50 फीसदी ऋण के रूप में दिया जाएगा। कृषि यंत्रों का क्रय जेम पोर्टल के माध्यम से समिति द्वारा किया जाएगा।

पूर्व सीएम जीतन राम मांझी के पुत्र संतोष सुमन ने नीतीश मंत्रिमंडल से दिया इस्तीफा

बोलें- पार्टी का अस्तित्व बचाए रखने के लिए दिया इस्तीफा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) के प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के पुत्र डॉ. संतोष सुमन ने आज नीतीश मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। डॉ.सुमन ने मंगलवार को पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि अपनी पार्टी हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा का अस्तित्व बचाए रखने के लिए उन्होंने मंत्री पद से इस्तीफा दिया है और अपना त्यागपत्र मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भेज दिया है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी का जनता दल यूनाइटेड जदयू में विलय करने का प्रस्ताव दिया गया था, जिसे हम लोगों ने नामंजूर कर दिया है और नीतीश मंत्रिमंडल से इस्तीफा देने के विकल्प को चुना है। हम नेता ने कहा कि उनकी पार्टी अभी भी महागठबंधन का हिस्सा है लेकिन आगे का फैसला लालू-नीतीश करेंगे। गौरतलब है कि डॉ. सुमन नीतीश मंत्रिमंडल में अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण मंत्री थे। बिहार सरकार में अपने मंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद पूर्व मंत्री डॉ. संतोष कुमार सुमन ने पटना में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि हमारी पार्टी का अस्तित्व खतरे में था उसको बचाने के लिए हमने ये कदम उठाया है। मैं महागठबंधन आज भी रहना चाहता हूं। एनडीए में शामिल होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि अभी मैंने ऐसा कुछ नहीं सोचा है। उन्होंने कहा कि फिलहाल मैंने मंत्री पद से इस्तीफा दिया है और गठबंधन में फिलहाल बने हुए हैं। अब बड़े दलों को सोचना होगा की हमें रखे या नहीं। बीजेपी के साथ जाने के सवाल पर संतोष सुमन का बयान, फिलहाल किसी से बात नहीं हुई है। आगे की राजनीति पर बैठकर बात की जाएगी। यह पूछे जाने पर कि क्या उनकी पार्टी 23 जून को पटना में होने वाली विपक्षी पार्टी की बैठक में शामिल होगी? तो उन्होंने कहा कि जब हमें बुलाया ही नहीं गया तो हम उसमें कैसे चले जाएं?

मांझी को मानसिक तौर पर प्रताड़ित किया जा रहा थाः संतोष सुमन के इस्तीफे और उनके प्रेस कांफ्रेंस के बाद बोले विजय सिन्हा ने कहा कि जीतन राम मांझी को मानसिक तौर पर प्रताड़ित किया जा रहा था। दलितों का अपमान किया जा रहा था। मांझी के एनडीए में शामिल होने के सवाल पर कहा कि बीजेपी ने दलितों को प्राथमिकता दी है। ऐसे लोगों के साथ नेतृत्व का साथ रहेगा।

तेजस्वी बोलें- कोई ये नहीं कह सकता कि उन्हें यहां सम्मान नहीं दिया गया

महागठबंधन सरकार में जीतनराम मांझी के बेटे के मंत्री पद से इस्तीफे के बाद उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि लगातार जीतन राम मांझी और संतोष मांझी को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आगे बढ़ाने का काम किया है। नीतीश कुमार ने जीतन राम मांझी को बिहार का मुख्यमंत्री भी बनाया। वहीं, उनके बेटे को मंत्री बनाया। तेजस्वी ने कहा कि आरजेडी ने डॉ. सुमन कुमार को अपने कोटे से एमएलसी भी बनाया। इसलिए कोई ये नहीं कह सकता कि उन्हें यहां सम्मान नहीं दिया गया। तेजस्वी ने आगे कहा कि संतोष मांझी ने चिट्ठी में साफ लिखा है कि निजी कारणों के चलते वे साथ नहीं चल सकते। इसका क्या मतलब निकाला जा सकता है। उनकी आगे क्या सोच है यह हम नहीं जानते। चिट्ठी से तो हम यही समझते हैं कि वे महागठबंधन का अंग नहीं रहना चाहते। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा कि पूरे देश की पार्टियां एक हो रही हैं, 17 पार्टियां यहां आ रही हैं। पूरे देश में विपक्ष एकजुट होकर भाजपा के खिलाफ लड़ेंगी। मांझी अपनी दुकान चला रहे हैं, छोटी-छोटी दुकान चलाने से क्या फायदा है। हम मांझी की पार्टी का विलय चाहते थे जिसके लिए वे तैयार नहीं हुए। मंत्री संतोष सुमन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह पटना में मीडिया से बातचीत कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि संतोष मांझी ने त्यागपत्र दिया जिसे

मुख्यमंत्री जी ने स्वीकार कर लिया है। उन्होंने यह लिखा है कि निजी कारणों से साथ चलने में असमर्थ हैं। इसलिए हम लोग मानते हैं कि उन्होंने महागठबंधन छोड़ दिया। मुख्यमंत्री का विशेषाधिकार है कि कब विस्तार करेंगे किसकों बनाएंगे कब बनाएंगे। विलय करने की बात थी यदि आप पार्टी अलग चला रहे हैं। अलग-अलग छोटा छोटा दुकान चलाने से क्या फायदा है। उन्होंने कहा कि हम आपके साथ आगे चलने में असमर्थ हैं। वहीं] विजय चौधरी ने कहा कि हमारे पास तो उनके इस्तीफे की कॉपी है जिसमें उन्होंन साफ लिखा है कि निजी कारणों से अब साथ चलने में असमर्थ हैं। अब संतोष सुमन मंत्री नहीं है। इसका मतलब है कि वे अब महागठबंधन में नहीं है। दो पार्टी यदि विलय करती है तो ज्यादा मजबूत पार्टी बनती है। लेकिन उन्होंने स्वयं कहा कि वे मुख्यमंत्री के साथ नहीं चलेंगे। पूरे देश की पार्टियां एक हो रही है। पूरा विपक्ष 23 जून को भाजपा के खिलाफ एक मंच पर आ रही है।

ईख उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार प्रयासरत : आलोक

पटना। गन्ना उद्योग मंत्री आलोक कुमार मेहता ने कहा है कि ईख के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है। मंत्री मंगलवार को विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक के दौरान उक्त बातें कही। बैठक में मंत्री ने अधिकारियों को निदेश दिया कि मुख्यमंत्री गन्ना विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत किसानों के प्रशिक्षण हेतु आवश्यक कार्रवाई की जाय। साथ ही गन्ना आच्छादित क्षेत्रों में जल-निकासी की भी काफी समस्या पर विभाग के स्तर पर संबंधित विभागों से समन्वय कर शीघ्र समाधान करने का भी निदेश दिया। चीनी उद्योग के स्थापना एवं विकास के लिए नई प्रोत्साहन नीति की समीक्षा के दौरान मंत्री ने कहा कि चतुर्थ कृषि रोड मैप में गुड नीति को सम्मिलित किया गया है, ऐसे में आवश्यक है कि विभाग स्तर पर गुड़ खाण्डसारी उद्योगों की स्थापना में निवेशकों को आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान की जाए ।

भोक्ता हत्या मामला: एनआईए ने तीन लोगों के खिलाफ दूसरा पूरक आरोपपत्र दाखिल किया

प्रात : किरण एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण ने प्रतिबंधित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी के कार्यकर्ताओं द्वारा 2018 में की गई एक व्यक्ति की निर्मम हत्या के मामले में तीन लोगों के खिलाफ दूसरा पूरक आरोपपत्र दाखिल किया है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी माओवादी के कार्यकर्ताओं ने 2018 में नरेश सिंह भोक्ता का कथित तौर पर अपहरण कर उसकी हत्या कर दी थी। संघीय एजेंसी के एक प्रवक्ता ने बताया कि विनय यादव उर्फ कमल उर्फ मुराद तथा उर्फ गुरु जी, नवल जी उर्फ नवल भुइयां उर्फ अर्जुन भुइयां और जलेबिया यादव उर्फ विनय के खिलाफ भारतीय दंड संहिता और गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत पटना में एनआईए की विशेष अदालत में आरोपपत्र दाखिल किया गया है। ये सभी बिहार के निवासी हैं। हत्या के मामले में झारखंड तथा बिहार में सात स्थानों पर राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) के छापेमारी करने के कुछ दिन बाद यह आरोपपत्र दाखिल किया गया। गौरतलब है कि दो नवंबर 2018 को नरेश सिंह भोक्ता का अपहरण कर लिया गया था और उसी रात उसकी हत्या कर दी गई थी। भाकपा (माओवादी) ने भोक्ता को संगठन की एक तथाकथित जन अदालत में पुलिस का मुखबिर करार दिया था। इसके बाद उसकी हत्या कर दी गई। उसका शव बिहार के औरंगाबाद जिले के मदनपुर थाना क्षेत्र के बढ़ई बिगहा गांव के पास मिला था। मामले की जांच पहले बिहार पुलिस कर रही थी। एनआईए ने पिछले साल 24 जून को इस मामले को अपने हाथ में लिया था। इस संबंध में अभी तक कुल नौ लोगों को गिरफ्तार किया गया है। एजेंसी ने 25 फरवरी को एक आरोपी के खिलाफ एक पूरक आरोपपत्र दाखिल किया था। प्रवक्ता ने बताया कि मामले में एनआईए द्वारा की जा रही जांच में, लोगों को आतंकित करने के उद्देश्य से की गई भोक्ता की नृशंस हत्या की साजिश रचने में भाकपा (माओवादी) के कई शीर्ष कमांडर की संलिप्तता का खुलासा हुआ है। अधिकारी ने बताया कि हत्या के मामले में कई हथियार और वाहन भी बरामद किए गए हैं। एनआईए के अनुसार, सोमवार को जिन तीन आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया।

समारोह | **पीएम ने राष्ट्रीय रोजगार मेला में 70 हजार लोगों को नियुक्ति पत्र वितरित करने के बाद समारोह को किया संबोधित**

स्वार्थी दल रोजगार के लिए रेट कार्ड बनाते हैं जबकि भाजपा नौजवानों के भविष्य को सेफगार्ड करती है : मोदी

प्रात : किरण एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि परिवारवाद विचारधारा की राजनीतिक पार्टियां, भ्रष्टाचार और भाई भतीजावाद पर चलती हैं और युवाओं, आम लोगों की तरक्की के अवसरों के रेट कार्ड बनाती हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी नौजवानों के भविष्य को सेफगार्ड करती है। श्री मोदी ने मंगलवार को राष्ट्रीय रोजगार मेला में 70 हजार लोगों को नियुक्ति पत्र वितरित करने के बाद समारोह को संबोधित करते हुए कहा, अभी आपने एक दो दिन पहले मीडिया में आई रिपोर्ट देखी होगी, अखबारों में, टीवी में काफी कुछ देखने को मिला। एक राज्य की उसमें चर्चा है, और चर्चा क्या है, एक राज्य में नौकरी के लिए नकदी घोटाले की जांच में जो बातें बाहर निकल करके आई हैं, वो देश के नौजवानों के लिए बहुत बड़ा चिंता का विषय ले करके आई हैं। उन्होंने कहा, उस राज्य की क्या पद्धति है, क्या बात उभर करके आई है, सरकारी नौकरी चाहिए तो हर पद के लिए, जैसे होटल में आप खाना खाने जाएं तो रेट कार्ड होता है ना, हर पद के लिए रेट कार्ड है।

रेट कार्ड बताया गया और रेट कार्ड भी कैसा है, छोटे-छोटे गरीबों को लूटा जा रहा है। अगर आप सफाई कर्मी की नौकरी चाहिए, तो उसके लिए आपको ये रेट रहेगा, भ्रष्टाचार में इतना देना पड़ेगा। अगर आपको ड्राइवर की नौकरी चाहिए तो ड्राइवर की नौकरी के लिए ये रेट रहेगा, अगर आपको क्लर्क की नौकरी चाहिए, टीचर की नौकरी चाहिए, नर्स की नौकरी चाहिए तो आपको ये रेट रहेगा। उन्होंने कहा, आप सोचिए हर पद के लिए उस राज्य में ह्यरेट कार्डह्ल चला करता है और कट मनी का कारोबार चलता है। देश का

नौजवान कहां जाएगा। ये स्वार्थी राजनीतिक दल, रोजगार के लिए रेट कार्ड बनाते हैं। श्री मोदी ने बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव का नाम लिए बिना कहा, कुछ दिन पहले एक और मामला सामने आया था। रेलवे के एक मंत्री ने नौकरी देने के बदले में गरीब किसानों की जमीनें लिखवा ली थीं। नौकरी के बदले में जमीन प्रणाली वो भी केस केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) में चल रहा है, अदालत में चल रहा है। उन्होंने कहा, हमारे सामने दो चीजें साथ हैं, एक तरफ परिवारवादी वो पार्टियां, भाई-भतीजावाद करने वाली वो पार्टियां, भ्रष्टाचार में रोजगार के नाम पर देश के नौजवानों को लूटने वाली पार्टियां, जॉब रेट कार्ड, हर चीज में रेट कार्ड, हर चीज में कट मनी, दलाली।

प्रधानमंत्री ने कहा, उनका रास्ता है रेट कार्ड, जबकि हम युवाओं के उज्ज्वल भविष्य को सेफ गार्ड करने पर काम कर रहे हैं। रेट कार्ड आपकी काबिलियत को, आपके सामर्थ्य को, आपके सपनों को चूर-चूर कर देते हैं। हम आपके सेफ गार्ड में लगे हैं जो आपके सपनों के लिए जीते हैं। आपके संकल्पों को साकार करने के लिए काम करते हैं। आपकी हर इच्छा, आकांक्षा, आपके परिवार की हर इच्छा, आकांक्षा, उसको सेफगार्ड करने में हम लगे हैं। अब देश तय करेगा देश के नौजवानों का भविष्य रेटकार्ड के भरोसे चलेगा कि सेफगार्ड व्यवस्था के अंदर सुरक्षित तरीके से पनपेगा। श्री मोदी ने कहा, ये भाई-भतीजावाद वाली पार्टियां देश के सामान्य लोगों से आगे बढ़ने के अवसर छीन लेती हैं। जबकि हम देश के सामान्य लोगों के लिए नित नए अवसर बना रहे हैं।

उन्होंने कहा कि देश में कुछ राजनीतिक दलों ने लोगों को भाषा के नाम पर एक-दूसरे से भिड़ने के लिए, देश को तोड़ने के लिए भाषा को एक हथियार बनाया, लेकिन हम भाषा को, लोगों को रोजगार देने, उन्हें सशक्त करने का माध्यम बना रहे हैं। हमारी सरकार ये सुनिश्चित कर रही है कि किसी को अपना सपना पूरा करना हो तो कोई भी भाषा उसके सामने दीवार ना बने। उन्होंने कहा, केंद्र सरकार आज जिस तरह मातृभाषा में भर्ती परीक्षा पर जोर दे रही है, प्रवेश परीक्षाएं पर जोर दे रही है, उसका भी सर्वाधिक लाभ मेरे देश के बेटे-बेटियों को मिल रहा है, हमारे नौजवानों को हो रहा है। क्षेत्रीय भाषाओं में परीक्षा होने से युवाओं को आसानी से अपनी योग्यता साबित करने का अवसर मिला है। श्री मोदी ने कहा कि आज तेजी से आगे बढ़ते हुए भारत में, सरकारी व्यवस्थाओं और सरकारी कर्मचारियों के काम करने का तरीका भी तेजी से बदल रहा है। एक समय था, जब देश के सामान्य नागरिक सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाते रहते थे। आज सरकार अपनी सेवाएं लेकर, देश के नागरिकों के घर तक पहुंच रही है। अब जनता की अपेक्षाओं को समझते हुए, क्षेत्र की आवश्यकताओं को समझते हुए हमारी सरकार लगातार काम कर रही है। विभिन्न सरकारी दफ्तर और विभाग, जनता के प्रति संवेदनशील रहते हुए काम करने पर जोर, ये हमारी प्राथमिकता है।

संक्षिप्त खबरें

अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद की गई

दानापुर। खगोल रेल पुलिस ने लावारिस अवस्था में लगभग 62 वर्षों व्यक्ति का शव को प्लेटफार्म नंबर 1 ए के फुट ओवर ब्रिज के नीचे से मृत पाया शव को अपने कब्जे में लेते हुए जीआरपी रणधीर कुमार ने बताया की प्रथम दृश्य से व्यक्ति को ज्यादा लू लगने के कारण मृत्यु हो गई यह मालूम पड़ता है शव को पोस्टमार्टम कराने के बाद सुरक्षित रख दिया गया है।

'द फतुहा क्लब' बिहार में नं. वन होगा -टुनटुन यादव

फतुहा। शहर के फोरलेन पर रायपुरा महाल के पास प्रस्तावित 'द फतुहा क्लब' रिसोर्ट का बुकलेट जारी किया गया। इस संबंध में मुख्य पार्षद प्रतिनिधि सह समाजसेवी टुनटुन यादव ने बताया कि 'द फतुहा क्लब' रिसोर्ट बिहार का पहला सेवेन स्टार रिसोर्ट होगा। इस रिसोर्ट के बनने से कई लोगों को रोजगार मिलेगा। वहीं इंजीनियर प्रदीप कुमार यादव ने बताया कि 'द फतुहा क्लब' रिसोर्ट में ग्रीन पार्टी लॉन, दो बैडमिंटन कोर्ट, जिम, होटल, किड्स जोन, स्पा, रेस्टोरेंट, यूएस बॉल पूल, बैंक्वेट हॉल, स्विमिंग पुल, टेबल टेनिस, जूस/स्मोकिंग कॉर्नर, व्हीकल पार्किंग के साथ हाई सिक्योरिटी की व्यवस्था रहेगी। मौके पर महताब आलम, राजीव रंजन यादव, पूर्व उपाध्यक्ष संजय गोप, समाजसेवी सुधीर यादव, छोटू यादव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

दो चोर, दो बाइक के साथ गिरफ्तार

फतुहा। नदी थाना पुलिस ने चोरी के दो बाइक के साथ दो चोर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार चोरों में रुस्तमपुर के सुधीर कुमार तथा कविचंद कुमार है। पुलिस ने दोनों के पास से एक-एक बाइक बरामद किया है। नदी थाना एसएचओ अखिलेश सिंह ने बताया कि बीते अप्रैल माह में कच्चीदरगाह के ही सिंकदर कुमार का बाइक दिदारगंज चेक पोस्ट के पास से चोरी चली गयी थी। इसी बाइक को लेकर गिरफ्तार कविचंद वाइक पर दूसरी नम्बर प्लेट लगा कच्चीदरगाह पहुंच गया। संयोग से पीड़ित सिंकदर कुमार की नजर उस बाइक पर पड़ी तथा पुलिस को सूचना दी। बाइक की नम्बर प्लेट तो बदला हुआ था लेकिन पीड़ित के बताए गये इंजन व चेसिस नम्बर का मिलान सही हो गया। इसके बाद पुलिस ने बाइक जब्त करते हुए कविचंद को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के बाद उसके निशानदेही पर उसी के गांव के सुधीर कुमार को एक दूसरी चोरी के बाइक के साथ गिरफ्तार कर लिया। एसएचओ अखिलेश सिंह ने बताया कि दोनों चोर को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

शाहपुर में नये थानाध्यक्ष ने किया पदभार ग्रहण

दानापुर। दानापुर थाना में नव पदस्थापित थानाध्यक्ष सम्राट दीपक ने पदभार ग्रहण किया। प्रभारी थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने उन्हे प्रभार सौंपा। बता दे कि एसएसपी ने थाना के निवर्तमान थानाध्यक्ष कामेश्वर प्रसाद सिंह को बिहटा अंचल की कमान सौंपी है। जबकि शाहपुर थानाध्यक्ष सम्राट दीपक को दानापुर की कमान मिली है। जबकि शाहपुर थाना के नये थानाध्यक्ष के रूप में उत्तम कुमार ने पदभार ग्रहण किया है। श्री दीपक ने कहा कि पब्लिक फ्रेंडली पुलिस के साथ क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना उनकी प्राथमिकता होगी। साथ ही बस पडाव से जाम से निजात दिलाया जायेगा और नगर में स्मैक व गेसिंग संचालकों पर अंकुश लगाया जायेगा। नये थानाध्यक्ष ने थाना क्षेत्र की जानकारी हासिल कर महत्वपूर्ण समस्याओं पर चर्चा करते हुए थाने में पदस्थापित पदाधिकारी व पुलिस बल के साथ बैठक कर विचार विमर्श कर कई दिशा-निर्देश दिया।

बधार में मवेशियों को खोजने गए व्यक्ति पर जंगली सुअरों ने हमला किया

दानापुर। नगर के अंतर्गत मंगलवार को अहले सुबह अपने पिता को खोजते हुए बधार में पहुंच तो देखा कि पिता का कपडा और मोबाइल पडा हुआ था और बगल में कलंक पडा हुआ था। सुअरों ने नोंचकर मांस तक नही छोडा था। पशुपालक की मौत की सूचना पर पत्नी लीलावती देवी समेत परिजनों चित्कार कर उठे। मृतक के पुत्र मिथुन कुमार ने बताया कि पांच मवेशी बधार पर भूला गया था और खोजने के लिए पिता राज किशोर मवेशी को खोजने के लिए चार दिन से दियारा के पश्चिम बधार में गये थे। मोबाइल पर बात होता था। सोमवार की रात में पिता से मोबाइल पर संपर्क किया तो नही बात हुआ और मोबाइल बंद था। परिजनों का अशांका हुआ तो पिता के खोजने के लिए मंगलवार को अहले सुबह दियारा के बधार में गया तो देखा कि पिता का कपडा और मोबाइल पडा हुआ है। बगल में कलंक पडा हुआ था. उन्होंने बताया कि जंगली सुअरों ने पिता पर हमला कर नोंचकर मांस तक नही छोडा है।

पीएम मोदी के शासनकाल में देश का हुआ सर्वांगीण विकास : भानू प्रताप

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपलब्धियों भरे नौ साल पूरा होने पर 30 जून तक चल रहे महा जनसंपर्क अभियान के तहत मंगलवार को हाजीगंज स्थित अरोड़ा हाउस में संयुक्त मोर्चा सम्मेलन का आयोजन किया गया। केंद्रीय लघु और उद्यम मंत्री भानू प्रताप सिंह वर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री सह सांसद रविशंकर प्रसाद और पूर्व मंत्री सह विधायक नंदकिशोर यादव ने संबोधित किया। सम्मेलन को संबोधित करते केंद्रीय मंत्री भानू प्रताप वर्मा ने कहा कि पीएम मोदी के नौ वर्षों के शासनकाल में देश का सर्वांगीण विकास हुआ है।

केंद्र सरकार ने हर तबके के लिए काम किया है। बिहार का विकास केंद्र सरकार की प्राथमिकता में है। इसलिए पीएम मोदी ने अपने नौ वर्षों के शासनकाल में बिहार के विकास के लिए धन की कमी नहीं होने दी। एनडीए के शासनकाल में बिहार का तेजी से विकास हुआ। लेकिन, महागठबंधन की सरकार बनते ही बिहार का विकास बाधित हो रहा है। पूर्व मंत्री नंद किशोर यादव ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार बिहार का विकास कभी ठप होने नहीं देगी। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के नौ वर्षों के शासनकाल की इतनी उपलब्धियां हैं, जिसे गिनते-गिनते अंगुलियां थक जाएंगी, फिर भी पूरी नहीं होंगी। उन्होंने कहा कि उज्ज्वला योजना, जनधन योजना, किसान सम्मान योजना, आयुष्मान भारत योजना जैसी अनेक योजनाएं आम लोगों के हित में चलायी जा रही हैं, जिससे करोड़ों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। पूर्व केन्द्रीय मंत्री और सांसद रविशंकर प्रसाद ने कहा कि जीएसटी और नोटबंदी जैसे फैसले से सरकार ने देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती दी है। आज भारत देश की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और शीघ्र ही तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उन्होंने कहा कि ह्यतीन तलाकह्ल को खत्म किए जाने से अनेक मुस्लिम महिलाओं का घर उजड़ने से बचा है। पीएम मोदी ने वैश्विक मंच पर भारत की साख बढ़ायी है। आज भारत जी-20 की अध्यक्षता करते हुए नायाब अवधारणा वसुधैव कुटुम्बकम को चरितार्थ कर रहा है, जिसकी हर तरफ प्रशंसा हो रही है। सही मायने में पीएम मोदी का नौ साल उपलब्धियों का साल रहा है। संचालन महानगर के महामंत्री विनय केसरी ने किया। इस मौके पर प्रदेश भाजपा के मंत्री रूप नारायण मेहता, महानगर अध्यक्ष अभिषेक चंद्रवंशी, रामजी सिंह, जगन्नाथ ठाकुर, किरण शंकर, राजू जायसवाल, नवल किशोर सिन्हा, हरेंद्र चंद्रवंशी, अशोक भारती, प्रभाकर मिश्र, राजू मेहता, संजीव यादव, कांति केसरी, निशा मेहता, विनय कुमार बिट्टू, भगवती मोदी, सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

पारा मेडिकल छात्रों का परीक्षा परिणाम घोषित

आंदोलनकारी छात्रों का सस्पेंशन समाप्त नहीं होने से संकट

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी। बिहार के पारा मेडिकल छात्र लंबे समय से आंदोलन कर रहे थे। इस दौरान ही स्वास्थ्य विभाग पारा मेडिकल पारा डेंटल परीक्षा समिति के नए परीक्षा नियंत्रक की नियुक्ति की गई। अब पारा मेडिकल छात्रों के लंबित परीक्षा का परिणाम भी जारी कर दिया गया।

पारा मेडिकल छात्र संघ बिहार के अध्यक्ष भारत भूषण ने कहा कि राज्य के अनेक मेडिकल कॉलेज में पारा मेडिकल छात्रों को शिक्षण कार्य से अनेक माह के लिए सस्पेंड कर दिया गया है। इससे मरीजों को इलाज के दौरान अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। छात्रों का भविष्य भी अंधकारमय दिख रहा है। छात्र प्रथम वर्ष की परीक्षा पास कर गए। अब उन्हें द्वितीय वर्ष में पठन-पाठन प्रशिक्षण करना है। सत्र पहले से ही करीब तीन वर्ष की देरी से चल रहा है। 2017 बैच के द्वितीय वर्ष और 2021 बैच के प्रथम वर्ष का परीक्षा फॉर्म भी भरने की सूचना जारी कर दिया गया है। सस्पेंशन की वजह से और एक वर्ष की देरी हो जाएगी। सभी मेडिकल कॉलेज प्रशासन से आग्रह है कि राज्य के मरीजों के बेहतर स्वास्थ्य एवं पारा मेडिकल छात्रों के बेहतर भविष्य को ध्यान में रखते हुए सस्पेंशन वापस लिया जाए।

कामकाज ठप किए सफाई मित्रों ने पार्षद को घेरा

पटना सिटी (प्राकि)। पटना नगर निगम बांकीपुर अंचल के वार्ड संख्या 47 में एजेंसी के सफाई मित्रों ने बीते शनिवार से चार दिनों से कामकाज ठप कर बकाया पारिश्रमिक राशि के भुगतान की मांग कर रहे हैं। मंगलवार को पार्षद के कार्यालय पर पहुंचे हड़ताली कर्मियों ने पार्षद को घेर कर पीड़ा सुनायी। स्थिति यह है कि कामकाज ठप होने से वार्ड में कचरा जमा होने लगा है। पार्षद सतीश कुमार का कहना है कि एजेंसी बदलने की स्थिति में बीते दिसंबर माह, अप्रैल और मई माह की पारिश्रमिक राशि का भुगतान नहीं हो पाया है। इस कारण से सफाई का कामकाज बाधित कर दिया गया है। पार्षद ने बताया कि इसकी जानकारी अधिकारियों को दे दी गई है। कायार्पालक पदाधिकारी राकेश कुमार सिंह का कहना है कि समस्या का समाधान होगा। सफाई मित्रों को कार्य करने के लिए समझाया गया है।

जांच रिपोर्ट जल्द भेजने व ज्ञानी रणजीत की सेवा समाप्त भी किया

श्री अकाल तख्त के पंज प्यारों के हुक्मनामे में नहीं बताया गया दोष

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह गौहर-ए-मस्कीन को चौतरफा घेरने की कोशिश की गई। पहले श्री अकाल तख्त साहिब ने पत्र जारी कर ज्ञानी इकबाल सिंह और ज्ञानी रणजीत सिंह को तत्काल प्रभाव से तख्तश्री पटना साहिब परिसर को छोड़ देने और दरबार साहिब में सेवा नहीं करने का आदेश जारी किया।

ज्ञानी रणजीत सिंह ने उस आदेश को सिर माथे लगा उसे माना, मगर ज्ञानी इकबाल सिंह ने नहीं मान सेवा करते रहे। इस कारण से उन्हें तनखैया घोषित किया गया। इसके बाद श्री अकाल तख्त साहिब के पंज प्यारों की 6 दिसंबर, 22 को हुई बैठक के बाद हुक्मनामा जारी किया गया। इसमें ज्ञानी रणजीत सिंह की सेवाएं समाप्त करने और उनके खिलाफ शिकायत की जांच हाई पावर कमेटी को चालू रखने के साथ ही जांच रिपोर्ट पूरी कर जल्द भिजवाने को कहा गया। दरअसल ज्ञानी रणजीत सिंह की सेवाएं समाप्त करने का कोई कारण नहीं बताया गया। जारी हुक्मनामा में एक तरफ हाई पावर जांच कमेटी के द्वारा रिपोर्ट जल्दी तैयार कर भेजने की बात कही गई, तो दूसरी ओर उनकी सेवा भी समाप्त कर दी गई। यदि ज्ञानी रणजीत सिंह के खिलाफ कोई ठोस आरोप यदि श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार और पंज प्यारों सिंह साहिबानों के पास थे, तो निश्चित तौर पर उसे सार्वजनिक किया जाना चाहिए था, ताकि संगतों को भी यह जानकारी हो सके कि किस आधार पर एक प्रमुख तख्त के जत्थेदार की सेवाएं समाप्त की जा रही हैं। अब जबकि तत्कालीन अध्यक्ष अवतार सिंह हित के द्वारा दिल्ली हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश आरएस सोढ़ी के नेतृत्व में गठित जांच कमेटी ने अपनी रिपोर्ट जारी कर दी। इसके बाद न तो प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब, न ही श्री अकाल तख्त के पंज प्यारे सिंह साहिबान या कार्यकारी जत्थेदार या तख्तश्री पटना साहिब के पंज प्यारों ने मुंह खोलना मुनासिब नहीं समझा। जिस संगत ने तख्तश्री पटना साहिब के दरबार साहिब में गुरु महाराज के चरणों में जो भेंटा पेश किया और उसकी जांच के बाद कहे अनुसार सोना नहीं पाया गया, तब इसकी जांच कराई गई। जांच में बताए अनुसार सोना न के बराबर पाया गया। जब मामला उजागर हुआ और बात मीडिया में आई, तब गुरविंदर सिंह सामरा ने जत्थेदार ज्ञानी रणजीत सिंह पर आरोप लगाना शुरू किया। इसके बाद ज्ञानी रणजीत सिंह का विरोध करने वाले भी मुखर हो उठे। इसके बाद हाई पावर जांच कमेटी का गठन हुआ, जिसमें दिल्ली हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश आरएस सोढ़ी, समाजसेवा से दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य अमृतपाल सिंह बिंद्रा, तख्तश्री कमेटी के सदस्य सह सलाहकार चरणजीत सिंह और धार्मिक मामले से जुड़े दो लोगों को शामिल किया गया। जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट जारी भी कर दी है। मगर बड़ा सवाल यह है कि ज्ञानी रणजीत सिंह पर जो आरोप लगाए गए, वह तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष के द्वारा गठित जांच रिपोर्ट में निर्दोष पाए गए। यही नहीं, इसके पूर्व तख्तश्री पटना साहिब के पंज प्यारे के द्वारा भी इन्हें तनखैया घोषित किया। फिर निर्दोष होने पर अब उन पर इस्तीफा देने का दबाव बनाया जा रहा है। श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार का आदेश नहीं मानने के कारण ज्ञानी इकबाल सिंह को तनखैया घोषित किया गया, मगर बिना कोई कारण और दोष बताएं यानी रंजीत सिंह की सेवा समाप्त करने का आदेश दिया गया।

दुआ के साथ उर्स का हुआ समापन

पटना सिटी (प्राकि)। सूफी हजरत सैयद शाह ख्वाजा अमजद हुसैन कुद्देसा सिर्रहू का 105वां उर्स सोमवार से मितन घाट स्थित खानकाह बारगाहे इश्क तकियाशरीफ में चल रहा है। दो दिनों के उर्स का समापन मंगलवार को कुल, फातिया और दुआ के साथ संपन्न हो गया। इससे पहले खानकाह के सज्जादानर्शी सैयद शाह ख्वाजा आमिर शाहिद की अध्यक्षता में उर्स में महफिल-ए-समा का आयोजित किया गया। इसमें सूफी कव्वाली की प्रस्तुति दी गई। उर्स में शामिल जायरीनों ने दुआ मांगी। इसमें शामिल जायरीनों ने अमन-चैन के साथ अपने व परिवार के लिए दुआएं मांगीं।

03 जोड़ी समर स्पेशल ट्रेनों के परिचालन अवधि में विस्तार

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान चलायी जा रही समर स्पेशल ट्रेनों के परिचालन अवधि में विस्तार किया जा रहा है जिनका विवरण निम्नानुसार है। गाड़ी सं. 03255 पटना-आनंद विहार स्पेशल-यह स्पेशल पूर्व में 15 जून तक चलायी जानी थी। इसके परिचालन अवधि में और 04 फेरे की वृद्धि करते हुए अब यह स्पेशल ट्रेन 18 से 29 जून तक सप्ताह के प्रत्येक रविवार एवं गुरूवार को चलायी जायेगी। गाड़ी सं. 03256 आनंद विहार-पटना स्पेशल-यह स्पेशल पूर्व में 16 जून तक चलायी जानी थी। इसके परिचालन अवधि में और 04 फेरे की वृद्धि करते हुए अब यह स्पेशल 19 से 30 जून तक सप्ताह के प्रत्येक सोमवार एवं शुक्रवार को चलायी जायेगी। गाड़ी सं. 02391 पटना-आनंद विहार स्पेशल-यह स्पेशल पूर्व में 10 जून तक चलायी जानी थी। इसके परिचालन अवधि में और 02 फेरे की वृद्धि करते हुए अब यह स्पेशल ट्रेन 17 एवं 24 जून शनिवार को भी चलायी जायेगी। गाड़ी सं. 02392 आनंद विहार-पटना स्पेशल-यह स्पेशल पूर्व में 11 जून तक चलायी जानी थी।

इसके परिचालन अवधि में और 02 फेरे की वृद्धि करते हुए अब यह स्पेशल 18 एवं 25 जून रविवार को भी चलायी जायेगी। गाड़ी सं. 03635 गया-आनंद विहार स्पेशल - यह स्पेशल पूर्व में 14 जून तक चलायी जानी थी। इसके परिचालन अवधि में और 07 फेरे की वृद्धि करते हुए अब यह स्पेशल ट्रेन 16 से 30 जून तक सप्ताह के प्रत्येक शुक्रवार, सोमवार एवं बुधवार को चलायी जायेगी। गाड़ी सं. 03636 आनंद विहार-गया स्पेशल-यह स्पेशल पूर्व में 15 जून तक चलायी जानी थी। इसके परिचालन अवधि में और 07 फेरे की वृद्धि करते हुए अब यह स्पेशल 17 से 01 जुलाई तक सप्ताह के प्रत्येक शनिवार, मंगलवार एवं गुरूवार को चलायी जायेगी। उपरोक्त सभी स्पेशल ट्रेनों के समय सारणी एवं कोच संयोजन पूर्ववत रहेंगे। उक्त जानकारी पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेन्द्र कुमार द्वारा दी गई है।

गाड़ी सं. 03230 पटना-पुरी स्पेशल का परिचालन रद्द

पटना। अपरिहार्य कारणवश 15 जून को पटना जं. से खुलने वाली गाड़ी सं. 03230 पटना-पुरी स्पेशल का परिचालन रद्द रहेगा।

सिटी सिविल कोर्ट से दो नकली जमानतदार गिरफ्तार

फर्जी जमानतदार के जेब से आधार कार्ड व जमीन का कागजात मिला

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

गायघाट स्थित पटना सिटी व्यवहार न्यायालय के उत्पाद के विशेष न्यायालय की अदालत के न्यायाधीश बृजेंद्र कुमार राय की अदालत में दो नकली जमानतदार को पकड़ा गया है। पकड़े गए दोनों नकली जमानतदारों को आलमगंज थाना की पुलिस को सौंप दिया गया है। विशेष लोक लोक अभियोजक सैयद फैजुल होदा ने बताया कि दो अलग-अलग मामले में जमानतदार के रूप में एक ही नाम और पता का आधार कार्ड दिया था। दोनों आधार कार्ड में नाम उमेश पासवान और पता फतुहा का था।

अदालत को शक होने पर आलमगंज थाना की पुलिस को बुलाया गया और जांच कराने पर मामले का खुलासा हुआ। इस संबंध में एसआई राजेंद्र कुमार-2 के बयान पर आलमगंज थाना में कांड संख्या 524/23 दर्ज किया गया है। दरअसल उत्पाद के विशेष न्यायाधीश के न्यायालय के सामने गलियारा में दो व्यक्ति एक ही नाम और पता के आधार पर कार्ड और जमीन के कागजात के साथ जमानतदार बनने के लिए आए हुए थे। यह बराबर गलत नाम व पता का कागजात देकर जमानत लेते हैं। यह दोनों व्यक्ति दिखने में सामान्य कद-काठी के तथा एक व्यक्ति का बाल-दाढ़ी बढ़ा हुआ है। पुलिस के द्वारा कड़ाई से पूछे जाने पर दोनों जमानतदारों ने बताया कि यह आधार कार्ड नकली है। इसी के आधार पर दोनों पर कार्रवाई की गई है। पुलिस ने पकड़े गए उन दोनों ने ही अपना नाम उमेश पासवान पिता रामाधीन पासवान ग्राम कोल्हार थाना फतवा बताया। कड़ाई से पूछताछ करने पर उन दोनों ने अपना नाम अशोक पासवान पिता बोधी पासवान साकिन घोसी थाना हिलसा जिला नालंदा और चंद्रशेखर सक्सेना पिता मिश्रीलाल साकिन केवलातल मसूदपुर, थाना फतुहा, जिला पटना बताया। अशोक पासवान के फुलपैंट के जेब से आधार कार्ड, जिस पर उमेश पासवान का जन्म तिथि एक जनवरी, 1983 पिता रामाधीन पासवान, ग्राम कोल्हार, थाना फतुहा आधार पर अंकित किया बरामद हुआ। साथ ही उमेश पासवान पिता रामाधीन पासवान, मौजा कोल्हार अंचल फतुहा नाम का एक लगान रसीद बरामद हुआ। चंद्रशेखर सक्सेना के के जेब से एक आधार कार्ड, जिस पर उमेश पासवान, जन्म तिथि एक जनवरी, 1976 पिता रामाधीन पासवान, ग्राम कोल्हार, थाना फतुहा अंकित किया हुआ बरामद हुआ। साथ ही उमेश पासवान पिता रामाधीन पासवान मौजा कोल्हार अंचल फतुहा नाम का एक लगान रसीद भी बरामद हुआ। आधार कार्ड और लगान रसीद के संबंध में पकड़ाए दोनों व्यक्तियों से पूछने पर बताया गया कि पैसों के लालच में यह दोनों फर्जी जमानतदार बनते हैं। इसके लिए दोनों ने उमेश पासवान पिता रामाधीन पासवान के नाम से फर्जी आधार कार्ड और जमीन का कागजात बनाए हैं तथा इसे असली के रूप में उपयोग करते हुए फर्जी जमानतदार बनते हैं। बरामद आधार कार्ड और लगान रसीद को विधिवत जब्ती सूची बनाते हुए जब्त कर लिया गया।

लोगों के बीच पर्यावरण चेतना और जिम्मेदारी की भावना पैदा करने को चलाया गया स्वच्छता अभियान

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पटना के मरीन ड्राइव पर स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में एक्सिस बैंक की ओर से आयोजित उक्त कार्यक्रम में बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सदस्य सचिव एस चंद्रशेखर भी शिरकत किए, साथ ही आयोजन में बैंक शाखा कर्मचारियों, स्थानीय समुदायों, पर्यावरण कार्यकताओं व समाजसेवी, स्थानीय अधिकारियों और स्वयंसेवकों की भागीदारी देखी गई।

जिन्होंने गंगा तटों और जल निकायों से 289 किलोग्राम प्लास्टिक कचरा एकत्रित किया। प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने और जिम्मेदार अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने पर जोर देने के लिए लगभग 320 से अधिक स्वयंसेवक इस अभियान में शामिल हुए। स्वयंसेवकों ने स्थानीय लोगों को प्लास्टिक प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों के बारे में भी जानकारी देकर जागरूक किया। स्वंसेवकों ने बताया कि वे एक बार उपयोग होने वाले प्लास्टिक के उपयोग को कैसे कम कर सकते हैं। बता दें यह पहल 25 से ज्यादा गंगा तटों और जल निकायों को साफ करने के लिए बैंक के राष्ट्रव्यापी अभियान का एक हिस्सा है। इससे हरित क्रांति और भविष्य के लिए चल रहे कई वैश्विक प्रयासों और आयोजन को जोड़ेगी। हमारा लक्ष्य है आमजन के बीच पर्यावरण चेतना और जिम्मेदारी की भावना पैदा करना।

स्वच्छता अभियान के तहत रवि नारायणन, एक्सिस बैंक समूह कार्यकारी- शाखा बैंकिंग, खुदरा देनदारियां और उत्पाद ने कहा कि बैंक इस अभियान को 4 से 11 जून तक 20 शहरों जैसे मुंबई, बैंगलोर, कोच्चि, चेन्नई, हैदराबाद, वाराणसी, लखनऊ, गोवा आदि में चलाया।

अधिक रक्तदान करने वाले दानदाताओं को पुरस्कार दिया जाएगा: प्रो. (डॉ.) गोपाल कृष्ण पाल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर, ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन एंड ब्लड बैंक विभाग, एम्स पटना ने कार्यकारी निदेशक, एम्स पटना प्रो. (डॉ.) गोपाल कृष्ण पाल की देखरेख में एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित करने की योजना बनाई है। रक्तदान शिविर में अधीक्षक प्रो. (डॉ.) सी एम सिंह और एचओडी (प्रभारी) ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन एंड ब्लड बैंक, प्रो. (डॉ.) रुचि सिन्हा फैकल्टी, स्टाफ और छात्रों के साथ सक्रिय रूप से भाग लेंगे। शिविर में लगभग 150-200 स्वैच्छिक रक्तदान करने की योजना बनाई गई है। यह एम्स पटना में भव्य रक्तदान शिविर में से एक होगा जिसमें न केवल रक्त संग्रह शामिल होगा, बल्कि रक्तदान के महत्व और रक्तदान के स्वास्थ्य लाभों के बारे में जागरूकता भी शामिल होगी। एम्स पटना के कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर प्रो. (डॉ.) गोपाल कृष्ण पाल ने कहा कि स्वैच्छिक रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र वितरित किए जाएंगे और वर्ष में अधिकत रक्तदान करने वाले दानदाताओं को पुरस्कार भी दिया जाएगा।

96 बोतल विदेशी शराब के साथ एक गिरफ़्तार

बोचहा। थाना क्षेत्र के लालबंदा तुर्की में गुप्त सूचना के आधार पर दारोगा रंजीत कुमार गुप्ता के नेतृत्व में छापेमारी की गई। इस दौरान 18 लीटर विदेशी शराब के साथ एक व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, जबकि उसका एक साथी पुलिस को चकमा देकर भागने में सफल रहा,। गिरफ्तार कारोबारी की पहचान उक्त गांव निवासी शत्रुघ्न ठाकुर के रूप में की गई है। थाना अध्यक्ष अरविंद प्रसाद ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि लालबंदा तुर्की गांव में एक व्यक्ति अपने घर में भारी मात्रा में शराब छिपाकर रखे हुआ है।

वी का अनलिमिटेड आईआर पैक्स

पटना। गर्मी की छुट्टियों का सीजन आ गया है और लोग दुनिया भर में अपने पसंदीदा गंतव्यों की यात्रा की तैयारियों में जुटे हैं। वी के रूझान बताते हैं कि भारत के 90 फीसदी पर्यटक छुट्टियां मनाने के लिए यूएस, यूरोपीय देषों (जैसे यूके, फ्रांस, इटली, जर्मनी, ग्रीन आदि), तुर्की, यूएई, सिंगापुर, थाईलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि लोकप्रिय गंतव्यों को चुनते हैं। इन स्थानों की यात्रा के दौरान भारतीय लोग स्ट्रीमिंग का बेजोड़ अनुभव पाना चाहते हैं, वे अपने प्रियजनों को अपनी तस्वीरें और वीडियो भेजना चाहते हैं, उनके साथ वीडियो कॉल पर बात करना चाहते हैं। ऐसे सभी यात्रियों के लिए वी अपने इंटरनेषनल रोमिंग (आईआर) पैक्स पर लेकर आया है ह्यसही मायनों में अनलिमिटेड डेटा और कॉल्सह्ल का बेहतरीन अनुभव। ये पैक सर्वश्रेष्ठ कनेक्टिविटी देते हैं, फिर चाहे आप कहीं पर भी हों। वी इंटरनेषनल रोमिंग पर यूएल के फायदे देने वाला एकमात्र ऑपरेटर है, जो इंटरनेषनल रोमिंग के दौरान सही मायनों में अनलिमिटेड डेटा एवं कॉल्स, फ्री इनकमिंग कॉल्स और एक्सक्लुजिव कस्टमर सर्विस का अनुभव प्रदान करता है। इसके अलावा, यह सुनिष्चित करता है कि डेटा की स्पीड में किसी तरह की रूकावट न आए और आप स्ट्रीमिंग का शानदार अनुभव पा सकें। वी ने दुनिया भर के विभन्न गंतव्यों के सर्वश्रेष्ठ सर्विस प्रोवाइडर्स के साथ साझेदारी की है ताकि वी के यूजर इंटरनेषनल यात्रा के दौरान कनेक्टिविटी का बेजोड़ अनुभव पा सकें। वी के सभी पोस्टपेड रोमिंग पैक्स का ऑलवेज ऑन फीचर सुनिष्चित करता है कि इंटरनेषनल रोमिंग के दौरान उपभोक्ताओं से बहुत ज्यादा शुल्क न वसूला जाए, फिर चाहे उनके द्वारा सब्सक्राइब किया गया।

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर इंडिया ने लॉन्च किया ओबीडी2 कम्प्लायन्ट नया 2023 डियो

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। उपभोक्ताओं को अपनी नई पेशकश के साथ लुभाते हुए होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर इंडिया ने ओबीडी2 कम्प्लायन्ट नए 2023 डियो के लॉन्च की घोषणा की, जो रु 70,211 (एक्स-शोरूम दिल्ली) की शुरूआती कीमत पर उपलब्ध होगा।

श्री सुत्सुमु ओतानी, मैनेजिंग डायरेक्टर, प्रेजीडेन्ट एवं सीईओ, होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर इंडिया ने कहा, हमें गर्व है कि ओबीडी2 कम्प्लायन्ट नए 2023 डियो के लॉन्च के साथ हम ऐसा स्कूटर लेकर आए हैं जो न सिर्फ स्पोर्टी और एग्रेसिव डिजाइन बल्कि आधुनिक टेक्नोलॉजी के साथ भी आता है। नया डियो हमारे उपभोक्ताओं की उम्मीदों पर खरा उतरने के हमारे प्रयासों की पुष्टि करता है और हमें विश्वास है कि यह उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करेगा। श्री योगेश माथुर, डायरेक्टर, सेल्स एण्ड मार्केटिंग, होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर इंडिया ने कहा, पहले 2002 में लॉन्च किया गया होण्डा डियो मोटरसाइकिल के स्पोर्टी लुक और स्कूटर के आराम का बेहतरीन संयोजन है। नया 2023 डियो नए स्पोर्टी एग्रेसिव डिजाइन, आधुनिक टेक्नोलॉजी और होण्डा स्मार्ट की सिस्टम के साथ उपभोक्ताओं के लिए नया रोमांच उत्पन्न करेगा। साईड स्टैण्ड इंडीकेटर विद इंजन इन्हीबिटर यह इंजन को तब तक स्टार्ट नहीं होने देता जब तक स्कूटर साईड स्टैण्ड पर हो, इस तरह राईड को आरामदायक और चिंतामुक्त बनाता है। डियो का नया डिजाइन फ्रन्ट रिब्स और सिग्नेचर एलईडी पॉजिशन लैम्प के साथ मोटो-स्कूटर का अनुभव प्रदान करता है। टेलीस्कोपिक सस्पेंशन क्लीन और स्टाइलिश अपीयरेन्स देता है, साथ ही उबड़-खाबड़ सड़कों पर भी राईड को आसान बनाता है। डियो का ऊँचा ग्राउण्ड क्लीयरेन्स (160 एमएम) मुश्किल सड़कों पर भी राईड को आसान बनाता है और रइडर को आत्मविश्वास प्रदान करता है।

नक्शा के अनुरूप निर्माण नहीं करने पर कार्रवाई

पटना। तक्षशीला एजुकेशन सोसाइटी के भू-स्वामी एवं निमार्ता पर पटना नगर निगम द्वारा पास नक्शा के अनुरूप निर्माण नहीं करने के लिए विजिलेंस केस किया जा रहा है। इस घटना से बगल के आवासित अपार्टमेंट में एवं सड़क पर भी नुकसान हुआ है एवं सुरक्षा की दृष्टि से भी यह खतरनाक है, इसके लिए पटना नगर निगम द्वारा प्राथमिकी भी दर्ज करवाई जा रही रही है। पटना नगर निगम द्वारा जारी विज्ञप्ति के मुताबिक स्वीकृत नक्शा से अलग निर्माण करवाया गया है। एक बेसमेट की स्वीकृति लेकर दो बेसमेट का भी निर्माण किया जा रहा है। स्वीकृत नक्शा में एक बेसमेंट जिसकी गहराई रोड लेवल से मात्र 1.80मी (लगभग 6 फीट) जमीन तल के नीचे की स्वीकृति पर प्राप्त की गई है। पटना नगर निगम की जांच में पाया गया है कि 20 से 25 फीट मिट्टी की खुदाई कर ली गई है। इसके साथ ही इसके साथ ही मिट्टी के धसाव से बचाव के लिए समुचित सुरक्षात्मक व्यवस्था भी नहीं की गई। इससे सुरक्षात्मक दृष्टि से भारी नुकसान हो सकता है। पटना नगर निगम द्वारा बिहार नगर पालिका अधिनियम 2007 की धारा 319 (1), 323 (1), एवं 324 (1) के तहत निर्माण को अगले आदेश तक बंद रखने का भी निर्देश दिया गया है। इसके साथ ही स्पष्टिकरण का जवाब भी 5 दिनों के अंदर देने का निर्देश दिया गया है।

गांधी दूत की तरह जनसेवा कर रहे नीतीश कुमार : लेशी

भाजपा से देशवासियों को सतर्क रहने की आवश्यकता : जमा खां

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

खाद्य व उपभोक्ता संरक्षण विभाग की मंत्री लेशी सिंह ने कहा कि जिस तरह महात्मा गांधी ने स्वतंत्रा संग्राम का नेतृत्व कर देश में लोकतंत्र स्थापित किया परन्तु कोई पद स्वीकार नहीं किया। फिर लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति का बिगुल फुक कर लोकतंत्र की रक्षा की अगुआई की परन्तु सरकार बनने के बाद भी कोई पद स्वीकार नहीं किया ठीक उसी तरह देश में अघोषित आपातकाल से मुक्ति दिलाकर लोकतंत्र की रक्षा करने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विपक्षी एकता का नेतृत्व कर रहे हैं परन्तु उन्हें किसी पद की लालसा नहीं है। मंत्री उक्त बातें मंगलवार को जदयू कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान कही। श्रीमती सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार महात्मा गांधी जयप्रकाश नारायण के पद चिन्हों पर चलकर सेवाभाव की प्रतिमूर्ति बनकर उभरे हैं। देश में लोकतंत्र की रक्षा के लिए नीतीश कुमार के प्रयास का आज देशभर में प्रशंसा हो रही है। मुझे विश्वास है कि गांधी-जयप्रकाश की तरह त्यागी नेतृत्व के बल पर विपक्ष को एकजुट कर केन्द्र की भाजपा सरकार को हटाने में सफल हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि गांधी को आदर्श मानकर समाजिक कुरीतियां को दूर करने तथा शराबबंदी द लागू करने के ऐतिहसिक निर्णय बिहार में गांधीदूत के रूप में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को आमजन स्वीकार करते हैं। अब देश इस गांधी दूत का बेसब्री से इंतजार कर रहा है कि ताकि उनके नेतृत्व व सफल प्रयास से केन्द्र में लोकतंत्र को मजबूती देने वाली सरकार का गठन हो सकें। इस बीच पत्रकारों द्वारा पूछे गये एक अन्य सवाल का जबाव देते हुए मंत्री श्रीमती सिंह ने कहा कि केन्द्र की युवा विरोधी सरकार ने प्रति वर्ष दो करोड़ युवाओं को नौकरी देने का वादा किया था परन्तु आज इनके द्वारा हजार की संख्या में युवाओं को नियुक्त पत्र देकर भरपूर प्रचार किया जा रहा है । देश के युवाओं के साथ यह घोर अन्याय है। भाजपा के वादों के अनुसार 9 वर्षों के कार्यकाल में 18 करोड़ युवाओं को नौकरी मिलनी चाहिये थी लेकिन सभी वादा भी जुमला साबित हुआ। वहीं, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली राज्य सरकार केन्द्र सरकार से कहीं ज्यादा निरंतर युवाओं को सरकारी नौकरी दे रही है। जो बिहार की जनता से वायदा किया गया था उसे निभा रही है और आगे भी निरंतर बिहार के युवाओं को नौकरी मिलती रहेगी। इस अवसर पर अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मो जमा खान ने कहा कि देश की जनता आज महंगाई, बेरोजगारी और गरीबी की मार झेल रही है लेकिन भाजपा वाले जनहित के मुद्दों पर बात करने के बजाए धार्मिक बयानबाजी कर देश में उन्माद पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। मोदी जी ने 2014 में किये अपने सारे वादे को आज भूल चुकें हैं और वोटो की धुर्वीकरण के लिए ये लोग सिर्फ समाज के आपसी भाईचारे और अमन चैन को खंडित करने की कोशिश करने में लगें हुए हैं। आगे उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को जनता की समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है। अपनी सत्ता की भुख को शांत करने के लिए भाजपा किसी भी निम्न स्तर तक जा सकते हैं। देशवासियों को इनसे सतर्क रहने की आवश्यकता है। बता दें कि खाद्य व उपभोक्ता संरक्षण मंत्री लेशी सिंह एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मो जमा खान ने प्रदेश के सभी जिलों से आए लोगों की समस्याओं को सुनकर सम्बंधित अधिकारी को त्वरित निष्पादन हेतु निर्देशित किया ।

अवैध खनन रोकने की दिशा में राज्य सरकार गंभीर : रामानंद

- आईटी सेक्टर को मजबूत करने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाए जा रहे हैं : इसराईल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

खान एवं भूतत्व मंत्री डॉ रामानंद यादव ने कहा कि अवैध खनन को रोकने की दिशा में राज्य सरकार पूरी तरह से गंभीर है। मंत्री उक्त बातें मंगलवार को राजद कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान कही। उन्होंने कहा कि बिना चालान और ओवरलोडिंग की गाड़ी को पकड़े जाने पर 25 प्रतिशत फाईन तो होगा ही, साथ ही साथ एक महीने के अंदर इस प्रकार के वाहन की नीलामी भी होगी। जिस स्थान पर अवैध खनन और ओवर लोडिंग वाली गाड़ी पकड़ी जाएगी, वहां पदस्थापित खनन विभाग के पदाधिकारी और कर्मचारी को बिना कारण बताओ नोटिस दिये ही उन्हे निलंबित किया जायेगा। इसके लिए खनन विभाग की ओर से लगातार औचक निरीक्षण भी किया जा रहा है। इन्होंने यह भी बताया कि स्थानीय थाना और पुलिस पदाधिकारी की संलिप्तता होने पर खनन विभाग की ओर से उन पर कार्रवाई के लिए बिहार के डीजीपी को लिखा जाएगा। साथ ही जहां से भी शिकायतें मिलेंगी उसकी जांच करायी जायेगी। और जो भी इस मामले में दोषी होंगे उन पर कार्रवाई की जाएगी, क्योंकि सरकार किसी भी स्थिति या परिस्थिति में अवैध खनन को रोकने के प्रति गंभीर है। इन्होंने यह भी कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के नेतृत्व में महागठबंधन सरकार सुनवाई और कार्रवाई के प्रति संकल्पित है। सूचना एवं प्राद्यौगिकी मंत्री मो इसराईल मंसुरी ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राज्य सरकार क्रांतिकारी कदम उठा रही हैं। इसके लिए राज्य सरकार आईटी सेक्टर को मजबूत करने की दिशा में आईटी पार्क, आईटी पॉलिसी, आईटी पोर्टल, आईटी हब, ई ऑफिस प्रोजेक्ट और आईटी टावर लगाये जाने का निरंतर कार्य हो रहा है। उन्होंने कहा कि आईटी सेक्टर को आगे बढ़ाने के प्रति मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव विशेष तौर से अपने स्तर से भी इस पर ध्यान दे रहे हैं। बिहार में महागठबंधन सरकार सूचना क्रांति के प्रति संकल्पित है। प्रदेश राजद प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि लोगों ने अपनी समस्याओं से संबंधित प्रतिवेदन मंत्री द्वय के समक्ष रखा जिसे सुनकर कार्रवाई हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश संबंधित विभाग और जिला के पदाधिकारियों को दी गई। इस अवसर पर राजद प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, प्रदेश महासचिव प्रमोद कुमार राम एवं मुकुंद सिंह सहित डॉ उमेश यादव भी मंत्री द्वय के सुनवाई कार्यक्रम में शामिल रहे। बताते चलें कि बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के राज्य कार्यालय में उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के विचारोनुरूप खान एवं भूतत्व मंत्री डॉक्टर रामानंद यादव तथा सूचना एवं प्राद्यौगिकी मंत्री मो इसराईल मंसुरी ने सुनवाई करते हुए प्राप्त प्रतिवेदन के आलोक में संबंधित विभाग एवं विभिन्न जिला के पदाधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई हेतु दिशा-निर्देश दिये।

दरभंगा में एम्स के निर्माण में अड़ंगा लगा रही भाजपा : जदयू

पटना। जदयू प्रदेश प्रवक्ता और विधायक बिनय चौधरी ने दरभंगा एम्स के निर्माण को लेकर बीजेपी के खिलाफ अड़ंगा लगाने का गंभीर आरोप लगाया है। प्रदेश प्रवक्ता और विधायक बिनय चौधरी ने कहा कि असलियत यह है कि केंद्र की बीजेपी सरकार जान बूझकर दरभंगा में एम्स का निर्माण नहीं कराना चाह रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने केंद्र सरकार के प्रस्ताव के बाद दरभंगा में एम्स के निर्माण को मंजूरी दी और इसके लिए 189 एकड़ जमीन का भी आवंटन किया। उन्होंने कहा कि जिस जमीन को लेकर बीजेपी सवाल उठा रही है उस जमीन के विकास का काम भी राज्य सरकार अपने खर्च पर करा रही है। प्रदेश प्रवक्ता और विधायक बिनय चौधरी ने कहा कि किसी भी एम्स निर्माण के लिए पहली शर्त ग्रीन फिल्ड एरिया होती है और शोभन में आवंटित जमीन इस पात्रता को पूरा करती है। उन्होंने कहा कि जिस शोभन में प्रस्तावित एम्स के लिए राज्य सरकार ने जमीन का आवंटन किया है वो फोरलेन के पास है, साथ ही उसके करीब से दरभंगा-आमस रोड गुजर रही है। श्री बिनय चौधरी ने कहा कि आवंटित जगह हवाई अड्डे के पास है जिससे मरीजों और डॉक्टरों को अस्पताल आने और जाने में सुगमता होगी। प्रदेश प्रवक्ता ने आरोप लगाते हुए कहा कि बीजेपी की शुरू से ही मंशा दरभंगा में प्रस्तावित एम्स के निर्माण के खिलाफ थी। उन्होंने कहा कि बीजेपी के सांसदों ने डीएमसीएच परिसर में एम्स का निर्माण हो इसको लेकर धरना दिया था लेकिन अगर उस परिसर में एम्स का निर्माण होता तो उससे डीएमसीएच का अस्तित्व खत्म हो जाता। इसलिए काफी सोच समझकर राज्य सरकार ने जिले के शोभन में एम्स के निर्माण की स्वीकृति दी है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे और स्थानीय सांसद नहीं चाहते कि दरभंगा में डीएमसीएच का अस्तित्व बचे और एम्स बने इसलिए वो प्रस्तावित एम्स का काम रोकने को लेकर तरह तरह के बहाने बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार एक बार फिर से उक्त जमीन का विकास कर केंद्र सरकार से शोभन में ही नया एम्स के निर्माण का आग्रह करेगी।

देश को बर्बाद करने का भाजपा का काम बदस्तूर जारी : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि 2014 में भाजपा ने देश को अच्छे दिनों का जो सपना दिखाया था वह पिछले नौ वर्षों में पूरी तरह चकनाचूर हो गया है। देश को बर्बाद करने का इनका काम बदस्तूर जारी है। इन वर्षों में सरकार का पूरा ध्यान पूंजीपतियों के विकास पर रहा है वहीं देश के गरीब, मजदूर, किसान व नौजवान हाशिये पर चले गये हैं। देश के संवैधानिक ताने-बाने और लोगों के जीवन पर बड़ा हमला हुआ है। भारतीय जनता सांप्रदायिकता और कॉर्पोरेट लूट के संयुक्त हमले का सामना कर रही है। इन सबके बीच भाजपा अपनी चुनावी मशीनरी के जरिये लोगों को फिर से बरगलाने और असल मुद्दों से दूर लेकर जाने की प्रक्रिया शुरू कर चुकी है। केंद्र की पोल खोलते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा ने युवाओं को 2 करोड़ सालाना नौकरी देने का वादा किया था लेकिन इसके उलट आज देश में बेरोजगारी नई ऊंचाई पर पहुंच गई है। सीएमआईई के आज अनुसार देश में बेरोजगारी की दर 7.45 प्रतिशत तक पहुंच गई है। स्थिति यह है कि हर वर्ष लाखों लोग काम की आयु में प्रवेश कर रहें हैं, लेकिन उनके लिए रोजगार है ही नहीं। 10 लाख रिक्तियां होने के बावजूद भर्तियाँ नहीं निकाली गयीं। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि इसी तरह सरकार ने किसानों की आमदनी 2022 तक दुगनी करने का वादा किया था, लेकिन हकीकत में उनकी आय और घट गयी है। लॉकडाउन से पहले किये एक सर्वेक्षण के 2013 और 2019 के बीच फसल उत्पादन से आय में वास्तव में लगभग 5 प्रतिशत की गिरावट आई है। आज भी इसमें कोई सुधार नहीं दिखता। एक रिपोर्ट के मुताबिक 2019 में 50 प्रतिशत कृषक परिवारों पर औसत बकाया ऋण 74,121 रुपये था इन्हीं कारणों से पिछले 9 वर्षों में लगभग एक लाख किसानों ने आत्महत्या की हैं। कहा कि इतनी समस्याओं के बावजूद दूसरी तरफ सरकार पूंजीपतियों को मुनाफा कमाने में लगातार मदद कर रही है। पिछले 9 वर्षों में 11 लाख करोड़ रुपये से अधिक के ऋण बट्टे खाते में डाल दिए गए हैं। यह इनकी संवेदनहीनता को दशार्ता है।

खुलने लगी विपक्षी एकता की गांठें : चिराग

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने नीतीश कुमार की विपक्षी एकता मुहिम पर निशाना साधा है। श्री चिराग ने कहा है कि एक तरफ जहां नीतीश विपक्ष के घर को मजबूत करने में लगे हैं, वहीं दूसरी तरफ उनके खुद के कुनबे की गांठें खुलती जा रही हैं। जो व्यक्ति अपने खुद के घर को नहीं संभाल पा रहा वह विपक्षी दलों को एकजुट क्या कर पाएगा? महागठबंधन के घटक हम पार्टी से मंत्री बने जीतन राम मांझी के बेटे संतोष मांझी द्वारा मंत्री पद से इस्तीफा दिए जाने के बाद श्री चिराग ने कहा कि जो कुछ भी हो रहा है वह सब तय था। कोई भी व्यक्ति उनके साथ लंबे वक्त तक नहीं टिक सकता। आगे-आगे देखिए, अभी बहुत कुछ ऐसा होने वाला है जो कहीं ना कहीं नीतीश की नाकामी को दशार्ता है। श्री चिराग ने कहा कि जहां एक तरफ सीएम विपक्षी एकता का नारा बुलंद करने में लगे हैं, वहीं उनके नीचे से उनकी ही जमीन खिसकती जा रही है जिसका अह्सास भी शायद उनको नहीं हो पा रहा है। श्री चिराग ने कहा है कि आने वाले दिनों में कई और ऐसे दल होंगे जो उनके नेतृत्व के विरोध में खुलकर सामने आएंगे और अपनी बातों को रखेंगे। श्री चिराग ने कहा कि अलग होने वाली हम पार्टी कल तक तो महागठबंधन के ही साथ थी। जीतनराम मांझी लंबे वक्त से उनके साथ थे, लेकिन अब नहीं हैं, ऐसे में जिस विपक्षी एकता का मंच सजा रहें हैं वह कहां तक संभव है सोचने वाली बात है। उक्त आशय की जानकारी लोजपा रा के बिहार प्रदेश मीडिया प्रभारी निशान्त मिश्रा ने दी।

स्कूली बच्चों को किताबें क्यों नहीं दी गई : मनोज

पटना। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता और पूर्व विधायक मनोज शर्मा ने कहा कि जदयू के नेता लगातार बीजेपी के बड़े नेताओं की डिग्री की जांच कर रहे हैं। वैसे ही सत्तारूढ़ दल के नेताओं को अपने राज्य के बच्चों के भविष्य की चिंता करनी चाहिए। बिहार के नौनिहालों के भविष्य की चिंता छोड़ जदयू के नेता दूसरे का सर्टिफिकेट देख रहे है। जबकि बिहार के एक करोड़ से ज्यादा बच्चो के भविष्य के साथ रोज खिलवाड़ हो रहा है। जदयू के नेताओं को बताना चाहिए कि गर्मी कि छुट्टी से पहले तक सरकारी स्कूलों में किताबें क्यों नहीं बंटी। बिहार के सरकारी स्कूलों में बांटने के लिए ब्लॉक स्तर पर अभी तक केवल 36 फीसदी यानी कि 45.75 लाख किताबें ही पहुंच सकी है। प्रदेश में कक्षा एक से आठवीं तक के 1.27 करोड़ बच्चों को सरकार की तरफ से किताबें बांटी जानी थी लेकिन कुल मिलाकर अब तक 65 फीसदी बच्चे बिना किताब की पढ़ाई कर रहे हैं। बीजेपी नेताओं के सर्टिफिकेट झांकने वाले जदयू के नेता कम से कम बिहार के सरकारी स्कूलों कि बिल्डिंगों को भी देख लेते। बिहार में कई हजार स्कुल भवन जर्जर है। वही, प्रदेश में 5419 भूमिहीन सरकारी विद्यालय के पास अपना भवन नहीं है। वहीं राज्य के 826 ऐसे सरकारी स्कूल है जो किराए पर चलते हैं। ऐसे स्कूल मंदिर, समुदायिक भवन और झोपड़ियों में चलते है।

जीतन बाबू चौबे से छब्बे बनने के चक्कर में कहीं दूबे भी नहीं बन पाएं : शिवांनद

पटना। राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानंद तिवारी ने संतोष सुमन के इस्तीफा प्रकरण पर तंज कसा है। उन्होंने कहा है कि मंत्रिमंडल से हटने के लिए इस्तीफा किसको दिया जाता है यह जीतन बाबू ने सुमन को शायद नहीं बताया था। विजय कुमार चौधरी को इस्तीफा देने का क्या मतलब था, इस उम्मीद में कि नीतीश कुमार मनावन करेंगे। लेकिन उल्टा हो गया। इस्तीफा मंजूर हो गया। सुमन कह रहे हैं कि जदयू में हम को विलीन करने के लिए कहा जा रहा था। हम के नेतृत्व से जबरन यह कोई कैसे करा सकता था। यह तो कहने की बातें हैं। जो कुछ हुआ उसकी पटकथा कहां और किसके द्वारा लिखी गई है यह बात भी छीपी रहने वाली नहीं है। कहीं ऐसा नहीं हो कि जीतन बाबू चौबे से छब्बे बनने के चक्कर में दूबे भी नहीं बन पाएं। सुमन, विधान सभा का चुनाव हारने के बाद लालू की कृपा से विधान परिषद के सदस्य हैं। उसी हैसियत से नीतीश वे मंत्रिमंडल के सदस्य थे। जीतन बाबू की बेचैनी की वजह दूसरी है। अभी गया में इनकी बेटी मेयर का चुनाव लड़ी थीं। शायद जमानत बचाने लायक वोट भी नहीं पा सकीं। अभी अभी दो तीन दिन पहले गया नगर निगम के उप चुनाव में इनके निकटस्थ को मात्र तेरह वोट मिल पाया। दरअसल, नीतीश कुमार की कृपा से मुख्यमंत्री बनने के बाद जीतन बाबू आसमान में पहुंच गए हैं। उनका उतावलापन रोजाना उनके अखबारी बयानों में नजर आता है। लगता है कि अपने उतावले पन का शिकार उन्होंने अपनी दूसरी पीढ़ी को ही बना दिया है।

अतिपिछड़े समाज के आरक्षण को समाप्त करने की साजिश : जायसवाल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल ने आरोप लगाया है कि पश्चिम बंगाल और बिहार में हिंदू अति पिछड़ों के आरक्षण को समाप्त करने की साजिश हो रही हैं। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में अति पिछड़ों की सूची में 81 जातियां है जिसमे 73 मुस्लिम जातियों से हैं। भाजपा प्रदेश कार्यालय में मंगलवार आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में मुस्लिम जातियों को अति पिछड़ों में शामिल कर हिंदू अति पिछड़ों के आरक्षण छीनने का काम कर हो रहा है। डॉ जायसवाल ने कहा कि मुस्लिमों में शेख, सैयद, मल्लिक, पठान अगड़ी जातियों में आते हैं, लेकिन शेखरा जाति को अति पिछड़े में शामिल कर शेखों को आरक्षण दिया जा रहा। इसी तरह अन्य मुस्लिम जातियों को अति पिछड़ों में शामिल किया गया है। जायसवाल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी मुंगेरीलाल आयोग और जननायक कपूर्री ठाकुर की सूचियों को मान्यता देती है। लेकिन वर्तमान में जो सूची बनाई जा रही है, उसमें राज्य सरकार द्वारा राजनीतिक लाभ और स्वार्थ के लिए अनेक अगड़ी मुस्लिम जातियों को शामिल कर दिए जाने से वास्तविक पिछड़ी और अत्यंत पिछड़ी जातियों के अधिकारों में कटौती हो रही है। डॉ जायसवाल ने आगे कहा कि कानून है कि ओबीसी की सैलरी में कृषि से आई आय को नहीं जोड़ा जाएगा, लेकिन बिहार में ओबीसी की आमदनी में दोनो को जोड़ दिया जा रहा है। उन्होंने कहा इसका खुलासा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ओबीसी आयोग बनाए जाने के बाद हो सका। उन्होंने याद दिलाया इस आयोग का भी राजद ने संसद में विरोध किया गया था।

गांव के विकास में डिजिटल क्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका : चौधरी

पटना/बिहटा। किसी भी गांव के सर्वांगीण विकास में डिजिटल क्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उसमें डिजिटल लाइब्रेरी मील का पथ्थर साबित होगा। उक्त बातें बिहार विधानसभा के अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी ने बिहटा में ऐ लिटिल रे डिजिटल पुस्तकालय का उदघाटन समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आज डिजिटल पुस्तकालय संसाधनों और प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित सामग्रियों तक पहुंच बना रही है कम लागत व सीमित संसाधनों में जानकारी वितरण कर शिक्षाण संस्थानों के बीच ज्ञान कौशल और नेतृत्व प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से युवा ज्ञानवर्धन कर विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल होकर सफलता के उच्च शिखर पर पहुंच कर राज्य व देश सेवा में अहम भूमिका निभा रहे हैं। डिजिटल लाइब्रेरी के इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति असिमित संसाधन मे डाटा स्टोर कर विज्ञान एवं तकनीकी सहित समान्य ज्ञान से संबंधित जानकारी उपलब्ध कर सकते हैं। हमे पूरा विश्वास है कि बिहटा जैसे शिक्षा के हब से जाने जाने वाली बिहटा डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित कर बुनियादी ढांचा देने के लिए प्रोत्साहित करेगी। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जैसे संस्कार देकर संस्थान युवा के निर्माण में मुख्य भूमिका निभा सकेंगे। मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक भाई वीरेंद्र ने कहा की राज्य के बच्चों को अब गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार कृत संकल्पित है। बिहटा में इसतरह के लाइब्रेरी खुल जाने से यहां के छात्र छात्राओं को बेहतर शिक्षा के लिए अन्य जगहों पर भटकना नहीं पडेगा। बेरोजगारी के दौर में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में डिजिटल लाइब्रेरी का अहम रोल होगा। समारोह की अध्यक्षता ई चन्द्रकांत यादव ने की। इससे पूर्व पुस्तकालय के निदेशक जीतेन्द्र कुमार ने विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि अशोका शिक्षा हब होने के नाते समय की मांग पर वातानुकूलित पुस्तकालय में आधुनिक तकनीक के जरिये छात्र छात्राओं को गुणवत्ता युक्त शिक्षा मुहैया कराई जायेगी। समय समय पर एक्सपर्ट शिक्षको द्वारा प्रतियोगी परीक्षा तैयारी कराने हेतु उचित सलाह दी जायेगी। उपस्थित लोगों में बिहटा नगर परिषद् के मुख्य पार्षद प्रियंका कुमारी, शिक्षाविद रंजय कुमार, मुखिया संजय कुमार, शंकर यादव कलकतिया, वकील यादव, वीरेंद्र राय, विधान चंद राय, देवानन्द यादव, भगवान सिंह, अजित यादव, अन्नु यादव, देवानन्द यादव, देवानन्द यादव, जिला पार्षद प्रतिनिधि नरेंद्र कुमार राजीव रंजन इत्यादि शामिल थे।

जना स्मॉल फाइनेंस बैंक

(एक अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक)

प्रधान कार्यालय: द फेयरवे, ग्राउंड एंड फर्स्ट फ्लोर, सर्वे नंबर: 10/1, 11/2 और 12/2बी, ऑफ डोम्लुर, कोरमंगला इनर रिंग रोड, ईजीएल बिजनेस पार्क के बगल में, छल्लाघट्टा, बैंगलोर -560071।

स्वर्ण आभूषणों की नीलामी के लिए सार्वजनिक सूचना

नीचे उल्लिखित उधारकर्ता कई अनुस्मारक के बावजूद निर्धारित समय के भीतर ऋण चुकाने और सोने के गहनों को भुनाने में विफल रहे है। नीचे सूचीबद्ध उधारकर्ताओ द्वारा उक्त ऋण खातो के तहत गिरवी रखे गए सोने के आभूषण/आभूषण को हमारी शाखा परिसर मे सार्वजनिक/ ऑनलाइन/निजी नीलामी मे बेचा जाएगा। **21-06-2023 प्रातः 10.30 बजे।** भाग लेने के इच्छुक लोगों से शाखा से संपर्क करने का अनुरोध किया जाता है। बैंक बिना कोई कारण बताए किसी भी बोली को स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। कृपया ध्यान दे कि यदि नीलामी उसी दिन पूरी नही होती है, तो बाद के दिनों मे उन्हीं नियमों और शर्तो पर नीलामी की जाएगी। यदि ग्राहक की मृत्यु हो जाती है तो नीलामी से संबंधित सभी शर्ते नामांकित/कानूनी उत्तराधिकारी पर लागू होगी। ऋण लेने वालों को नीलामी की तारीख से पहले अदयतन ब्याज और सहायक खर्चो का भुगतान करने के लिए सूचित किया जाता है, ऐसा न करने पर गिरवी रखे गए सोने के आभूषणों को बेच दिया जाएगा और शेष बकाया राशि, यदि कोई हो, ब्याज और लागत के साथ वसूल की जाएगी। किसी भी प्रश्न और नियम और शर्तों के लिए शाखा से संपर्क करें। शाखा के पते की जानकारी के लिए विजिट करे **www.janabank.com.**

सीनियर नहीं।	ऋण खाता नहीं।	उधारकर्ता/सह-उधारकर्ता का नाम	कुल वजन गिरवी रखा सोना गहने
1	31348730025795	बसंती देवी	14.66
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, मदर्स बिल्डिंग, अपोजिट। यूनियन बैंक, मचुआटोली, आर्य कुमार रोड, पटना-800004।			
2	31368730006798	प्रमोद सिंह	6.17
3	45038730003147	राकेश कुमार	9.7
जन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, 33ए, प्रेम नगर, नया टोला, अद्भुत के सामने हनुमान मंदिर, एचपी पेट्रोल पंप के बगल में, भागलपुर-812001।			
4	31378730018615	करण कुमार	7.86
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, वार्ड नंबर 49, थाना नंबर 410, शिव मंदिर के सामने, बेला रोड, मिठनपुर मुजफ्फरपुर पोस्ट ऑफिस, मुजफ्फरपुर, बिहार-842002.			
5	33008730009372	पिंकी देवी	13.26
6	33008730009610	श्यामल कुमार	58.31
7	33008730010663	संजू देवी	12.77
जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, एएम लाल टॉवर, बीएमपी -16 के पास, फुलवारीशरीफ फुलवारीलख, पटना -801505।			
8	45048730003685	अभय कुमार	17.3
9	45058730007877	मो जाहिद	7.55
जन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, ग्राउंड फ्लोर, खाता नंबर 598, यमुना कॉम्प्लेक्स, मिठनपुरा चौक, मुजफ्फरपुर-842002, भारत।			
10	45068730009095	रीता देवी	6.86
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, "सुशीला कॉम्प्लेक्स", भूतल, विपक्ष। वी-मार्ट कचहरी रोड, बेगूसराय, बिहार-851101, भारत।			
11	45078730001981	सबिता कुमारी	46.4
12	45078730002432	आशुतोष कुमार	15.28
जना स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड, ग्राउंड फ्लोर, हरिहर चैंबर, बोरिंग रोड चौराहा, बोरिंग रोड, श्रीकृष्ण पुरी, पटना, बिहार-800001, भारत।			
13	45418730007193	विभा रंजन	25.4
14	45418730007204	गुड्डू कुमार	21.43
15	45418730007243	पूजा देवी	5.58
16	45418730007361	सौरभ प्रकाश	12.6
17	45418730007411	अमृता देवी	9.34
18	45418740000429	निर्मला पाण्डेय	19.9
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, पहली मंजिल, प्रिया कॉम्प्लेक्स, राजा बाजार, मोतिहारी-845401।			
19	47868730001900	प्रियदर्शी कुमार	15.1
20	47868730001942	रजनीश कुमार	8.99
21	47868730001952	रजनीश कुमार	19.77
जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड, "गायत्री कॉम्प्लेक्स", भूतल और पहली मंजिल, लहेरिया टोला, कोतवाली थाना, गया-823001, भारत।			

जगह : बिहार

दिनांक: 14.06.2023

हस्ता/- प्राधिकृत अधिकारी

जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड

महागठबंधन के आह्वान पर 15 को आयोजित धरना प्रर्दशन को सफल बनाने की जोरदार तैयारी

15 को ऐतिहासिक होगा महागठबंधन का धरना-प्रदर्शन: उमेश

पटना। बिहार जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि केंद्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ पार्टी के सभी सांसद, विधायक, विधानपार्षद, प्रमंडल प्रभारी, विधानसभा प्रभारी, पूर्व सांसद, पूर्व विधायक, पूर्व प्रत्याशिगण अपने-अपने क्षेत्र में डटकर आगामी 15 जून को प्रखंड स्तर पर आयोजित धरना-प्रदर्शन को ऐतिहासिक बनाने में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित करेंगे। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मौजूदा केंद्र की सरकार जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भूल चुकी है, सरकार का पूरा तंत्र प्रधानमंत्री मोदी के गुणगान करने में व्यस्त और मस्त हुआ पड़ा है। इन्हें देश के जनता की चीखपुकार सुनाई नहीं दे रही है। कमदतोड़ महंगाई से गरीब जनता बेहाल है। मोदी जी ने गरीबी खत्म करने का वादा किया था लेकिन आज इनकी सरकार गरीबों को ही खत्म करने पर तुली हुई है। हम सभी इस बात से भी अवगत हैं कि वैश्विक भुखमरी सुचनांक में भारत की स्थिति निरंतर खराब होती दिख रही है। आगे उन्होंने कहा कि खाने-पीने की वस्तुओं पर भाजपा की केंद्र सरकार द्वारा बेतहासा टैक्स लगाकर गरीबों के पॉकेट पर डाका डाला जा रहा है। आज पूरी दुनिया में सबसे महंगा गैस सिलेंडर हमारे देश में मिल रहा है। अंतरास्ट्रीय बाजार में पेट्रोल-डी

संक्षिप्त खबरें

पीएम जन औषधि केंद्र का विधिवत फीता काटकर किया गया उद्घाटन

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत कल्याणपुर बाजार में प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र का विधिवत उद्घाटन किया गया। यह उद्घाटन कमलेश पोद्दार ने फीता काटकर किया। वहीं जन औषधि केंद्र के संचालिका मीनाक्षी देवी ने बताई कि यहां विभिन्न प्रकार के 1866 प्रकार की दवाईयां रियायती दर न्यूनतम 50 प्रतिशत से अधिकतम 90 प्रतिशत रियायत दी जाती है। मौके पर केसरी नंदन, देवनंदन एवं शिवनंदन सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

रंगेहाथ चोरी करते चोर को ग्रामीणों ने पकड़कर किया पुलिस के हवाले

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के देशरी वार्ड 20 में एक साउंड सिस्टम की दुकान में चोरी कर रहे चोरों को ग्रामीणों ने रंगे हाथ पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। वहीं इस संबंध में दुकान की मालिक अरविंद सिंह ने विभूतिपुर थाने में प्राथमिकी दर्ज करवाया है। जिसमें बताया गया कि 10 जून की रात्रि उनके साउंड सिस्टम की दुकान से तीन युवक एंपलीफायर मशीन एवं मिक्चर मशीन निकालकर भाग रहा था। जिसे देखकर वह शोर मचाया और आसपास के ग्रामीणों के सहयोग से दो युवक को पकड़ा। वहीं एक युवक भागने में सफल रहा। पकड़ाए युवक की पहचान अशोक साह के पुत्र अरूण कुमार एवं किसन महतो के पुत्र संजय कुमार के रूप में किया गया। वहीं भागने में सफल युवक का नाम पूछने पर रामचन्द्र पासवान के पुत्र अमन कुमार बताया गया। वहीं विभूतिपुर पुलिस ने दोनों युवक को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

धान बीज वितरण को लेकर जिला कृषि पदाधिकारी ने प्रखंड कृषि पदाधिकारी को भेजा पत्र

विभूतिपुर, समस्तीपुर। जिला कृषि पदाधिकारी ने धान बीज वितरण को लेकर सभी प्रखंड कृषि पदाधिकारी को एक पत्र भेजा है। जिसने बताया गया है कि कृषि समन्वयक एवं किसान सलाहकार अपनी मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर है। जिस कारण सरकार की महत्वाकांक्षी एवं किसान की हितकारी योजना खरीफ 2023 धान बीज वितरण प्रभावित हो रहा है। कार्य को ससमय निष्पादन के लिए प्रखंड में कार्यरत आत्मा कर्मी जैसे बीटीएम व एटीएम एवं प्रखंड उद्यान पदाधिकारी को जिम्मेवारी सौंपी जाती है। तथा निर्देश दिया गया कि आत्मा कर्मी एवं उद्यान पदाधिकारी को पंचायत आवंटित किया जाए। ताकि उन्हें लॉगइन आईडी एवं पासवर्ड उपलब्ध कराकर ससमय बीज वितरण कराया जा सके। साथ ही संबंधित कर्मी का लॉगइन आईडी एवं पासवर्ड उपलब्ध कराने हेतु कर्मी का नाम, मोबाइल नंबर एवं ईमेल आईडी उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

पुलिस को देख बाइक छोड़ फरार हुआ बाइक सवार, बाइक जब्त

शिवाजीनगर, समस्तीपुर। हथौड़ी थाना क्षेत्र के बंधार गांव वॉटरवेज बांध पर रात्रि गश्ती के दौरान पुलिस की गाड़ी को देखकर एक बाइक सवार गाड़ी छोड़कर फरार हो गया। हथौड़ी थानाध्यक्ष मोनू राय ने बताया कि हीरो कंपनी का लाल रंग का पैशन-प्रो बाइक को जब्त कर थाना लाया गया है। जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर बीआर 07 एएच 8531 जब्त गाड़ी मालिक के बारे में पुलिस जांच कर रही है।

मुखिया ने किया प्रभार ग्रहण

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण पंचायत के नवनिर्वाचित मुखिया ममता देवी ने स्थानीय पंचायत भवन पहुंचकर पदभार ग्रहण किया। वहीं पंचायत के उपस्थित जनता को संबोधित करते हुए पंचायत के विकास में निष्ठा पूर्वक कार्य करने की घोषणा की। मौके पर सरपंच रीता सिंह, उप मुखिया अवधेश यादव, पंचायत सचिव शशि भूषण कर्ण, रंजीत प्रसाद, रामपुकार महतो, राम बहादुर सिंह सहित पंचायत के सभी जनप्रतिनिधि एवं सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

पिता ने मोबाइल नहीं खरीदा, तो बेटे ने की आत्महत्या

मुजफ्फरपुर गायघाट थाना अन्तर्गत बेनीबाद ओपी क्षेत्र के जांता डीह गांव में मोबाईल फोन खरीदने को लेकर पिता से हुई विवाद में पुत्र ने आत्म हत्या कर ली। मृतक की पहचान जांता डीह वार्ड संख्या दस के निवासी उपेन्द्र साह के 14 वर्षीय पुत्र गोलू कुमार बताया गया है। जानकारी के मुताबिक मोबाईल खरीदने को लेकर पिता पुत्र में बकझक हुई थी। गोलू किसी लड़की से मोबाईल फोन पर बातचीत करता था। इसकी जानकारी पिता को हुई जहां डांट डपट के क्रम में मोबाईल फोन तोड़ दिया गया। इसके बाद गोलू कुमार नए मोबाईल फोन खरीदने के लिए अपने पिता पर दवाब बना रहा था। नए मोबाईल फोन खरीदने से मना करने के बाद गोलू कुमार घर से कुछ दूर अपने डेरा पर गया और रस्सी के फंदे से लटक कर आत्म हत्या कर ली। मौके पर पहुंचे परिजनों ने जीवित होने की आस में उसे दरभंगा शहर के एक निजी अस्पताल ले गए जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बेनीबाद ओपी प्रभारी रघुनाथ पासवान ने बताया कि उन्हें इस घटना की स्पष्ट जानकारी नहीं मिली है।

मंत्री की भी नहीं सुनती समस्तीपुर पुलिस, घटना के 27 दिन बाद भी नहीं किया एफआईआर दर्ज

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अभिनव अंशु पर हुए जानलेवा हमला मामले में घटना के 27 दिन बीत जाने व एसपी से गुहार लगाने के बावजूद भी पुलिस ने एफआईआर दर्ज नहीं किया है। जिससे शिकायतकर्ताओं के प्रति समस्तीपुर पुलिस के गैरजिम्मेदाराना रवैये का पता चलता है। मामला जिले के मुफ्फसिल थाना क्षेत्र का है, जहां बीते 17 मई को एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अभिनव अंशु के द्वारा समस्तीपुर कॉलेज समस्तीपुर के प्रिंसिपल इंचार्ज पर उनके ऊपर जानलेवा हमले की साजिश रचने व दो अन्य नामजद एवं आठ अज्ञात के विरुद्ध मारपीट करने और जानलेवा हमला कर हाथ तोड़ देने का आरोप लगाते हुए थाने में आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज करने की गुहार लगाई गई थी। वहीं, कई दिन बीत जाने के बावजूद भी पुलिस के द्वारा मामला दर्ज नहीं किए जाने के विरोध में एनएसयूआई ने पुतला दहन कर अपना आक्रोश प्रकट किया था। एफआईआर दर्ज नहीं किए जाने को लेकर समस्तीपुर एसपी से भी गुहार लगाई गई, लेकिन बावजूद इसके घटना के 27 दिन बीत जाने के बाद भी एफआईआर दर्ज नहीं हो पाया। एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अभिनव अंशु के अनुसार बिहार सरकार में कांग्रेस कोटे के एक मंत्री के एसपी से बात करने के बावजूद भी पुलिस ने एफआईआर दर्ज नहीं किया। बता दें कि एफआईआर दर्ज करने से इनकार पर संबंधित पुलिस पदाधिकारी के ऊपर विभागीय कार्रवाई करने का भी प्रावधान है। वहीं, समस्तीपुर कॉलेज समस्तीपुर के प्रिंसिपल इंचार्ज ने अपने ऊपर लगे आरोपों से साफ इनकार किया। बताया कि घटना के बाद घायल छात्र का उन्होंने फर्स्ट एड कराया था।

अबकी बार 400 पार के साथ केन्द्र में बनेगी नरेंद्र मोदी की सरकार : तारकिशोर प्रसाद

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

9 साल बेमिसाल कार्यक्रम के अंतर्गत संयुक्त मोर्चा सम्मेलन में समस्तीपुर पहुंचे बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तार किशोर प्रसाद ने वारिसनगर विधानसभा के हिमगिरी उत्सव पैलेस में कहा कि अबकी बार 400 पार के लक्ष्य को पूरा कर केंद्र में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने चहुंमुखी विकास किया है। आज विदेशों में भी भारत अपना परचम लहरा रहा है। विपक्ष पर भी जमकर निशाना साधते हुए कहा कि अपना ठग बंधन संभलता नहीं चले हैं देश को संभालने। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष उपेंद्र कुमार कुशवाहा ने कहा कि 2024 की तैयारी शुरू हो गई है कार्यकर्ता घर-घर जाएं तथा सरकार के द्वारा किए गए जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दें। देश की जनता पूरी तरह से अपना मन बना चुकी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष ठाकुर संग्राम सिंह ने किया तथा संचालन विधानसभा प्रभारी रमाकांत राय ने किया। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का विधिवत शुरूआत किया गया। वहीं सभी अतिथियों का स्वागत अंग वस्त्र देकर किया गया। मौके पर बिहार विधान परिषद सदस्य डॉ तरुण कुमार, जिला महामंत्री कौशल पाण्डेय, प्रेमदास, प्रदेश के नेता कैप्टन कमलेश सहनी, नीलम सहनी, किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष सुजीत भास्कर, बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के जिला संयोजक उमेश चंद्र प्रसाद कुशवाहा, विधान सभा संयोजक अशोक झा, मंडल अध्यक्ष राहुल चौधरी, अजय कुशवाहा, दीपक सहनी, राजू पटेल दीपक सत्यार्थी, युवा मोर्चा के अविनाश सिंह चंदेल किसान मोर्चा के जिला मीडिया प्रभारी सौरव ठाकुर, यशवंत सिंह, अभय प्रकाश सहित सभी मोर्चा के पदाधिकारी उपस्थित थे।

सेल टैक्स ऑफिस के पास हुई लूट की घटना का जल्द हो सकता है उद्भेदन

● रुपए के साथ अपराधी गिरफ्तार

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर नगर थाना क्षेत्र के सेल टैक्स ऑफिस के पास 22 मई की शाम एक मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव से एक लाख 91 हजार रुपए की हुई लूट की घटना का जल्द ही नगर थाना पुलिस उद्भेदन कर सकती है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पुलिस ने लूट की घटना को अंजाम देने वाले अपराधी को जिले से करीब सौ-सवा सौ किलोमीटर दूर राज्य के एक जिले से गिरफ्तार करने में सफल हो गई है। गिरफ्तार अपराधी से पुलिस के द्वारा की गई थी स्थित पूछताछ में उसने कांड में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है और घटना के संबंध में उसने बताया है कि लूट की घटना को अंजाम देने के बाद वह लोग सेल टैक्स ऑफिस से पूरब की तरफ होते हुए डीएम आवास के पीछे से थानेश्वर स्थान मंदिर की तरफ से भागकर समस्तीपुर कचहरी के निकट स्थित एक निजी प्राइवेट अस्पताल में इलाज कराने के बहाने छुप गए। ताकि पुलिस उन्हें सड़कों पर ढूंढती रहे और वह आराम से निजी अस्पताल में इलाज के बहाने छिपे रहें। करीब घंटे-दो घंटे के बाद सड़क पर पुलिस की सरगर्मी कम होने के बाद वह वहां से निकलकर अपने गंतव्य स्थान को फरार हो गए। पुलिस सूत्रों के अनुसार मोबाइल लोकेशन के आधार पर अपराधी को पकड़ा गया है और उसके पास से लूट का करीब एक लाख 70 हजार रुपए भी पुलिस ने बरामद कर लिया है। हालांकि, पूछे जाने पर नगर थाना पुलिस के द्वारा मामला के संबंध में कुछ भी बताने से इनकार किया गया। जिस कारण अपराधियों को कहां से गिरफ्तार किया गया और उनकी संख्या के बारे में पता नहीं चल पाया है। बता दें कि समस्तीपुर नगर थाना क्षेत्र के सेल टैक्स ऑफिस के पास 22 मई की शाम एक एमआर से एक लाख 91 हजार रुपये की लूट हो गई। बताया गया है कि नगर थाना क्षेत्र के बीएड कॉलेज आजाद चौक मुहल्ले के रहने वाले एमआर शिवनाथ झा (54) एसबीआई मुख्य शाखा से रुपया निकाल कर अपने घर जा रहे थे। उन्होंने बाइक के हैंडिल में दो झोला में एक लाख 91 हजार रुपये लटकाकर निकले। तभी पीछे से एक बाइक पर सवार दो अपराधियों ने सरकारी बस स्टैंड के पास रुपये से भरा थैला छीन लिया था और आराम से फरार हो गए थे।

प्रखंड स्तरीय उर्वरक एवं निगरानी समिति की बैठक सम्पन्न

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड मुख्यालय स्थित पंचायत समिति भवन के सभागार में मंगलवार को प्रखंड स्तरीय उर्वरक एवं निगरानी समिति की एक बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख रूपांजलि कुमारी ने की। बैठक में बीएओ सह पदेन सचिव हिमांशु कुमार ने गत बैठक की कार्रवाई पढ़कर सुनाया जिससे संपुष्टि किया जा सके। बैठक को जिला पार्षद रीना राय, पूर्व जिला पार्षद कृष्ण देव प्रसाद सिंह, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष कपिलेश्व कुंवर, राजद प्रखंड अध्यक्ष रविन्द्र कुमार यादव, उर्वरक विक्रेता प्रतिनिधि संजय कुमार समेत अन्य लोगों ने संबोधित किया। बैठक में वक्ताओं ने बीते दिनों रासायनिक उर्वरक की किल्लतों से किसानों को हुई परेशानी और उचित मूल्य से अधिक रुपए लिए जाने पर विस्तृत रूप से चर्चा किया। साथ ही थोक विक्रेताओं से खुदरा उर्वरक विक्रेताओं को उचित मूल्य पर उर्वरक उपलब्ध कराने का आग्रह किया। वहीं उर्वरक विक्रेता के नेतृत्वकर्ता संजय कुमार ने इस वर्ष किसानों को उर्वरक की किल्लतों की समस्या नहीं होने की बातें बताई। वहीं पूर्व जिला परिषद कृष्ण जय प्रसाद सिंह ने कहा कि जब तक पदाधिकारी और प्रमुख जिला में मजबूती से किसानों की समस्या को नहीं उठाएंगे तब तक किसानों की समस्या दूर नहीं होगी। इसलिए जिला पदाधिकारी के पास इस समस्या को रखना जरूरी है। बैठक में सभी लोगों की सूचना नहीं होने पर बीएओ को फजीहत झेलना पड़ा। वहीं कपिलेश्वर कुंवर ने पदाधिकारी प्रतिनिधि और उर्वरक विक्रेताओं को आपस में समन्वय बनाकर चलने का आग्रह किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रखंड प्रमुख रूपांजलि कुमारी ने कहा की किसानों की समस्या को पदाधिकारियों तक पहुंचाकर हरसंभव उनके समस्या को दूर करने के लिए प्रयासरत हूं। अंत में बैठक की धन्यवाद ज्ञापन नोडल कृषि समन्वय मुरारी प्रसाद सिंह ने किया। बैठक में कृषि समन्वय कैलाश प्रसाद, अंजनी कुमार, मुरारी सिंह, अभिजीत कुमार, खुदरा उर्वरक विक्रेता शशि रंजन सिंह, राम विनय महतो, अनिल कुमार महतो, रामबाबू यादव, योगेंद्र प्रसाद सिंह, धर्मेंद्र कुमार, सहदेव प्रसाद, संजय कुमार, राकेश कुमार सिंह, आरती कुमारी समेत अन्य लोग मौजूद थे।

शपथ ग्रहण के बाद नवनिर्वाचित पार्षदों का किया अभिनंदन

प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर। समस्तीपुर समाहरणालय में मंगलवार को आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में जिला परिषद क्षेत्र संख्या पांच से नवनिर्वाचित जिला पार्षद मंजू देवी तथा जिला परिषद क्षेत्र संख्या- 45 से नवनिर्वाचित जिला पार्षद निर्मला देवी ने शपथ लिया। तदुपरांत जिला परिषद कार्यालय में पार्षदद्वय का अभिनन्दन किया गया। मौके पर समस्तीपुर जिला सहकारिता बैंक के अध्यक्ष विनोद कुमार राय, जिला परिषद उपाध्यक्ष अंजना कुमारी, अरविन्द यादव, शिवम कुमार, मोहन कुमार, सचिन कुमार, प्रयाग राज, प्रदीप यादव, गोविन्द कुमार, आशुतोष कुमार, संजीव कुमार आदि मौजूद थे।

बाइक सवार हुआ जख्मी

कल्याणपुर, प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर थाना क्षेत्र के समस्तीपुर-दरभंगा मुख्य पथ के गोपालपुर एस्सार पेट्रोल पंप के पास बाइक दुर्घटना में बाईक सवार जख्मी हो गया। कल्याणपुर पुलिस की गश्ती दल ने गंभीर जख्मी को सीएचसी में भर्ती कराया गया। जख्मी की पहचान रोसड़ा थाना अंतर्गत भिरहा गांव निवासी लालटुन राम का 23 वर्षीय पुत्र राजा कुमार एवं कल्याणपुर थाना के मधुरापुर थाना क्षेत्र के मधुरापुर टांरा गांव निवासी रामचंद्र राम का पुत्र सुमित कुमार के रूप में हुई है। दोनों को कल्याणपुर पुलिस ने पीएचसी में भर्ती कराया। जहा डॉक्टरों ने गम्भीर स्थिति को देखते हुए डीएमसीएच रेफर कर दिया गया। परिजनों का बताना है, कि राजा कुमार के बहन से शादी एक सप्ताह पूर्व ही सुनील कुमार से हुई थी। इसी क्रम में सुमित अपनी बहन कल्याणपुर थाना के गोपालपुर से तीस हजार रुपए लेने गया था। रुपए लेकर लौटने के क्रम में गोपालपुर एस्सार पेट्रोल पंप के पास दुर्घटना ग्रस्त हो गया। बेहोसी की हालत में रात्रि को कल्याणपुर पुलिस ने बरामद किया। इस बाबत थानाध्यक्ष गौतम कुमार का बताना है, कि दोनों अचेत पड़े बाइक सवार को बेहतर इलाज के लिए डीएमसीएच भेजा गया है। वैसे परिजनों द्वारा जो भी लिख कर दिया जाएगा। उसके आधार पर एग्रेतर करवाई की जायेगी। दूसरी दुर्घटना में कल्याणपुर थाना के समीप हुई। जिसमें बाइक दुर्घटना में एक युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जख्मी युवक की पहचान विनोद राय के 8 वर्षीय पुत्र हिमांशु कुमार के रूप में हुई है। जिसका पीएससी में इलाज के बाद जख्मी बालक को समस्तीपुर सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया है। वहीं बाइक को पुलिस ने बाईक को जब्त कर लिया है। परिजन के द्वारा आवेदन देने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सीपीएम का जिला स्तरीय प्रशिक्षण शुरू

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

सीपीआईएम की ओर से शहीद उदय शंकर सिंह के शहादत दिवस के अवसर पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मिश्रौलिया के परिसर में जिला स्तरीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत केन्द्रीय कमेटी सदस्य सह प्रशिक्षक बादल सरोज के द्वारा झंडोतोलन के साथ की गई। तत्पश्यात शहीद वेदी पर सभी सदस्यों ने माल्यार्पण किया। शहीदों के सम्मान में गगनभेदी नारे लगाए गए। इसके बाद राज्य कमेटी सदस्य मुज्जफर इमाम की अध्यक्षता में प्रशिक्षण शिविर के प्रथम सत्र मार्क्सवादी दर्शन विषय पर प्रारंभ हुआ। इस पर व्याख्यान देते हुए केन्द्रीय कमेटी सदस्य बादल सरोज ने कहा कि पदार्थ मूल है जिसके बाद चेतना की उत्पत्ति होती है। पदार्थ में अनवरत बदलाव होता रहता है। पदार्थ गतिशील है जिस बात की व्याख्या हमारे कई मनीषियों तथा दार्शनिकों ने की है। उन्होंने बताया कि गति के तीन नियम हमेशा काम करते रहते हैं। वे तीन नियम हैं पदार्थों के अन्दर उपस्थित दो विरोधी शक्तियों की आपसी एकता, मात्रात्मक से गुणात्मक परिवर्तन का नियम तथा निषेध से निषेध का नियम। इन्हीं तीनों नियमों के आधार पर प्रकृति की हरेक वस्तुएं संचालित हैं। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि कार्ल मार्क्स तथा ऐंगिल्स के द्वारा रचित मार्क्सवादी घोषणा पत्र जो आज से 175 साल पहले लिखा गया वह आज भी पूर्णरूपेण प्रासंगिक है। इस प्रशिक्षण शिविर में राज्य सचिव मंडल सदस्य सह स्थानीय विभूतिपुर विधायक अजय कुमार, जिला सचिव रामाश्रय महतो, राज्य कमेटी सदस्य मनोज कुमार सुनील, रामदयाल भारती, नीलम देवी, ज़िला सचिव मंडल सदस्य सत्यनारायण सिंह, महेश कुमार, उपेन्द्र राय, विधान चन्द्र, राम सागर पासवान, जिला कमेटी सदस्य विश्वनाथ महतो, राम प्रकाश यादव, सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मृदुला सिन्हा, श्याम किशोर कमल, मिथिलेश सिंह, सिया प्रसाद यादव, दिनेश पासवान, रामदेव राय, अरविन्द कुमार दास, मुकेश कुमार राय अवधेश कुमार मिश्र, कृष्ण कुमार सिन्हा, संगीता राय, लोकल कमेटी सदस्य पार्वती देवी, लालो देवी, शांति सिन्हा, संजू कुमारी राय, मीना देवी, अमला देवी, ममता देवी, सुलेखा कुमारी, कृष्णमूर्ति, जागेश्वर महतो, राजेश कुमार, शंभु कुमार, ललन सिंह, दिलीप पंजियार, वासुदेव प्रसाद, उमेश दास, बंधु महतो, राजीव राय, राम नारायण पासवान, ब्रह्मदेव महतो, दिनेश कुमार, फूलेन चौधरी, शंकर शर्मा सहित सैकड़ो सदस्यों ने भाग लिया। इसके पूर्व खोकसाहा चौक पर कॉ बादल सरोज को फूलमाला से भव्य स्वागत किया गया। वहां से दर्जनों मोटरसाइकिल से जुलूस के साथ नारे लगाते हुए भारत की जनवादी नौजवान सभा के अंचल अध्यक्ष बबलू कुमार, पंचायत समिति सदस्य विजय कुमार, पप्पू कुमार रावत, सुनिल कुमार, अनिल कुमार, अब्दुल जब्बार मंजर, आलोक कुमार आदि के नेतृत्व में कॉ बादल सरोज को प्रशिक्षण शिविर स्थल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मिश्रौलिया पहुंचाया।

नाटक आजादी की प्रस्तुति से दर्शक हुए भावविभोर

प्रात : किरण संवाददाता

बरौनी, बेगूसराय। बाल रंगमंच आर्ट एण्ड कल्चरल सोसाइटी व भारत सरकार की संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से चल रहे 20 दिवसीय प्रस्तुति परक नाट्य कार्यकाल का समापन सोमवार की शाम हुआ। मध्य विद्यालय बीहट स्थित बाल रंगमंच परिसर में आयोजित नाट्य कार्यशाला में बच्चों ने नाटक, गीत, नृत्य, मास्क मेकिंग व अभिनय का प्रशिक्षण लिया। युवा रंगकर्मी ऋषिकेश कुमार ने बच्चों को नाटक विधा के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया। ऋषिकेश कुमार द्वारा रचित परिकल्पना व निर्देशन में बच्चों ने नाटक आजादी की प्रस्तुति दी। आजादी नाटक में बच्चों ने यह दिखाया कि अग्रजों ने हम भारत वासियों पर बहुत जुल्म किए। हमारी ही भूमि पर हमसे ही फसल का मुनाफा और मुआवजा वसूलते थे। इस अत्याचार को भारत वासियों ने अपने हक अधिकार के लिए अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आवाज उठाई। उन्हें यह देश छोड़ कर भागना पड़ा। साथ ही बच्चों ने नाटक में यह भी दिखाया कि आजाद भारत में हमें भी अपने हक अधिकार के लिए आवाज उठाने की पूरी आजादी है। आज हम अपने तरीके से गीत गा सकते हैं। खुशियाँ मना सकते हैं। अंग्रेजों की भूमिका में ऋषभ कुमार, धर्मवीर कुमार, निर्णय कुमार आर्य, आयुष कुमार, आयुष झा ,प्रिंस कुमार ने निभाई। किसान की भूमिका में आरुषि कुमारी, मुस्कान कुमारी, राधा कुमारी, शिम्पू कुमारी, कंचन कुमारी, सौरभ कुमार, प्रिंस कुमार, अंकित कुमार, सुन्नी कुमार, आर्यन, गोलू, पवन ने अपने किरदार को बखूबी से निभाया। प्रकाश प्रिकल्पना, वीजेंद्र कुमार, संगीत संयोजन- विशाल कुमार, रूप सज्जा पूर्णिमा कुमारी ने किया। नाट्य निर्देशक ऋषिकेश कुमार ने कहा कि आजादी के आंदोलन के समय किसानों की भूमिका से परिचय करवाना।

पंचायत उपचुनाव के नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों ने लिया शपथ

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत पंचायत उपचुनाव में नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों को पंचायत समिति भवन के सभागार में प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी अनुरंजन कुमार ने पद एवं गोपनीयता तथा नशा मुक्ति से संबंधित शपथ दिलवाया। जिसमें सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण के नवनिर्वाचित मुखिया ममता देवी, चकहबीब पंचायत वार्ड 05 से नवनिर्वाचित वार्ड सदस्य राजकुमार रजक, सिंघिया बुजुर्ग उत्तर वार्ड 09 से नवनिर्वाचित ग्राम कचहरी पंच नितु देवी, देशरी कर्रख वार्ड 03 से वार्ड पंच राजकुमारी देवी, टभका वार्ड 12 से पंच कंचन देवी, महिषी वार्ड 10 से पंच अजय कुमार ठाकुर, नरहन वार्ड 13 से पंच सुरेश कुमार चौधरी, खास टभका उत्तर वार्ड 12 से पंच राजेन्द्र महतो एवं वार्ड 06 से पंच अंजली देवी, विभूतिपुर पूरब वार्ड 02 से पंच राम प्रकाश महतो, आलमपुर कोदरिया वार्ड 04 से पंच नूतन देवी, सुरौली वार्ड 06 से पंच सरिता कुमारी ने उपस्थित होकर पद एवं गोपनीयता तथा नशामुक्ति से संबंधित शपथ ग्रहण किया। मौके प्रखंड कृषि पदाधिकारी हिमांशु कुमार, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी चंदन कुमार, आदि मौजूद थे।

आ गया मानसून ,अगले 2-3 दिनों में बरसेंगे बादल

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। बिहार के उत्तर-पूर्वई भाग में मानसून का आगमन हो चुका है। अगले दो -तीन दिनों में यह उत्तर बिहार के सभी जिलों में सक्रिय हो जाएगा।आसमान में बादल छाए रहेंगे और बर्षा होने की सम्भावना है। ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग एवं जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने 14 से 18जून तक के लिए मौसम पूवार्नुमान जारी किया है। पूवार्नुमान के अनुसार , कुछ स्थानों पर अच्छी बर्षा होने की सम्भावना है ।हालांकि कुछ जिलों में हीट बेव की स्थिति अगले 2-3 दिनों तक बनी रह सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 30--40 डिग्री के बीच रह सकता है ।न्यूनतम तापमान 24-26डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। मौसमीय वेधशाला पूत्ता के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमश 38.8 एवं 25.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 79 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 45 प्रतिशत, हवा की औसत गति 68 किमी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 7.5 मिमी तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 97 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 31.7 एवं दोपहर में 44.1 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा। पूवार्नुमानित अवधि में औसतन 10 से 14 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। समसामयिक सुझाव जिन किसानों के पास सिंचाई की सुविधा प्राप्त हो तथा लम्बी अवधि वाले धान लगाना चाहते है,वे राजेन्द्र मंसुरी राजेन्द्र श्वेता, किशोरी व बीटी-20134 एवं आदि किस्में तत्काल बीजस्थली में गिराने का प्रयास करें।

बिना भंसार के प्रवेश किए भारतीय स्कॉर्पियो नेपाल में जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। तुम करो तो रास लीला और हम करे तो कैरेक्टर ढीला, ये कहानी भारत से सटे नेपाल सीमा में देखने को बराबर मिलता है। अगर नेपाली लोग, प्रशासन और वाहन भारत आए और जो मर्जी करे।

चाहे तो वाहन सड़क पर लगाए, चाहे तो कितनी दूर निकल जाते, तो ये आम बात है और भारतीय लोगों से महज थोड़ी सी गलती हो जाए तो इसकी जुमार्ना आप भरने के लिए तैयार रहिए। ताजा मामला के अनुसार फिर एक बार एक भारतीय नंबर की स्कॉर्पियो को नेपाल पुलिस ने जब्त कर लिया है। उसकी गलती यही थी कि भंसार अथवा इंट्री नही कराया था। हालांकि ये नियम नेपाल में सही है, लोगों को कराना चाहिए था, परंतु इसका मतलब ये नही कि इस गाड़ी को तत्काल जब्त कर लें या अन्य बड़ी कार्रवाई करें, इसका निदान है कि उससे एक बड़ी जुमार्ना लें, रशीद दें और जाने दें।

खैर ये उनकी कानून है, इसमें हमारी हस्तक्षेप उचित नहीं है, परंतु मित्र राष्ट्र होने के नाते कुछ रियायत होनी चाहिए। एक ताजा मामला के अनुसार बारा के सशस्त्र प्रहरी ने सिमरौनगढ़ नगरपालिका-1 बिरेंद्र चौक से एक ऐसे स्कॉर्पियो को अपने नियंत्रण में लिया है, जो बिना भंसार के नेपाल में प्रवेश कर गया था। उक्त वाहन बैरिया से सिमरौनगढ़ तरफ जाने के क्रम में 26 बीबी 0040 नंबर की स्कॉर्पियो को पकड़ा गया। उक्त गाड़ी को अग्रतर कार्रवाई के लिए बीरगंज कस्टम कार्यालय में भेजा गया है। उक्त जानकारी डीएसपी शैलेंद्र थापा ने जानकारी दी।

पत्रकारों-साहित्यकारों ने कवि आलोक भारती को दी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की मधुबनी जिला इकाई द्वारा जिले के चर्चित साहित्यकार आलोक भारती बजरंग अग्रवाल को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्व. आलोक भारती जयनगर नगर पंचायत क्षेत्र के वार्ड संख्या 07 के निवासी थे और शहर में ही महावीर चौक पर उनका व्यवसायिक प्रतिष्ठान है। वे भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ मधुबनी जिला इकाई के संरक्षक भी थे। इसके अतिरिक्त वे कई साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े थे जानकी देवी गौरी शंकर सर्राफ महिला महाविद्यालय में आयोजित इस श्रद्धांजलि सभा में दर्जन भर पत्रकारों-साहित्यकारों ने उपस्थित होकर उन्हें याद किया और उनकी कृतियों की चर्चा की उनके योगदानों को बताये। उपस्थित लोगों ने उनके साथ जुड़े यादों को साझा भी किये। वरिष्ठ साहित्यकार और साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता डॉ. कमलकांत झा ने बताया कि आलोक भारती(बजरंग अग्रवाल) जी के साथ मेरा छह दशकों का साहित्यिक सम्बन्ध था। वहीं साहित्यकार नारायण यादव ने उनके साथ किये गए साहित्यिक यात्राओं की चर्चा की। संगठन के राष्ट्रीय प्रकाशन सचिव प्रो. जगदीश प्रसाद यादव ने उन्हें याद करते हुए कहा कि वे हमेशा नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करते थे। सामाजिक कार्यकर्ता और साहित्यकार धर्मेंद्र भारद्वाज उपाख्य बौआ झा ने उन्हें अपना अभिभावक तुल्य बताया। सुभाष सिं

संक्षिप्त खबरें

दरवाजे पर बैठी महिला को मारपीट कर काट ली उंगली, प्राथमिकी दर्ज

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के चकरवा खास गांव में अपने घर के दरवाजे पर बैठी एक महिला को कुछ लोगों ने पहले गाली गलौज की बाद में घर में घुसकर उसके साथ मारपीट की। इस दौरान चाकू से उसकी उंगली काट ली गई। मामले को लेकर पीड़िता के बयान पर पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर छानबीन में जुट गई है। बताया जाता है कि चकरवा खास गांव के कमलेश्वर राय की पत्नी पूनम देवी अपने घर के दरवाजे पर बैठी थी कि तभी उसी गांव के श्रीकांत भगत, राम आशीष भगत, कलश कुमारी, रेनू कुमारी सहित छह लोग आए और गाली गलौज करने लगे जब उसने गाली गलौज करने से मना किया, तो उक्त लोगों ने अपने हाथ में लिए हथियार से मारपीट कर जख्मी कर दिया। इस दौरान चाकू लगने से उसकी एक उंगली कट गई। इस मामले को लेकर पीड़िता के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है।

पानी गिरने से मना करने पर हुई मारपीट में युवती घायल

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के रकबा गांव में पानी गिराने से मना करने पर एक युवती को मारपीट कर जख्मी कर दिया गया। मामले में युवती के दादा ने स्थानीय थाने में सात लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। बताया जाता है कि रकबा गांव के मुल्तान मियां की पोती रजिया खातून अपने पड़ोसियों को अपनी जमीन में पानी गिराने से मना करने गई, तो उसे उसी गांव के खुदादीन मियां, शरफुद्दीन मियां, अमर अली सहित सात लोगों ने मारपीट कर जख्मी कर दिया।

अनियंत्रित पिकअप पलटने से चार नतर्की सहित छह घायल

गोपालगंज। जिले के कुचायकोट थाना क्षेत्र के करमैनी ढाला के समीप एक पिकअप पलटने से पिकअप पर सवार चार नतर्की सहित छह लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास के लोगो की मदद से घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां चिकित्सकों ने एक नतर्की की हालत को नाजुक देखते हुए बेहतर इलाज के लिए गोरखपुर रेफर कर दिया। घायलों में कोलकाता की रहने वाली काजल अधिकारी, अनुष्का मिश्रा, मधु कुमारी और अंजली कुमारी के अलावा दो मासूम सायन और सपना कुमारी शामिल हैं। ये नर्तकियां कुचायकोट थाना क्षेत्र के सासामुसा के पास रहकर आर्केस्ट्रा में काम करती हैं।

मारपीट की घटनाओं में पांच लोग घायल

गोपालगंज। जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र में आपसी विवाद को लेकर हुई मारपीट की अलग-अलग घटनाओं में पांच लोग घायल हो गए। घायलों में दुबौली गांव के दोस्त महम्मद, कतालपुर के रिहत हैदर, बैकुंठपुर के विशाल कुमार, महेश राय व चमनपुरा के नरेश राय शामिल हैं। घायलों को इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सीएचसी में आशा कार्यकताओं को दी गई ट्रेनिंग

बैकुंठपुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मंगलवार को आशा कार्यकताओं को एक दिवसीय ट्रेनिंग दी गयी। हेल्थ मैनेजर कमरान अहसन ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान आशा कार्यकताओं को आंगनबाड़ी केंद्र व हेल्थ सब सेंटरों पर नियमित टीकाकरण से संबंधित जानकारी दी गयी। गर्भवती महिलाओं की देखभाल व नवजात शिशु के टीकाकरण से संबंधित निर्देश दिया गया।

गंडक नदी के दियारे में चलाया गया सर्च अभियान

गोपालगंज। जिले के बैकुंठपुर थाने की पुलिस ने मंगलवार की सुबह गंडक नदी के तटवर्ती इलाके में सर्च अभियान चलाया। चुलाई शराब बरामदगी को लेकर चलाए गए अभियान के तहत सैकड़ों लीटर अर्धनिर्मित शराब नष्ट किया गया। थानाध्यक्ष धनंजय राय ने बताया कि छापेमारी की भनक मिलते ही धंधेबाज दियारा छोड़कर फरार हो गए।

डीएम के आदेश पर बंद किए गए स्कूल व आंगनबाड़ी केंद्र

गोपालगंज। जिले के बैकुंठपुर प्रखंड में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र व निजी विद्यालय मंगलवार से बंद कर दिए गए। बीडीओ अशोक कुमार ने बताया कि भीषण गर्मी की स्थिति को देखते हुए 18 जून तक सभी शिक्षण संस्थानों को बंद करने का निर्देश मिला था। बीडीओ ने बताया कि निर्देश के बावजूद निजी विद्यालय का संचालन करने की स्थिति में कार्रवाई की जाएगी।

तत्काल टिकट के लिए काउंटर पर भटक रहे रेलयात्री

गोपालगंज। थावे-मशरक रेलखंड के दिघवा दुबौली रेलवे स्टेशन पर तत्काल टिकट के लिए यात्री भटक रहे हैं। लंबी दूरी की एक्सप्रेस व सुपरफास्ट ट्रेनों में जुलाई तक नो रुम की समस्या बरकरार है। ऐसे में तत्काल टिकट के लिए काउंटर पर भीड़ उमड़ रही है। महज चार से पांच यात्रियों का ही तत्काल टिकट निकल पा रहा है। अन्य यात्रियों को बैरंग लौटना पड़ रहा है।

फुलवरिया में महागठबंधन के प्रखंड अध्यक्षों ने धरना को लेकर किया बैठक

भाजपा की 9 साल की शासन के विरुद्ध 15 जून को होगा धरना प्रदर्शन

फुलवरिया प्रात : किरण संवाददाता

सुबे के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के गृह प्रखंड के परिसर में आगामी 15 जून को एक दिवसीय महागठबंधन के सभी दलों की ओर से भाजपा के विरुद्ध धरना प्रदर्शन का आह्वान किया गया है। इसको लेकर मंगलवार को माड़ीपुर बाजार स्थित पैक्स गोदाम के समीप महागठबंधन के प्रखंड अध्यक्षों ने एक विशेष बैठक आयोजित किया। जिसकी अध्यक्षता राजद युवा जिलाध्यक्ष संतोष यादव एवं जदयू जिला उपाध्यक्ष मनोज पासवान ने संयुक्त रूप से किया। बैठक में राजद प्रखंड अध्यक्ष प्रोफेसर अली अकबर अंसारी, सीपीआईएमएल के प्रखंड अध्यक्ष श्रीराम शर्मा, सीपीआईएम प्रखंड अध्यक्ष सफी अहमद, जदयू प्रखंड अध्यक्ष लाल बाबूराम तथा कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष जटाशंकर सिंह सहित अन्य पार्टी के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता शामिल रहे। जिलाध्यक्ष संतोष यादव ने कहा मोदी शासन के 9 साल में जनता की चरम तबाही-बबार्दी, लूट-दमन और नफरत का भयावह दौर साबित हुआ है। महंगाई की मार से जनता त्रस्त हैं। भाजपा सरकार जो खाद पदार्थों से लेकर पाठ्य पुस्तकों व सामग्री पर भी टैक्स जीएसटी लगा रही है। रसोई गैस की कीमत 13 सौ रुपए प्रति सिलेंडर पार कर गई। लोग पुनः गोईठा व लकड़ी के युग में लौटने को विवश हो गए, उज्जवला योजना के नाम पर गरीबों को मूर्ख बनाया। प्रत्येक साल दो करोड़ रोजगार का वादा भी पूरी तरह से झूठ साबित हुआ। जदयू के जिला उपाध्यक्ष मनोज पासवान ने कहा कि 2024 में भाजपा के वापस लौटने का मतलब होगा संविधान और लोकतंत्र का खात्मा। आरक्षण व्यवस्था की समाप्ति। भाजपा सरकार को आने वाले चुनाव में सत्ता से बाहर कर देना ही देश की जनता और लोकतंत्र व अमन पसंद नागरिकों का पहला कार्यभार होना चाहिए।

जातीय गणना, महंगाई बेरोजगारी। संवैधानिक संस्थाओं के दुरुपयोग, किसानों की आय दोगुनी करने, उन्माद-उत्पाद की राजनीति पर रोक, दलित गरीबों की आवास एवं खाद्य योजना बंद करने की साजिश, बिहार को विशेष राज्य का दर्जा जैसे जैसे तमाम सवालों को लेकर आगामी 15 जून को महागठबंधन के बैनर से धरना प्रदर्शन किया जाएगा। बैठक के बाद राजद युवा जिलाध्यक्ष संतोष यादव के नेतृत्व में सभी अध्यक्षों ने बीडीओ अजीत कुमार रोशन को एक ज्ञापन सौंपा। मौके पर आरजेडी प्रखंड महासचिव सोनू सिंह उर्फ विकास सिंह, अभिषेक कुमार अभय, विकास कुमार सहित काफी संख्या में महागठबंधन के प्रखंड स्तरीय नेता उपस्थित रहे।

रक्तदान दिवस पर आज होगा शिविर का आयोजन

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

स्वस्थ महिला स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ बिहार को लक्ष्य मानकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रही समाजसेवी संस्था ह्मनीषा वेलनेस केयर फाउंडेशनह्व के तत्वाधान में आज विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर तपस्या फाउंडेशन द्वारा संचालित, तपस्या ब्लड सेंटर गोपालगंज के प्रांगण में एक दिवसीय स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। ह्मनीषा वेलनेस केयर फाउंडेशनह्व की चेयरपर्सन स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. मनीषा ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर हमारी संस्था द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान का आयोजन किया गया है, जिसमें दर्जनों युवक एवं युवती स्वैच्छिक रक्तदान कर मानव सेवा का संकल्प लेंगें। डॉ. मनीषा ने बताया कि जिले मे महिलाओ को रक्तदान के प्रति जागरूक करने के लिए हमारी संस्था प्रखंडवार सेमिनार का आयोजन कर ग्रामीण क्षेत्र के महिलाओ को भी रक्तदान हेतु प्रेरित करेगी। उन्होंने बताया कि रक्तदान को लेकर जो भी भ्रांतियां समाज में फैली हुई हैं, उस भ्रांतियों को तोड़कर जनमानस को सेवा भाव से रक्तदान के प्रति जागरूक होना ही समाज सेवा का मूल कर्तव्य है। डॉ मनीषा के अनुसार गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को रक्त के अभाव में हीमोग्लोबिन की कमी हो जाती है जिस वजह से प्रसव के दौरान प्रसूती को रक्त की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए समाज के जागरूक महिलाओं को रक्तदान हेतु आगे आकर रक्त की पूर्ति हेतु स्वैच्छिक रक्तदान पर बल देना चाहिए। रक्त के पूर्ति को समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता लाकर ही पूर्ति किया जा सकता है।

पहले बनाया अवैध संबंध, अब कर रही थी अनदेखा, नाराज प्रेमी ने उतारा मौत के घाट

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

जिले के थावे थाने के गवंदरी गांव में महिला की चाकू मारकर निर्मम हत्या किए जाने के मामले का पुलिस ने 24 घंटे के अंदर खुलासा कर लिया है। इस मामले में चैंकाने वाला खुलासा हुआ है। महिला की हत्या प्रेमी को अनदेखा करने व दुसरे से अवैध संबध को लेकर की गयी है। इसकी जानकारी मंगलवार को कलेक्ट्रेट परिसर में प्रेसवार्ता के दौरान एसपी स्वर्ण प्रभात ने दी। उन्होंने बताया कि आरोपी सुदामा साह और विवाहिता के बीच काफी समय से अवैध संबध चल रहा था। इधर कुछ दिनों से महिला का एक अन्य युवक से अवैध संबध स्थापित हो गया था जिसके कारण महिला आरोपी को अनदेखा कर रही थी। इसी बात से नाराज आरोपी ने महिला को बुलाया और चाकू गोदकर मौत के घाट उतार दिया। गौरतलब हो कि थावे थाने के गंवदरी गांव में रविवार की सुबह एक महिला की चाकू गोदकर निर्मम हत्या कर दी गयी थी। हत्या के बाद सदर एसडीपीओ प्रांजल के नेतृत्व में एसआइटी का गठन किया गया था। गठित एसआइटी ने 24 घंटे के अंदर हत्या में शामिल सुदामा साह को गिरफ्तार कर लिया। इसके साथ ही पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी के कब्जे से हत्या में इस्तेमाल की गई चाकू व मृतका का मोबाइल भी बरामद कर लिया। एसपी ने बताया कि गंवदरी गांव की बबिता देवी का गांव के ही सुदामा साह से काफी समय से प्रेम प्रसंग व अवैध संबध चल रहा था। इसी बीच महिला का एक अन्य व्यक्ति से अवैध संबध स्थापित हो गया और वह सुदामा साह का अनदेखा करने लगी। इसी बात से नाराज सुदामा साह ने रविवार की सुबह महिला बबिता देवी को फोन कर बुलाया और चाकू गोदकर मौत के घाट उतार दिया। वारदात के पंहुची पुलिस ने साक्ष्यों व अनुसंधान के क्रम में मोबाइल की जांच करते हुए हत्या में शामिल उसके प्रेमी सुदामा साह को गिरफ्तार कर लिया। प्रेमी सुदामा साह की गिरफ्तारी के बाद हत्या का राज खुल गया। पुलिस ने इनकी निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल चाकू व मृतका का मोबाइल बरामद कर लिया। गठित एसआइटी में सदर एसडीपीओ प्राजंल के अलावे सदर इंस्पेक्टर हीरालाल प्रसाद, थावे थानाध्यक्ष शशिरंजन कुमार सहित अन्य शामिल थे।

रंगदारी को लेकर दुकानदार पर जानलेवा हमला, प्राथमिकी दर्ज

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के बेलवां मित्र गांव में पांच लाख रुपए की रंगदारी नहीं देने पर 10 लोगों ने एक दुकानदार पर जानलेवा हमला कर दिया। जिसमें वे गंभीर उसे जख्मी हो गए। जिन्हें भोरे रेफरल अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां से डॉक्टरों ने गंभीर स्थिति में गोपालगंज के लिए रेफर कर दिया। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के बेलवा मिश्र गांव के दीपू पांडेय ने गांव में ही एक किराने की दुकान खोल रखी है। दीपू पांडेय से 5 दिन पहले से ही पांच लाख की रंगदारी मांगी जा रही थी। जिसे वे एक मजाक समझ रहे थे। उन्होंने जैसे ही अपनी दुकान खोली थी, तभी पांच बाइक पर सवार 10 लोग वहां पहुंचे और उन पर अपने हाथ में लिए हथियारों से हमला कर दिया। इस हमले में बुरी तरह जख्मी हो गए। इस दौरान हमलावरों ने काउंटर में रखे 30000 और पीड़ित के गले से सोने की चेन छीन ली। तत्काल ही आसपास के लोगों ने उन्हें उठाकर स्थानीय अस्पताल पहुंचा दिया। जहां से डॉक्टरों ने उन्हें गंभीर स्थिति में गोपालगंज के लिए रेफर कर दिया। वहीं दीपू पांडेय के फर्द बयान के आधार पर पांडेय चकिया गांव के अतुल ओझा, तनु ओझा, हिमांशु पांडेय सहित सात अज्ञात लोगों के खिलाफ जानलेवा हमला, रंगदारी का आरोप लगाकर प्राथमिकी दर्ज की गई है।

श्यामपुर गांव में अगलगी में तीन लाख की संपत्ति जलकर राख

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जिले के महम्मदपुर थाने के श्यामपुर गांव में सोमवार की देर रात अचानक आग लगने से हीरा मांझी का घर जलकर राख हो गया। अगलगी में नगदी, कपड़ा, बर्तन, अनाज, फर्नीचर सहित करीब तीन लाख रुपए मूल्य की संपत्ति जलने का अनुमान है। घटना के संबंध में बताया गया कि हीरा मांझी के परिजन रात में खाना खाकर सो रहे थे। देर रात आग की तेज लपटें निकलने लगी। आग की भयावह स्थिति को देखते हुए आसपास के लोग भी अपने-अपने घरों से सामान खाली करने लगे। घटना की सूचना महम्मदपुर थाने को दी गयी। सूचना मिलने के बाद महम्मदपुर थाने से अग्निशमन की गाड़ी श्यामपुर गांव पहुंची। फायर बिग्रेड टीम व ग्रामीणों के घंटों प्रयास के बाद आग पर काबू पाया गया। लेकिन संपत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं बच पाया। पीड़ित परिजनों ने अगलगी की सूचना बैकुंठपुर के सीओ पंकज कुमार को दी। सीओ ने बताया कि घटनास्थल पर जांच के लिए राजस्व कर्मचारी को भेजा गया है। जांच रिपोर्ट मिलने के बाद पीड़ित परिवार को मुआवजा उपलब्ध कराने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। भाजपा के मंडल अध्यक्ष रामनरेश सिंह ने अग्नि पीड़ितों से मिलकर उन्हें आर्थिक सहायता दी। अग्निपीड़ितों को तत्काल सरकारी स्कूल में रहने के लिए प्रधानाध्यापक से अनुमति ली गयी।

गोपालगंज में अंतरराज्यीय पशु तस्कर गिरोह के 6 सदस्य गिरफ्तार

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

गोपालगंज पुलिस ने मवेशियों की अवैध तरीके से अंतरप्रांतीय तस्करी करने वाले एक गिरोह का खुलासा किया है। पुलिस ने मंगलवार सुबह मवेशियों से लदे तीन वाहनों को जब्त किया है, जिसमें गाय, बछड़े सहित कुल 45 पशुओं को लादकर तस्करी के लिए ले जाया जा रहा था। पुलिस ने पशु तस्कर, चालक और वाहन मालिकों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। वहीं छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इसकी जानकारी देते हुए एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि प्रशिक्षु डीएसपी सह कुचायकोट थानाध्यक्ष साक्षी राय को गुप्त सूचना मिली थी कि पशु तस्कर यूपी से पशुओं की खेप लेकर बिहार के रास्ते तीन वाहनों में मवेशियों को भरकर ले जाने वाले हैं। सूचना के आधार पर पुलिस ने सासामुसा दाहा नदी पुल के समीप वाहनों की चेकिंग शुरू कर दी। चेकिंग के दौरान तीन वाहनों को संदेह के आधार पर रोका और वाहन चालक से पूछताछ की लेकिन वाहन चालक ने कोई संतोषजनक जबाव नहीं दिया। उसके बाद पुलिस ने वाहन की तलाशी ली। वाहन में लदे मवेशी, बछड़ा से संबधित कोई वैध कागजात नहीं प्रस्तुत किए जाने पर पुलिस ने तीनों वाहन के चालक और वाहन में सवार लोगो को हिरासत में लिया। गिरफ्तार किए गए आरोपी गोपालपुर थाना क्षेत्र के अहिरौली दुबौली गांव के अरमान अली, उचकागांव थाने के नवादा परसौनी गांव के अरमान आलम,नवादा गावं के क्यामुदीन, यूपी के शामली जिले के लपराना गाजरा गांव के पुष्पेद्र, जौनपुर जिले के साहगंज थाने के कोहडा गावं के सावन कुमार और अनुराग कुमार बताए गए है। पुलिस गिरफ्तार तस्करों से पूछताछ करने में जुटी हुयी है।

कई राज्यों में फैला है पशु तस्करों का सिंडिकेट

पशु के कारोबारी का सिंडिकेट पश्चिम बंगाल, बिहार और झारखंड के कई जिलों तक फैला हुआ है। पशुओं के अवैध कारोबार का कनेक्शन बिहार, झारखंड और बंगाल के रास्ते बंगाल और बांग्लादेश तक है। बिहार के गोपालगंज, सीवान, बक्सर, गया, नवादा और बरबीघा की मंडिओं से छोटे-छोटे पशु व्यापारी मवेशियों को खरीदकर छोटे-छोटे हाट पर पहुंचाते हैं। मांझा के कोइनी व अन्य जगहों पर पशुओं की हाट लगती है। वहां से तस्करों द्वारा ट्रक के माध्यम से पशु बंगाल ले जाया जाता है। फिर उसे बांग्लादेश पहुंचाया जाता है।

फुलवरिया में बीडीओ ने दिलायी मुखिया, वार्ड व पंच प्रतिनिधियों को शपथ

त्रिस्तरीय उपचुनाव में जीते प्रतिनिधियों ने शपथ के बाद कार्य की कही बात

फुलवरिया प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया प्रखंड मुख्यालय के सभागार में मंगलवार को त्रिस्तरीय पंचायत उपचुनाव में जीते प्रत्याशियों ने शपथ लिया। शपथ ग्रहण के दौरान बीडीओ सह निवार्ची पदाधिकारी अजित कुमार रौशन ने सर्वप्रथम ग्राम पंचायत राज चुरामन चक के मुखिया प्रत्याशी गया कुमार सिंह को विधि सम्मत संविधान के अनुसार कार्य करने का पद व गोपनीयता की शपथ दिलायी। इसके बाद निर्विरोध निर्वाचित हुए ग्राम पंचायत राज गिदहाँ के वार्ड संख्या 13 के वार्ड सदस्य नंद मांझी को पंचायत के मुखिया अशोक साह ने शपथ दिलायी। वही ग्राम पंचायत राज गणेश डूमर के ग्राम कचहरी के पंच राम जनक साह को सरपंच चंद्रमा राम ने शपथ दिलायी। इसकी जानकारी देते हुए बीडीओ सह निवार्ची पदाधिकारी अजीत कुमार रोशन ने बताया कि प्रखंड में उपचुनाव को लेकर 3 पंचायतों में ग्राम पंचायत राज चुरामन चक में मुखिया पद, गीदहाँ पंचायत से वार्ड सदस्य पद तथा गणेश डूमर पंचायत वार्ड संख्या 14 से ग्राम कचहरी के पंच पद के चुनाव में जीते उक्त प्रत्याशियों को शपथ दिलाई गई। मौके पर सीओ खुशबू खातून, बीएओ आनंद ठाकुर, सीडीपीओ पुष्पराज हिमांशु, पीओ अमरेंद्र प्रताप सिंह तथा वरिष्ठ शिक्षक चंद्रिका बैठा के अलावा अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

फुलवरिया में बीडीओ ने मुखिया प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर दी दिशा निर्देश

फुलवरिया प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया प्रखंड मुख्यालय के सभागार में मंगलवार को बीडीओ अजीत कुमार रोशन की अध्यक्षता में एक विशेष बैठक आयोजित की गई। जिसमें सीओ खुशबू खातून, सीडीपीओ पुष्पराज हिमांशु, पीओ अमरेंद्र प्रताप सिंह, बीएओ आनंद ठाकुर तथा बीईओ रत्ना घोष के अलावा अन्य विभागों के अधिकारी व प्रखंड के सभी पंचायतों के मुखिया जनप्रतिनिधि बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। बैठक में बीडीओ श्री रोशन ने आगामी 16 जून को प्रखंड मुख्यालय परिसर में मोबाइल लोक अदालत के आयोजन को लेकर प्रचार प्रसार करने को लेकर दिशा-निर्देश दी। आगामी 28 जून को जिला पदाधिकारी द्वारा प्रखंड व पंचायतों की जांच को लेकर कई हिदायत जनप्रतिनिधियों को दी गई। इसके अलावा बाढ़ व उखाड़, साथ ही प्रखंड व पंचायत स्तर पर अनुश्रवण समिति का गठन सहित 5 बिंदुओं को लेकर अधिकारियों से लेकर जनप्रतिनिधियों को बीडीओ श्री रोशन ने दिशा निर्देश दिया है। बीडीओ श्री रोशन ने कहा कि इस कार्य में लापरवाही बरती जाती है तो कार्रवाई तय है। जिसकी जवाबदेही अधिकारी कर्मी व जनप्रतिनिधि खुद होंगे। बैठक में मुखिया फिरोज अंसारी, अल्ताफ हुसैन, अशोक साह, दिनेश कुमार साहू, गुलाम रसूल कप्तान, आनंद मोहन राय, दिलीप बैठा, महंथ पंडित के अलावे सभी विभागों के अधिकारी व पंचायतों के मुखिया जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

बंगरा निवासी संजय हत्याकांड में चार लोगों पर प्राथमिकी दर्ज

गोपालगंज। जिले के बैकुंठपुर थाने के कृतपुरा बंगरा गांव में 22 वर्षीय युवक संजय कुमार साह के फंदे से शव लटकने के मामले में चार लोगों के खिलाफ हत्या की प्राथमिकी दर्ज की गयी है। प्राथमिकी मृत युवक के बड़े भाई रोहित कुमार ने दर्ज करायी है। जिसमें संतोष राम, दिलीप राम, उपेंद्र राम व अर्जुन कुमार को नामजद किया गया है। आरोप है कि चारों आरोपित अन्य लोगों के साथ हत्या की घटना को अंजाम दिए हैं। घटना में शामिल आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। लेकिन दूसरे दिन भी आरोपितों की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। दर्ज प्राथमिकी में रोहित कुमार ने कहा है कि उसकी चचेरी बहन पूजा की शादी हो रही थी। जयमाला के दौरान कुछ लोग मनपसंद गाना के लिए दबाव बना रहे थे। पनपसंद गाना का संजय ने इसका विरोध किया। विरोध करने के दौरान संजय के साथ मारपीट करने की कोशिश की गयी। लेकिन बीच-बचाव कर मामला शांत करा दिया गया। जयमाला के दौरान संजय अचानक गायब हो गया। कुछ देर बाद परिजनों को जानकारी मिली कि सतदेव राम के घर फंदे से संजय लटक रहा है।

नगर आयुक्त ने सफाई कर्मियों के हित में बेहतर कार्य किया

छपरा। नगर आयुक्त के पदस्थापन के बाद से हीं नगर निगम में व्यापक रूप से सफाई कार्य और सफाई कर्मियों के हित में अनेकों कार्य किया गया। पहली बार नगर आयुक्त ने सफाई कर्मियों के साथ सफाई स्थल पर ही आपस मे समनव्य स्थापित कर सफाई कर्मी की आवश्यक संसाधन की मांग और उनको संसाधन की आपूर्ति की गयी। नगरआयुक्त सुमित कुमार ने सभी सफाई कर्मियों के साथ चाय का भी आनंद उठाया। बता दें कि नगर आयुक्त के पदस्थापन होते हीं खासकर सफाई कर्मियों के हित में अनेकों कार्य किए जो नगर निगम में आज तक नहीं हो पाया था। उन्होंने सफाई कर्मियों के हित में 11 ऐसे कार्य किए हैं जो उनके लिए अति आवश्यक था। उन्होंने सफाई कर्मियों को भी आवश्यक संसाधन एवं उपकरण उपलब्ध कराया गया। जबकि सफाई कर्मियों के लिए इपीएफ की सुविधा के लिए नगर निगम मे विशेष कैंप आयोजन कर उसका निवारण किया गया। चैथा कार्य -सफाई कर्मियों के लिए हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया। पांचवा सफाई कर्मियों का मानदेय का भुगतान मे बढ़ोतरी की गई। सफाई कर्मियों के हित में छठा कार्य मानदेय का भुगतान पहली तारीख से 10 तारीख के बीच भुगतान करने का निर्णय लिया गया। सातवा कार्य -सफाई कर्मियों का भुगतान सीधे ट्रेजरी के माध्यम से किया गया। आठवां -सफाई कर्मियों के लिए वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम नगर निगम में आयोजन किया गया। वम कार्य - सफाई कर्मियों के साथ नगर आयुक्त ने हाथ मिलाकर उनका अभिवादन किया। दसवा- सफाई कर्मियों की प्रतिनियुक्ति उन्हीं के वार्ड में कर दी गई।

चिन्हित एकल उपयोग प्लास्टिक पर लगाये गये प्रतिबंध को सख्ती से करें लागू: डीएम

छपरा। जिलाधिकारी सह-अध्यक्ष, जिला स्तरीय विशेष टास्क फोर्स, सारण, छपरा की अध्यक्षता में एकल उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने हेतु गठित जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक कार्यालय कक्ष में आहूत की गयी। जिलाधिकारी के द्वारा बैठक में संबोधन के दौरान निदेश दिया गया कि चिन्हित एकल उपयोग प्लास्टिक पर लगाये गये प्रतिबंध को सख्ती से लागू करें। वन प्रमंडल पदाधिकारी-सह-सचिव, जिला स्तरीय विशेष टास्क फोर्स, सारण, छपरा द्वारा बैठक में उपस्थित सदस्यों को बताया गया कि एकल उपयोग प्लास्टिक (एस.यू.पी.) के अंतर्गत ईयर बड्स की डंडियों, गुब्बारों की प्लास्टिक की डंडियाँ प्लास्टिक के झंडे, कैन्डी स्टिक, आईसक्रीम के प्लास्टिक के इंडिया पॉलीस्टाइरीन (थर्मोकॉल) की सजावटी सामग्री, प्लेट, कप, गिलास, तथा कटलरी जैसे कोटा चम्मच, चाकू, स्ट्रॉ, टू, स्टिटर, मिठाई के डब्बे, निमंत्रण कार्ड और सिगरेट पैकेट के इर्द-गिर्द लपेटने या पैक करने वाली प्लास्टिक की फिल्मे 100 माईक्रोन से कम

मोटाई वाले प्लास्टिक या पी.वी.सी. के बैनर तथा गैर बुना हुआ प्लास्टिक कैरी बैग 60 ग्राम प्रति वर्ग मीटर (जी.एस.एम.) से कम नहीं का उपयोग प्लास्टिक अपशिष्ट नियमावली 2021 के तहत दिनांक 01.07.2022 से प्रतिबंधित किया गया है। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय गये। इसमें जिला स्तरीय विशेष टास्क फोर्स का नियमित अंतराल पर बैठक आयोजित किया जाना शामिल है। जिला पदाधिकारी, सारण, छपरा द्वारा प्रत्येक माह में नियमित रूप से बैठक आयोजित करने का निदेश दिया गया तथा बैठक में सभी संबंधित अधिकारियों को प्रतिवेदन के साथ बैठक में उपस्थित रहने की हिदायत भी दी गयी। जिला पदाधिकारी, सारण द्वारा सभी सरकारी कार्यालयों में एकल उपयोग के प्लास्टिक उत्पादों एवं किसी प्रकार के गैर-विघटनीय उत्पादों का उपयोग नहीं किये जाने का निदेश दिया गया। बैठक में उपस्थित जिला स्तरीय टास्क फोर्स के सभी सदस्यों को एकल प्लास्टिक उपयोग पर प्रतिबंध लगाने हेतु अपने-अपने स्तर से व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार करने का निदेश दिया गया।

नगर निकाय के अपशिष्ट संग्रहण वैन व वाहन से माईकिंग कर एस.ओ.पी. के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने हेतु जागरूकता पैदा करने के लिए निदेशित किया गया। साथ ही जिला शिक्षा पदाधिकारी, सारण को विद्यालयों में एवं जिला पंचायती राज पदाधिकारी, सारण को अपने स्तर से ग्रामीण क्षेत्र में एस.यू.पी. के उपयोग पर लगाये गये प्रतिबंध पर बच्चों एवं आम जनता के बीच जागरुकता पैदा करने के लिए प्रचार-प्रसार कराने का निदेश दिया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा अनुमण्डल पदाधिकारी, सदर, छपरा, सोनपुर, मढ़ौरा एवं अनुमण्डल पुलिस अधिकारी, सदर, छपरा, सोनपुर, मढ़ौरा को निरंतर छापेमारी करने का निदेश दिया गया।

पागल कुत्ते ने 15 लोगों को काटा सीएचसी में भर्ती

गोपालगंज। पिछले 24 घंटे के दौरान पागल कुत्ते ने 15 लोगों को काटकर जख्मी कर दिया है। जख्मी लोगों में बच्चों की संख्या अधिक बतायी जा रही है। जख्मी लोगों में रेवतिथ गांव की रोशनी कुमारी, मडई साह, कमल किशोर सिंह, सद्दाम हुसैन, दीपक कुमार, सिरसा गांव के झगरू महतो, ममीना खातून, मानपुर के कैलाश राम, हरपुर जान गांव के पवन कुमार, बेलसर की प्रीति कुमारी, चमनपुरा के रामबच्चन राय, भगवानपुर के विशाल कुमार, बिजुलपुर गांव के निर्मल ठाकुर शामिल हैं। पीड़ितों को इलाज के लिए मंगलवार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। अस्पताल प्रभारी डॉ अनिल कुमार सिंह ने बताया कि ओपीडी में जख्मी लोगों का इलाज डॉ मनीष कुमार ने किया। उसके बाद इमरजेंसी वार्ड में मरीजों को एंटी रेबीज इंजेक्शन लगायी गयी। इलाज के बाद जख्मी लोगों की स्थिति सामान्य बतायी गयी। सुबह पांच बजे से दोपहर बाद तक एक-एक कर पागल कुत्ते के काटने से जख्मी लोगों के अस्पताल आने का सिलसिला जारी रहा। देर शाम तक जख्मी लोगों की संख्या बढ़ने की संभावना जतायी जा रही है।

सम्पादकीय

लगातार हारने की चैंपियन

क्रिकेट की टीम इंडिया ने लगातार छठी बार बड़े टूनार्मेंट का फाइनल हारा है। विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 209 रनों से करारी पराजय दी है। खेल में हार-जीत चिंता का सबब नहीं होना चाहिए, लेकिन पराजय ही जब मनोवृत्ति बन जाए और टीम विश्व कप तथा वैश्विक मैचों में पराजय की सोच के साथ ही उतरने लगे, तो कईतरफा सवाल उठने लगते हैं। करोड़ों रुपए का जो खर्च खिलाडिों पर किया जाता रहा है, वह भी फिजूल लगता है। सवाल ये भी किए जाने चाहिए कि क्या भारत में क्रिकेट की नई पीढ़ी ने जन्म लेना ही छोड़ दिया है अथवा हमारा उस पर फोकस ही नहीं है? ऑस्ट्रेलिया एकदिनी क्रिकेट का पांच बार का विश्व चैम्पियन है। वह 2021 में टी-20 क्रिकेट के फटाफट प्रारूप का भी विश्व चैम्पियन बना और अब पांच दिनी टेस्ट क्रिकेट का भी बादशाह है। कुछ माह पहले ऑस्ट्रेलिया की यही भरी-पूरी टीम भारत के प्रवास पर थी, जब टीम इंडिया ने एकतरफा मुकाबलों में उसे पराजित कर शृंखला जीती थी। अब लंदन के ओवल मैदान में हम एकदम फिसड्डी क्यों रहे? क्या फाइनल मुकाबले भी इस तरह एकतरफा होते हैं? दरअसल हमारे क्रिकेटरों की मानसिकता ऐसी हो चुकी है कि वे अपने खेल की आलोचना पसंद ही नहीं करते। कप्तान रोहित शर्मा, पूर्व कप्तान एवं 28 शतकों वाले बल्लेबाज विराट कोहली और टीम इंडिया की नई दीवार के विशेषण वाले चेतेश्वर पुजारा, यकीनन, महान बल्लेबाज रहे हैं, लेकिन आज बड़े मैचों में वे नर्वस होकर नाकाम क्यों रहे हैं? वे खेलते हुए नौसीखिया लगते हैं और अक्सर गलत शॉट पर आउट होते हैं। हम गलत हो सकते हैं, लेकिन हमारा सरोकार राष्ट्रीय है कि टीम इंडिया 2013 के बाद से लगातार हार क्यों रही है और टीम एक भी आईसीसी ट्रॉफी क्यों नहीं जीत पाई है? बड़े मुकाबलों में 10,15, 20 या कभी-कभार अर्द्धशतक बनाने वाले बल्लेबाजों को, कमोबेश, महान श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

इस पर हमारे क्रिकेटरों का अहंकार ऐसा है कि वे प्रैक्टिस करना तौहीन समझते हैं और मैदान पर, खेल शुरू होने के, औसतन 30-45 मिनट पहले ही उतरना पसंद करते हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाडिों ने, भारत में शृंखला हारने के बाद, बल्लेबाजी, गेंदबाजी और कैच का लगातार अभ्यास किया। अधिकतर क्रिकेटर ने आईपीएल खेलने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। टीम इंडिया के ज्यादातर क्रिकेटरों ने जमकर आईपीएल खेला और जाहिर है कि अभ्यास भी किया होगा। कमोबेश गेंदबाजी की धार, लाइन, लेंथ, गति आदि तो सटीक रहनी चाहिए। बल्लेबाजी जरूर प्रभावित होती है, लेकिन महान बल्लेबाज तो महान ही होते हैं! टीम इंडिया के पुराने चावल अजिंक्या रहाणे ने ही कंगारुओं का जमकर, डटकर, मुकाबला किया। दरअसल हमारे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों के खेल में निरंतरता की जबरदस्त कमी दिखाई देती रही है। तेज गेंदबाजों में शमी और सिराज पर ही भरोसा करना पड़ा। उमेश यादव तो टीम पर पुराने बोझ हैं। कभी श्रेष्ठ गेंदबाज रहे होंगे! क्रिकेट के महान विशेषज्ञों का स्पष्ट आकलन है कि ओवल की पिच 469 रन बनाने वाली नहीं थी, लेकिन टीम इंडिया ने ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों को दो-दो शतक समेत ढेरों रन बटोरने दिए। भारत की हार की प्रस्तावना यहीं से लिख दी गई थी। जिस गेंदबाज आर. अश्विन ने करीब 475 विकेट लिए हों और कई मैचों में टीम इंडिया को जिताने का श्रेय जिसे कई बार मिला हो, उसे बाहर बिठा कर रखा गया। यह रणनीति और दलील समझ में नहीं आती। ऐसा कई बार हो चुका है। इसके अलावा, टीम इंडिया के विकेटकीपर के. भरत एक अंतराल से खेल रहे हैं। वह लगातार रन बनाने में अक्षम और नाकाम रहे हैं। क्या इतने बड़े देश में एक प्रशिक्षित विकेटकीपर का भी संकट है? बहरहाल इसी साल के अंत में एकदिनी क्रिकेट का विश्व कप भारत में ही होना है। उसमें भारत किस तरह का चैम्पियन रहेगा, यह देश जरूर देखेगा।

सभी के लिए आवास

डा. अश्विनी महाजन

प्राचीन काल में भारत में आवासविहीन लोगों का कोई जिक्र नहीं मिलता है। एक ऐसा देश जो धनाढ्य था, जहां उद्योग और कृषि उन्नत अवस्था में थे और विश्व की एक-तिहाई से ज्यादा जीडीपी भारत में पैदा होती थी, गरीबी अथवा बेघरपन कल्पना से परे था। अपवाद के रूप में कभी-कभी अकाल जैसी स्थितियों की चर्चा इतिहास में मिलती है, लेकिन देश में सबसे भीषण अकाल ब्रिटिश शासन के दौरान ही देखने को मिलता है। आजादी से पूर्व लगभग 150 वर्ष के ब्रिटिश शासन काल में देश में गरीबी बढ़ी, इस पर सभी इतिहासकार एक हैं। एक देश जहां सभी लोग अपनी छत के नीचे रहते थे, ब्रिटिश शासन के दौरान कृषि और उद्योगों के पतन के साथ बढ़ती गरीबी के चलते बड़ी संख्या में लोग बेघर होते चले गए। 1947 में देश के विभाजन ने इस समस्या को और अधिक बढ़ा दिया। आजादी के बाद हर जनगणना में बेघर लोगों का बड़ा आंकड़ा दिखाई देता है। लेकिन वे सब लोग जो अपने घरों में अपनी छत के नीचे रहते रहे हैं, उनमें से भी एक बड़ा हिस्सा कच्चे और अत्यंत जीर्ण घरों में निवास करता रहा है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) के 65वें चक्र के अनुसार सम्पूर्ण देश में 12.6 प्रतिशत गृहस्थ पूर्णतया कच्चे घरों में रहते थे। ग्रामीण क्षेत्र में यह आंकड़ा 17 प्रतिशत का था और शहरों में 2.1 प्रतिशत का। इसके अलावा 21.3 प्रतिशत लोग आधे-अधूरे पक्के घरों में रहते थे।

इसके अलावा 2011 की जनगणना के अनुसार 77.7 लाख लोग बेघर थे। गरीबी के चलते कच्चे और अधूरे पक्के मकानों में आवास करते लोगों के बारे में यह अपेक्षा भी करना बेमानी होगा कि उनके घरों में पर्याप्त पेयजल और शौचालय इत्यादि की भी व्यवस्था होगी। सामान्यतः गांवों में पक्के घरों में निवास करने वाले लोगों के पास भी उचित पेयजल अथवा शौचालय इत्यादि की व्यवस्था होना जरूरी नहीं। हालांकि एनएसएसओ के आवास संबंधी सर्वेक्षणों में लगातार कच्चे घरों की तदाद में लगातार कमी आई है और उसके स्थान पर पक्के घरों का अनुपात ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बढ़ा है। इस संबंध में देश में वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि का योगदान अधिक रहा है। लेकिन देखा जाए तो हालांकि पूर्व में सरकारों द्वारा शहरी और ग्रामीण आवास में सुधार हेतु हमेशा कुछ न कुछ खर्च होता रहा है।

तमाम प्रकार की आवास परियोजनाओं का भी जिक्र मिलता है। इन सब योजनाओं और परियोजनाओं को या तो रोजगार सृजन कार्यक्रमों के साथ अथवा आसान शर्तों और कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराते हुए आवास की व्यवस्था की जाती रही। लोगों के स्वयं के प्रयास से अथवा सरकारी मदद से उधार लेकर अथवा सरकार द्वारा सस्ते दामों में भूमि आवंटन इत्यादि के माध्यम से आवास में विकास होता रहा है। देश में ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्र में पक्के घरों के निर्माण हेतु केन्द्र और राज्य सरकारों के सम्मिलित प्रयास से 25 जून 2015 में प्रारंभ प्रधानमंत्री आवास योजना एक बड़ा कदम माना जा रहा है। स्लम बस्तियों समेत आर्थिक दृष्टि से विपन्न, निम्न आय वर्ग एवं मध्यम आय वर्ग, सभी को शामिल करते हुए हर पात्र गृहस्थ को वर्ष 2022 तक एक पक्का मकान उपलब्ध कराने के लक्ष्य के साथ प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना और प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना प्रारंभ की गई थी।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) : 25 जून 2015 को प्रारंभ इस योजना में विभिन्न प्रकार की श्रेणियों में घरों की कमी की समस्या से निपटने के लिए योजना बनाई है। इस योजना के अनुसार वर्ष 2022 तक आर्थिक रूप से विपन्न/निम्न आय वर्ग, स्लम निवासी एवं मध्यम आय वर्ग के श्रेणी के सभी लोगों को पक्के घर की व्यवस्था करने का लक्ष्य रखा गया। लक्ष्य तो यह था कि जब देश अपनी आजादी के 75 साल पूर्ण कर रहा होगा तो सभी के पास एक पक्का घर होगा। इस योजना में घरों की कमी के बारे में राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में घरों की कमी के बारे में आकलन लगाया जाना तय किया गया। राज्य स्तर पर नोडल एजेंसियों, शहरी स्थानीय निकायों, केन्द्रीय नोडल एजेंसियों और प्राथमिक ऋण दाता संस्थाओं को इसमें मुख्य हितधारक के रूप में रखा गया। सभी प्रकार के शहरी क्षेत्र जिसमें सरकारी कस्बे, अधिघोषित योजना क्षेत्र, विकास प्राधिकरण, विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण, औद्योगिक विकास प्राधिकरण समेत सभी प्रकार के क्षेत्रों को इसमें शामिल किया गया। यह तय किया गया कि जो घर बनाए जाएंगे, उनमें शौचालय, जल आपूर्ति, बिजली और रसोई की मौलिक सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए। महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से नए बने घर या तो महिला के नाम होंगे अथवा संयुक्त नाम से। प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना की बात कहें तो 1.23 करोड़ घरों के निर्माण के लिए स्वीकृति दी जा चुकी है, 1.1 करोड़ घरों की शुरूआत होने के बाद 71 लाख घर बन चुके हैं। 2.03 लाख करोड़ रुपए की केन्द्रीय सहायता के वचन के साथ 1.41 लाख करोड़ रुपए की सहायता राशि दी जा चुकी है। इन घरों के निर्माण में कुल 8.31 लाख करोड़ रुपए का निवेश हो चुका है। प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना की बात करें तो भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय का लक्ष्य 2.94 करोड़ घरों के निर्माण का था, जबकि 3.17 करोड़ लोगों ने इस हेतु पंजीयन कराया जिसमें से 2.85 करोड़ घरों के निर्माण की स्वीकृति दी गई, जिसमें से 2.16 करोड़ घर अभी तक बन चुके हैं और इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा 2.86 लाख करोड़ रुपए दिए जा चुके हैं।

कर्नाटक की जीत से मजबूत होगी कांग्रेस

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में जीत के बाद तो उनका उत्साह देखते ही बनता है। इससे पूर्व दिसम्बर में कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश विधानसभा का चुनाव जीता था। कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश दोनों ही प्रदेशों में कांग्रेस ने भाजपा की सरकार को हराकर चुनाव जीता है। इससे कांग्रेस कार्यकताओं का मनोबल भी बढ़ा है। जिसका लाभ कांग्रेस पार्टी को आगामी राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना के विधानसभा चुनावों में व 2024 के लोकसभा चुनाव में मिल सकता है। 2014 के बाद लगातार हार पर हार झेल रही कांग्रेस पार्टी के लिए कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश में चुनावी जीत एक नई संजीवनी साबित हुई है। अब कांग्रेस की राजस्थान, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश एवं कर्नाटक में सरकार बन गई है। वही झारखंड, बिहार व तमिलनाडु में कांग्रेस सत्तारूढ़ गठबंधन में शामिल है। इस तरह से देखे तो कांग्रेस देश के सात प्रदेशों में सत्तारूढ़ है। 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस बुरी तरह हार गई थी। उसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस को कुछ खास सफलता नहीं मिली थी।

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है

कांग्रेस पार्टी के नेता इन दिनों उत्साह से भरे नजर आ रहे हैं। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में जीत के बाद तो उनका उत्साह देखते ही बनता है। इससे पूर्व दिसम्बर में कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश विधानसभा का चुनाव जीता था। कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश दोनों ही प्रदेशों में कांग्रेस ने भाजपा की सरकार को हराकर चुनाव जीता है। इससे कांग्रेस कार्यकताओं का मनोबल भी बढ़ा है। जिसका लाभ कांग्रेस पार्टी को आगामी राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना के विधानसभा चुनावों में व 2024 के लोकसभा चुनाव में मिल सकता है। 2014 के बाद लगातार हार पर हार झेल रही कांग्रेस पार्टी के लिए कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश में चुनावी जीत एक नई संजीवनी साबित हुई है। अब कांग्रेस की राजस्थान, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश एवं कर्नाटक में सरकार बन गई है। वही झारखंड, बिहार व तमिलनाडु में कांग्रेस सत्तारूढ़ गठबंधन में शामिल है। इस तरह से देखे तो कांग्रेस देश के सात प्रदेशों में सत्तारूढ़ है। 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस बुरी तरह हार गई थी। उसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस को कुछ खास सफलता नहीं मिली थी। इस दौरान कांग्रेस पार्टी बहुत से राज्यों के विधानसभा चुनाव में भी हार कर सत्ता से बाहर हो गई थी। ऐसी स्थिति में कांग्रेस का कर्नाटक में भारी बहुमत से जीतना पार्टी के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

मलिकार्जुन खरगे के कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद पहले हिमाचल और फिर कर्नाटक में कांग्रेस को जीत हासिल हुई है। जिससे उनके नेतृत्व क्षमता की भी धमक सुनायी देने लगी है। हालांकि कर्नाटक मलिकार्जुन खरगे का गृह प्रदेश है। जहां उन्होंने कई दशकों तक राजनीति की है। खरगे कर्नाटक के हर क्षेत्र व हर स्थिति से वाफिक है। जिसका फायदा उन्हें कर्नाटक के विधानसभा चुनाव की रणनीति बनाने में भी मिला। मलिकार्जुन खरगे वर्षों से कर्नाटक का मुख्यमंत्री बनना चाहते थे। इस बार राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के नाते उनके पास मुख्यमंत्री बनने का सुनहरा अवसर था। मगर उन्होंने केंद्र की राजनीति में ही रहना उचित समझा और अपने सुपुत्र प्रियांक खरगे को राज्य सरकार में मंत्री बनवा दिया। कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में जीत से कांग्रेस पार्टी के नेताओं का मनोबल तो ऊंचा हुआ है। इसके साथ ही दोनों प्रदेशों में आने वाले समय में कांग्रेस को राज्यसभा सीटों का भी फायदा मिलेगा। कर्नाटक में तो कांग्रेस ने भारी बहुमत हासिल किया है। ऐसे में उनकी राज्यसभा सीटें भी बढ़कर दोगुनी से अधिक हो जाएगी। इसके साथ ही कांग्रेस को कर्नाटक विधान परिषद में भी बहुत सीटों का लाभ मिलेगा।

देश में विपक्ष की राजनीति में हाशिए पर चल रही कांग्रेस पार्टी कर्नाटक चुनाव में जीत के बाद विपक्षी राजनीतिक में केन्द्रीय भूमिका में आ गई है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने देश के सभी भाजपा विरोधी राजनीतिक दलों की 12 जून को पटना में एक मीटिंग का आयोजन किया था। जिसमें कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खरगे व राहुल गांधी ने शामिल होने में असमर्थता प्रकट की थी। उस कारण से नीतीश कुमार ने 12 जून की मीटिंग को स्थगित कर उसके स्थान पर 23 जून को आयोजित कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी कर्नाटक में जीत के कारण ही ऐसा कर पाई है। देश में विरोधी दलों को एक करने के प्रयास में लगे नीतीश कुमार को भी अच्छे से पता चल गया है कि कांग्रेस के बिना भाजपा विरोधी दलो को एक मंच पर लाना मुश्किल ही नहीं असंभव है। इसीलिए नीतीश कुमार स्वयं दिल्ली आकर कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खरगे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी से व्यक्तिगत मुलाकात कर विपक्षी एकता को सिरे चढ़ाने की अपील कर चुके हैं। कांग्रेस पार्टी वर्षों से यूपीए गठबंधन चला रही है। जिसमें काफी संख्या में विरोधी दल शामिल है।

हालांकि दिल्ली के मुख्यमंत्री व आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल, तेलंगाना के मुख्यमंत्री व भारत राष्ट्र समिति के अध्यक्ष के चंद्रशेखर राव, बसपा अध्यक्ष मायावती, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी जैसे नेताओं को आज भी कांग्रेस से परहेज है। इन सभी नेताओं का अपने-अपने प्रदेशों में व्यापक जनाधार है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल जैसे प्रदेशों में कांग्रेस की वहां के सत्तारूढ़ दलों से सीधी टक्कर है। इस कारण वहां सत्तारूढ़ क्षेत्रीय दलों से कांग्रेस का समझौता होना मुश्किल है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी पिछले दिनों कहा था कि जिस प्रदेश में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव है वहां कांग्रेस को चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। ऐसे में तो कांग्रेस बहुत कम क्षेत्र में सिमट कर रह जाएगी। इसका प्रतिवाद करते हुए लोकसभा में कांग्रेस संसदीय दल के नेता अधीर रंजन चौधरी ने ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस पार्टी से किसी भी तरह का गठबंधन करने से इनकार कर दिया था।दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भी केंद्र सरकार के खिलाफ राज्यसभा में कांग्रेस से समर्थन मांग रहे हैं। मगर कांग्रेस के ही बहुत से वरिष्ठ नेताओं ने अरविंद केजरीवाल को किसी भी प्रकार का साथ देने का विरोध किया है। कांग्रेस के नेताओं का कहना है कि केजरीवाल कांग्रेस के वोटों को हथिया कर मजबूत हो रहा है। कांग्रेस के नेता भाजपा विरोधी दलों के गठबंधन में भी प्रधानमंत्री पद के लिए राहुल गांधी का नाम आगे कर रहे हैं। कांग्रेस के नेताओं का कहना है कि उनकी पार्टी आज भी लोकसभा व राज्यसभा में सबसे बड़ा दल है। देश के अधिकांश प्रदेशों में उनका प्रभाव है। ऐसे में यदि सभी विपक्षी दल मिलकर भाजपा को हरा देते हैं तो प्रधानमंत्री पद के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी सबसे उपयुक्त दावेदार होंगे। यदि विपक्षी दल इस बात पर सहमत है तो हम साथ आ सकते हैं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जिस तरह से कर्नाटक में धुआंधार चुनाव प्रचार किया गया था। उसके उपरांत भी कांग्रेस पार्टी ने बड़ी जीत हासिल की थी। उसके बाद से विपक्षी दलों को लगने लगा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ग्लैमर अब ढ़लान पर है। ऐसे में उनके सामने प्रधानमंत्री पद के लिए मजबूत दावेदार को मैदान में उतारा जाए तो उनको आसानी से हराया जा सकता है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी प्रधानमंत्री मोदी के सामने विपक्ष के सबसे मजबूत प्रत्याशी हो सकते हैं। अब देखना होगा कि आगामी 23 जून को पटना में होने वाली विपक्षी दलों की मीटिंग में क्या निर्णय लिया जाता है और उस मीटिंग से देश की राजनीति में कितना बदलाव हो सकेगा। उस पर ही विपक्षी एकता की बात निर्भर करेगी। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा विरोधी दलों को लोकसभा चुनाव तक प्रधानमंत्री के चेहरे पर चर्चा ना कर भाजपा को हराने पर चर्चा करनी चाहिये। तभी विरोधी दल एकजुट होकर चुनाव मैदान में उतर पाएंगें व देश की जनता को भी भरोसा दिला पाएंगे कि यदि भाजपा हारती है तो विपक्षी दलों की तरफ से देश को एक सशक्त व टिकाऊ सरकार मिलेगी।

छात्रों की आत्महत्या के बढ़ते मामले देश और समाज को झकझोरने वाले हैं

इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों में तो सीटें बहुत होने के कारण अब बहुत ज्यादा प्रतिस्पर्धा होने लगी है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को लेकर अत्यधिक मानसिक दबाव के कारण देश के प्रमुख कोचिंग हब बने राजस्थान के कोटा में तो अक्सर छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की घटनाएं सामने आती ही रहती हैं, अब नामीगिरामी इंजीनियरिंग और मेडिकल संस्थानों में भी छात्रों द्वारा आत्महत्या किए जाने के बढ़ते मामले समाज को झकझोरने लगे हैं। छात्रों में आत्महत्या की यह बढ़ती प्रवृत्ति अब सरकार के साथ-साथ समाज को भी गंभीर चिंतन-मनन के लिए विवश करने हेतु पर्याप्त है। कुछ मामलों में परीक्षाओं के दौरान प्रश्नपत्र सही से हल नहीं कर पाने और कई बार परीक्षा की समुचित तैयारी नहीं होने पर भी छात्र हताश होकर जान देने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों से ऐसी दुखद घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं।

योगेश कुमार गोयल

लेखक 33 वर्षों से पत्रकारिता में निरन्तर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं

परीक्षाएं नजदीक आने के साथ ही छात्रों में चिंता और अवसाद बढ़ने लगता है और कुछ मामलों में यही बढ़ता अवसाद उनके आत्महत्या करने का कारण बन जाता है। इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों में तो सीटें बहुत होने के कारण अब बहुत ज्यादा प्रतिस्पर्धा होने लगी है।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को लेकर अत्यधिक मानसिक दबाव के कारण देश के प्रमुख कोचिंग हब बने राजस्थान के कोटा में तो अक्सर छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की घटनाएं सामने आती ही रहती हैं, अब नामीगिरामी इंजीनियरिंग और मेडिकल संस्थानों में भी छात्रों द्वारा आत्महत्या किए जाने के बढ़ते मामले समाज को झकझोरने लगे हैं। छात्रों में आत्महत्या की यह बढ़ती प्रवृत्ति अब सरकार के साथ-साथ समाज को भी गंभीर चिंतन-मनन के लिए विवश करने हेतु पर्याप्त है। कुछ मामलों में परीक्षाओं के दौरान प्रश्नपत्र सही से हल नहीं कर पाने और कई बार परीक्षा की समुचित तैयारी नहीं होने पर भी छात्र हताश होकर जान देने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों से ऐसी दुखद घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। देश के युवा वर्ग और खासकर 18 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों में आत्महत्या की बढ़ती यह प्रवृत्ति बेहद चिंताजनक है। शिक्षा तथा कैरियर में गलाकाट प्रतिस्पर्धा और माता-पिता तथा शिक्षकों की बढ़ती अपेक्षाओं के चलते छात्रों पर पढ़ाई का बढ़ता अनावश्यक दबाव इसका सबसे बड़ा कारण है, जिसने छात्रों के समक्ष विकट स्थिति पैदा कर दी है। कई बच्चे इस दबाव को झेल नहीं पाते, जिसके चलते उनमें अवसाद पनपता है।

कई अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि परीक्षाएं नजदीक आने के साथ ही छात्रों में चिंता और अवसाद बढ़ने लगता है और कुछ मामलों में यही बढ़ता अवसाद उनके आत्महत्या करने का कारण बन जाता है। इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों में तो सीटें बहुत होने के कारण अब बहुत ज्यादा प्रतिस्पर्धा होने लगी है, वहीं दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे शिक्षण संस्थानों में सामान्य स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए भी अब जबरदस्त मारामारी होने लगी है। ऐसे में छात्र अपनी शिक्षा और भविष्य को लेकर गहरे असमंजस में रहते हैं। किसी को कैरियर या नौकरी की चिंता है तो कोई पारिवारिक वित्तीय संकट से जूझ रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े देखें तो जहां 2020 में देशभर में कुल 12526 छात्रों ने आत्महत्या की, वहीं 2021 में यह आंकड़ा बढ़कर 13089 हो गया। वैसे आत्महत्या की यह समस्या अब केवल छात्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि देश में आत्महत्या के मामलों में जिस प्रकार साल दर साल उछाल आ रहा है, वह समूचे समाज के लिए गंभीर चिंता का कारण बन रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया में हर 40 सैकेंड में एक व्यक्ति आत्महत्या करता है यानी प्रतिवर्ष दुनियाभर में करीब आठ लाख लोग आत्महत्या के जरिये अपनी जीवनलीला खत्म कर डालते हैं, जिनमें से बड़ी संख्या में आत्महत्या के मामले 15 से 29 वर्ष के लोगों में होते हैं जबकि आत्महत्या का प्रयास करने वालों का आंकड़ा इससे बहुत ज्यादा है। डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों के अनुसार दुनियाभर में 79 फीसदी आत्महत्या निम्न और मध्यवर्ग वाले देशों के लोग करते हैं और इसमें बड़ी संख्या ऐसे युवाओं की होती है, जिनके कंधों पर किसी भी देश का भविष्य टिका होता है। बीते वर्षों में दुनियाभर में खुदकुशी की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं लेकिन भारत में आत्महत्याओं का आंकड़ा तो काफी चिंताजनक है। लोगों में अवसाद निरन्तर बढ़ रहा है, जिसके चलते ऐसे कुछ व्यक्ति आत्महत्या जैसा हृदयविदारक कदम उठा बैठते हैं। जीवन से निराश होकर आत्महत्या की बढ़ती दुष्प्रवृत्ति गंभीर चिंता का सबब बन रही है। मनोचिकित्सकों के अनुसार जब भी कोई व्यक्ति या युवा गहरे मानसिक तनाव से जूझ रहा होता है तो उसके व्यवहार में पहले की अपेक्षा कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं। ऐसे में आसपास मौजूद लोगों तथा परिजनों की यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है कि वे ऐसे व्यक्ति अथवा युवा को इमोशनल, मेंटल या फिजिकल जैसी भी जरूरत हो, सहयोग करें, उसका मनोबल बढ़ाने का प्रयास करें ताकि वह व्यक्ति स्वयं को अकेला महसूस न करे। मनोचिकित्सकों के अनुसार आत्महत्या करना काफी गंभीर समस्या है और आत्महत्या करने के पीछे अधिकांशतः अवसाद को ही जिम्मेदार ठराया जाता है, जो ऐसे करीब 90 फीसदी मामलों का प्रमुख कारण है लेकिन सभी आत्महत्याओं के लिए अवसाद को ही पूरी तरह जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। उनके मुताबिक आत्महत्या करने का विचार किसी इंसान के अंदर तब पनपता है, जब वह किसी मुश्किल से बाहर नहीं निकल पाता। जहां तक छात्रों की बात है तो छात्रों के बढ़ते आत्महत्या के मामलों के लिए कहीं न कहीं अभिभावक भी दोषी हैं। दरअसल अधिकांश मामलों में देखने को मिलता है कि ज्यादातर माता-पिता या अभिभावक अपने बच्चों की क्षमता और अभिरूचि को सही ढंग से नहीं समझ पाते और उनसे जरूरत से ज्यादा अपेक्षाएं रखते हुए परीक्षा के समय भी उनकी मनोदशा से अनभिज्ञ रहते हैं। कई मामलों में ऐसे छात्र जरूरत से ज्यादा मानसिक दबाव के कारण गलत कदम उठा बैठते हैं। ऐसे मामलों में छात्रों को मानसिक दबाव से बाहर निकालने में सबसे बड़ी भूमिका अभिभावकों, करीबी लोगों और शिक्षकों की ही हो सकती है, जो उन्हें सहानुभूतिपूर्वक समझाएं कि किसी भी असफलता से उनके जीवन का निर्धारण नहीं होता और हमारा यह जीवन एकमात्र ऐसी चीज है, जिसे हम दोबारा नहीं पा सकते। उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित करें कि वे सकारात्मक सोच के साथ अपनी क्षमतानुसार मेहनत करके भी सफलता की बुलंदियों को छू सकते हैं। हालांकि सरकार, सामाजिक संस्थाओं शिक्षण संस्थानों की ओर से हाल के वर्षों में छात्रों की काउंसलिंग के साथ उनकी पढ़ाई में मदद करने तथा जरूरत महसूस होने पर चिकित्सकीय परामर्श मुहैया कराने के प्रयास हो रहे हैं लेकिन इन प्रयासों में और तेजी लाने की जरूरत है।

सीमित दायरे में ओपीएस क्यों?

संजय कुमार

13 जनवरी 2023 का ऐतिहासिक दिन कर्मचारियों के लिए हमेशा याद रहने वाला अध्याय छोड़ कर गया है। प्रदेश का सरकारी कर्मचारी हमेशा इसे याद रखेगा क्योंकि इसी दिन कर्मचारियों की लंबित मांग को वर्तमान की सुक्खू सरकार ने मानते हुए ओपीएस को लागू करने की घोषणा की और अब पुरानी पेंशन को लागू भी कर दिया। पुरानी पेंशन सरकारी कर्मचारियों के लिए बेहतर और सुरक्षित विकल्प है। ओपीएस बहाली की घोषणा करने वाला हिमाचल प्रदेश देश का पांचवां राज्य बन गया है। पुरानी पेंशन की मांग को स्वीकारते हुए लगभग डेढ़ लाख कर्मचारियों को बुढ़ापे का सहारा देकर इतिहास रचा है। विधानसभा चुनाव के दौरान ओपीएस को बहाल करना वर्तमान सरकार की दस में से एक गारंटी थी और इसी गारंटी ने सरकार को सत्ता में आने के लिए फायदा भी दिया। प्रदेश का ऐसा सौभाग्य है कि मुख्यमंत्री सुक्खू ने जो वादा किया था वो सत्ता में आने के बाद पूरा भी किया। प्रदेश के लाखों कर्मचारी पुरानी पेंशन की बहाली के लिए वर्ष 2015 से लगातार संघर्षरत थे तथा अब एक अप्रैल 2023 से उनको इसका लाभ मिलना शुरू भी हो जाएगा। जिस प्रदेश का मुखिया अपनी कार्यशैली से अपने लोगों के जीवन की खुशहाली के लिए योजनाओं को धरातल पर उतारता है, तब उस प्रदेश के सुखद भविष्य को कोई नकार नहीं सकता। कर्मचारी किसी भी सरकार की रीढ़ होते हैं। उन्हीं के कठिन परिश्रम और सहयोग से राज्य सरकार अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को सही दिशा में क्रियान्वित कर सकती है। कर्मचारियों का स्वाभिमान लौटाने तथा सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए पुरानी पेंशन योजना पर ऐतिहासिक फैसला लिया गया है। प्रदेश के संसाधन सीमित होने के बाद भी मुख्यमंत्री सुक्खू ने यह फैसला लिया जिसका अनुसरण अब दूसरे प्रदेश भी करेंगे जिनके संसाधन हमसे बेहतर हैं। वर्ष 2003 से सेवानिवृत्ति के पश्चात कर्मचारियों की स्थिति दयनीय बनती जा रही थी। चंद रुपए जो पेंशन के रूप में मिलते थे उससे घर का खर्च चलाने के लाले पड़ जाते थे। इसी स्थिति को भांपते हुए कर्मचारियों ने एकजुटता का रास्ता अपनाया और संघर्ष किया तथा प्रदेश के मुखिया ने ओपीएस रूपी फल प्रदेशवासियों को प्रदान किया। आंदोलन के समय में भी हिमाचल के बोर्ड और निगमों के कर्मचारियों ने भी बढ़ -चढ़ कर सहयोग दिया और धर्मशाला आभार रैली में भी अपना समर्थन दिया। लगातार कई वर्ष मेहनत करने के बाद एक व्यक्ति कर्मचारी चयन आयोग या लोक सेवा आयोग से चयनित होकर नौकरी में आता है। चयन आयोग उनको विभागों में या बोर्ड या कॉर्पोरेशन में नियुक्ति देता है। प्रदेश के इतिहास का काला सच यह भी है कि प्लेसमेंट अगर विभागों में होती है तो आज उन्हें पुरानी पेंशन का लाभ मिलेगा, पेंशन उनके बुढ़ापे का सहारा बनेगी और जिंदगी के आखिरी मुकाम में उनको ठोकरें नह

संक्षिप्त खबरें

चोरों के आतंक से थाना भी सुरक्षित नहीं

अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं की अपराध की घटना ने न सिर्फ लोगों को परेशान किया है। बल्कि पुलिस की भी नींद उड़ा दी है। पुलिस डाल-डाल तो अपराधी पात पात साबित हो रही है। पुलिस उद्भेदन के दिशा में काम कर रही है, पर तभी नए वारदात को अंजाम देकर अपराधी पुलिस को चुनौती दे डालते हैं। ताजा मामला पुलिस द्वारा जप्त की गई वाहन से जुड़ा है, ।अपराधियों के हौसले किस कदर बुलंद हैं कि थाना परिसर में लगे वाहन पर ही उसने हाथ साफ कर दिया। इस घटना से पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। गनिमत रहा कि चोर चोरी किए गए सामान के साथ पकड़ा गया।, इस पूरे मामले को लेकर एसएचओ अरविंद प्रसाद ने बताया कि पुलिस द्वारा जप्त थ्री ह्विलर जो थाना परिसर में लगी हुई थी,उससे एक व्यक्ति बैटरी ,स्टेपनी और मास्टर सिलेंडर चोरी कर भाग रहा था, जिसे पुलिस बल के सहयोग से पकड़ लिया गया।, पकड़े गए व्यक्ति के पास से एक बैटरी, मास्टर सिलेंडर सहित अन्य सामान बरामद किया गया,। आरोपी की पहचान मठ मझौली गांव निवासी सुबोध सहनी के रूप में की गई है, जिसे न्यायालय में पेश किया गया जहां से उक्त व्यक्ति को जेल भेज दिया गया है।

मोहनपुर गांव में आग लगने से दो घर जलकर राख

मंसूरचक, बेगूसराय। थाना क्षेत्र क्षेत्र के गोविंदपुर एक पंचायत अंतर्गत मोहनपुर गांव में सोमवार की रात आग लगने से हरी लाल पासवान व रितेश पासवान का घर बुरी तरह से जलकर स्वाहा हो गया। घटना के संबंध में बताया जाता है कि सोमवार की रात घर के सभी लोग सो रहे थे। तभी रात्रि के करीब 10:30 बजे हरिलाल पासवान के घर से आग की लपटें उठने लगी। देखते-देखते रितेश पासवान के घर एवं सीमावर्ती बछवाड़ा प्रखंड के चिरंजीपुर पंचायत निवासी सुमित ठाकुर और अमित ठाकुर के घर में आग पकड़ लिया ।ग्रामीणों के काफी प्रयास के बाद आग पर काबू नहीं पाया जा सका। जबतक दलसिंहसराय से दमकल पहुंचकर आग बुझाया। तब तक हरी लाल पासवान व रितेश पासवान का घर जलकर राख हो गया। रितेश पासवान ने अगलगी की घटना में मंसूरचक अंचल में आवेदन देकर नागदी, जेवर, कपड़ा, अनाज सहित करीब 3:30 लाख रुपये की क्षति का दवा किया है। मंसूरचक अंचलाधिकारी ने घटनास्थल की जांच पड़ताल कर त्वरित कार्रवाई करते हुए पीड़ित परिवार को 19000 रुपये नगद एवं पॉलिथीन आदि मुहैया कराया।

मारपीट को लेकर स्थानीय थाना में प्राथमिकी हुआ दर्ज

मधुबनी खजौली थाना क्षेत्र के तरापट्टी गांव निवासी शिक्षिका अनिता कुमारी ने मारपीट को लेकर स्थानीय थाना में प्राथमिकी दर्ज करायी है उन्होंने अपने प्राथमिकी आवेदन में दर्शाया है कि 11 जून को संध्या काल मे मेरे पड़ोसी सुनील कुँवर राजा कुँवर राजेश कुँवर नीतू कुमारी द्वारा मेरे घर मे धुसकर लप्पर थप्पर एव लाठी डंडे से मारपीट कर घायल कर दिया गया. उन्होंने कहा कि मेरे पति आर्मी से सेवा निवृत्त फौजी है और मेरे दो लड़के बाहर में रहते है.इस लेकर सभी नामदर्ज अभियुक्त मिलकर मुझे एव मेरे भैसुर को मारपीट की. साथ ही वे लोग मुझे मारपीट के दौरान मेरे शरीर की कपड़ा को फाड़कर बेंगण्य कर दिया गया.वही थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि मारपीट की घटना के आवेदन आलोक में प्राथमिकी दर्ज कर अनुसंधान जारी कर दी है।

एक पिता ने पुत्रको लेकर स्थानीय थाने में दिया आवेदन पुलिस ने पकड़ कर भेजा जेल

मधुबनी जिला के खजौली थाना क्षेत्र के एकडारा गांव निवासी राम सेवक यादव ने अपने पुत्र अमरेंद्र कुमार के विरोध में खजौली थाना में आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज करायी है.उन्होंने अपने प्राथमिकी आवेदन में आरोप लगाया है कि मेरे पुत्र अमरेंद्र कुमार जो प्राय शराब पिककर घर मे गाली गलौज एव मारपीट के साथ अप्रिय घटना करता रहता है.वही थाना क्षेत्र के दयालपाली गांव निवासी राम विलेक्षण सिंह ने थाना में आवेदन देकर अपने पुत्र नंद कुमार सिंह के विरोध में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है. उन्होंने प्राथमिकी आवेदन में दर्शया है कि 11 जून को करीब 8.30 वजे रात्रि में मेरा पुत्र नंद कुमार सिंह नशे के हालत में मेरे एव अपनी बहन के साथ मारपीट कर एव घर मे रखे समान को तोड़ फोड़ कर नष्ट कर दिया .वही विरोध करने पर मुझे जान मारने की नीयत से मारपीट किया गया. वही मेरी पुत्री रितु कुमारी को जान मारने की नीयत से मारपीट किया गया.वही थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि आवेदन के आलोक में दोनो शराब पियक्कड़ को गिरसार कर जेल भेजा गया है ।

जनसभा को संबोधित किये भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी

प्रात : किरण, संवाददाता

मधुबनी जिला के बिस्फी प्रखंड मे प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सम्राट चौधरी का हार्दिक अभिनन्दन किया गया सम्राट चौधरी केवटी से धेपुरा पहुंचकर सर्वप्रथम दुर्गा मंदिर में जाकर माता की पूजा की। यही पर कुशवाहा समाज के लोगों ने उन्हें मिथिला के रिवाज से मखान की माला एवं पाग चादर से स्वागत किया। हजारों कार्यकताओं गगनभेदी नारों से नारा लगाते हुए दस किलोमीटर दूरी तय कर बिस्फी पहुंचे। जहां विद्यापति टू उच्च विद्यालय के मैदान में आयोजित अभिनन्दन समारोह एवं जनसभा में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी उपस्थित हुए एवं जनसभा को संबोधित भी किये विद्यापति की जन्मस्थली पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी को मिथिला परंपरा के अनुसार पाग दुपट्टा फुल के मालाओं से सांसद डॉ अशोक कुमार यादव एवं विधायक हरिभूषण ठाकुर बचौल ने जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री चौधरी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल को ऐतिहासिक कार्य बताया। उन्होंने कहा कि इन 9 वर्षों में भारतीय राजनीति और देश के विकास में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं ।ऐसा कोई भी परिवार नहीं है जिस तक केंद्र सरकार की योजना नहीं पहुंची हो ।यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी ने गरीब शोषित वंचित पीड़ित दलित व आदिवासी वर्ग के उत्थान हेतु हर घर शौचालय प्रधानमंत्री आवास हर व्यक्ति को वैक्सीन कोरोना काल मे उन्होंने 80 करोड़ लोगों को मुफ्त में अनाज दिया,मुफ्त में वैक्सीन दिया,कोरोना काल में गरीब भूखा न रहे अतः उनके जनधन खाते में मदद के रूप में पैसे भेजे और ऐसे बहुत सारे जनकल्याणकारी योजनाएं है जिनका सीधा लाभ जनता को मिल रहा है ।प्रधानमंत्री ने 9 वर्षो में देश की तस्वीर और तकदीर बदलने का काम किया है ।उन्होंने कहा कि महागठबंधन की सरकार में अपराधियों और भ्रष्टाचारियों का बोलबाला हो तो जन सरोकार के मुद्दे स्वतः गौण हो जाते हैं ।यह सरकार पूरी तरह भ्रष्टाचारियों को संरक्षण दे रही है ।नीतीश बाबू और उनकी भ्रष्ट मंडली जनता की गाढ़ी कमाई का दौहन करने में लगी हुई है ।शासन और प्रशासन के स्तर पर भी यह सरकार पूरी तरह फेल हैं ।उन्होंने 2024 में पुनः भाजपा की सरकार बनाने की बात कही ।सभा को प्रदेश उपाध्यक्ष मिथिलेश तिवारी मधुबनी सांसद डॉ अशोक कुमार यादव दरभंगा सांसद गोपाल ठाकुर बिस्फी विधायक हरिभूषण ठाकुर बचौल बेनीपट्टी के विनोद नारायण झा केवटी के मुरारी मोहन झा जाले के जीवेश मिश्रा दरभंगा के संजय सरावगी अरुण शंकर एमएलसी घनश्याम ठाकुर रामप्रीत पासवान जिलाध्यक्ष शंकर झा पूर्व विधान पार्षद अर्जून सहनी दरभंगा जिलाध्यक्ष जीवछ सहनी राजकिशोर मिश्र बुलेट अभिजीत पासवान सहित कई नेताओं ने संबोधित किया ।कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा मंडल अध्यक्ष रामसकल यादव जबकि मंच संचालन जिला महामंत्री देवेन्द्र यादव ने किया।

प्रखंड मुख्यालय में महागठबंधन के कार्यकर्ता करेगें धरना व प्रदर्शन

प्रात : किरण, संवाददाता

बरौनी, बेगूसराय। केन्द्र सरकार के खिलाफ महागठबंधन के कार्यकर्ता धरना व प्रदर्शन करेंगे ।सोमवार को भाकपा अंचल कार्यालय बीहट में कांग्रेस के वरिष्ट नेता नंदकिशोर सिंह की अध्यक्षता में अयोजित समीक्षा बैठक में उपस्थित सभी दलों के पदाधिकारी ने कहा कि 15 जून 2023 को प्रखंड स्तरीय धरना प्रदर्शन में हजारों लोग भाग लेंगे। राज्य महागठबंधन के निदेर्शानुसार 15 जून 2023 को महंगाई, बेरोजगारी एवं केन्द्र सरकार की तानाशाही के खिलाफ प्रखंड स्तरीय महाधरना प्रदर्शन किया जाएगा। इसकी तैयारी जोर शोर किया जा रहा है। भाकपा अंचल मंत्री अरविंद सिंह के नेतृत्व में दस सदस्यीय संचालन समिति का गठन किया गया है ।आगामी 2024 में होनेवाला लोकसभा चुनाव में महागठबंधन को एक जुट रहने का आहवान करते हुए कांग्रेस के वरिष्ट नेता नंदकिशोर सिंह ने कहा कि संविधान की रक्षा के लिए हम सब मिलकर चुनाव लडेंगे। तभी भाजपा जैसे तानाशाह को हरा पाएंगे। वहीं तेघड़ा विधायक राम रतन सिंह ने कहा कि केन्द्र सरकार लोकतंत्र की हत्या कर रही है। बेरोजगार नौजवानों के आवाज को दबाया जा रहा है। जदयू के शंभू सिंह, राजद के रामानन्द यादव, हम के पियूष कुमार ने कहा कि इस धरना प्रदर्शन में एक हजार से अधिक महिला पुरुष कार्यकर्ता भाग लेंगे। सभी दल के लोग अपने-अपने झंडा बैनर के साथ महागठबंधन के बैनर तले शामिल होकर दिन के 10 बजे जीरोमाइल गोलंबर से बरौनी प्रखण्ड कार्यालय के लिए जुलूस के सकल में चलेगी, जो प्रखंड कार्यालय पर धरना प्रदर्शन में शामिल होगी। मौके पर कांग्रेस के वरिष्ट नेता नन्द किशोर सिंह, युवा नेता पवन कुमार, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष राम प्रकाश सिंह, बद्री सिंह, राहुल कुमार, मुकेश कुमार, जदयू के प्रखंड अध्यक्ष शंभू सिंह, जिलाध्यक्ष अरूण कुमार गांधी, मोहम्मद आजाद, भाकपा के अंचल मंत्री अरविंद सिंह, सहायक मंत्री नवीन सिंह, एटक नेता प्रहलाद सिंह, भाकपा जिला कार्यकारणी के सदस्य रामाधार सिंह, राम उदगार सिंह भूतनाथ, अशोक रजक, धीरज कुमार, माणिक साह, भगवान पासवान, वशिष्ठ सिंह, दिलेर अफगान, उमेश सिंह, राजद के सुरेन्द्र सिंह, रामानंद यादव, वार्ड पार्षद अशोक सिंह, राजीव कुमार, अनिल यादव, राजकुमार समेत दर्जनों लोग मौजूद थे।

हरि बाबा मंदिर परिसर में सात दिवसीय अमरकथा का आयोजन शुरू

प्रात : किरण, संवाददाता

मंसूरचक, बेगूसराय। प्रखंड क्षेत्र के साठा पंचायत अंतर्गत वार्ड संख्या 7 में हरि बाबा मंदिर परिसर में आयोजित सात दिवसीय अमरकथा सह प्रवचन के पहले दिन अयोध्या से पधारे कथावाचक बाबा रामदास ने अमर कथा की महिमा के बारे में व्याख्यान किया। उन्होंने कहा कि भगवान कथा का श्रवण करने मात्र से ही समस्त पापों से मुक्ति मिलती है। अमर कथा का केंद्र है आनंद, आनंद में पाप का स्पर्श भी नहीं हो सकता। भक्ति के दो पुत्र हैं, पहला ज्ञान व दूसरा वैराग्य। अमर कथा सुनते ही ज्ञान और वैराग्य जागृत हो जाता है। कथावाचक ने अपने मुखारविंद से कहा कि ईश्वर के प्रति लोगों की प्रेम कम होती जा रही है। लोग आजकल मोबाइल में ही व्यस्त दिख रहे हैं। उन्हें ईश्वर के चरण में आना होगा, ताकि उन्हें सद्बुद्धि प्राप्त हो सके। अमर कथा सह प्रवचन में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर अमर कथा को सफल बनाया। मौके पर भगवान चौधरी, चंद्रदेव झा, दीपक कुमार चौधरी, नाथो महतो, उदय राय उर्फ ढोंगल महतो, राजेश कुमार, अटेरन पोद्दार, शंकर यादव, मंटून शर्मा सहित कई अन्य श्रद्धालु उपस्थित थे।

जदयू कार्यालय पर धरना प्रदर्शन को लेकर विचार विमर्श करते महागठबंधन के कार्यकर्ता

प्रात : किरण, संवाददाता

मधुबनी खजौली प्रखंड़ के बिड़नी चौक स्थित जदयू प्रखंड़ कार्यालय के कपूर्री सभागार में मंगलवार को प्रखंड़ जदयू अध्यक्ष रामबाबू सिंह के अध्यक्षता में महागठबंधन में शामिल सभी पार्टियों द्वारा 15 जून को प्रखंड़ मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन को लेकर विचार विमर्श किया गया.इस दौरान प्रखंड़ जदयू अध्यक्ष रामबाबू सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार की 9 साल की तबाही - बबार्दी के खिलाफ महागठबंधन के आवाहन पर प्रखंड़ मुख्यालयों पर धरना प्रदर्शन कर आम जनताओं को जागरूक किया जाएगा. उन्होंने कहा कि मोदी शासन के नौ साल जनता की चरम तबाही बबार्दी ,लूट दमन,नफरत का भयावह दौर साबित हुआ.वही सांसद प्रतिनिधि शतुघ्न राउत ने कहा कि मोदी की सरकार में महंगाई की मार से जनता त्रस्त है. ये पहली ऐसी सरकार है कि जो खाद पदार्थ से लेकर पाठ्य पुस्तकों सहित अन्य समान पर जीएसटी लगा रखी है.वही राजद के जिला महासचिव व पूर्व जिप सदस्य वीरेंद्र प्रसाद यादव ने कहा कि केंद्र में मोदी सरकार शिक्षा स्वास्थ ,सिंचाई, मनरेगा सहित अन्य ग्रामीण विकास कल्याणकारी योजनाओं के मद में लगातार कटौती कर रही है.इस लेकर यदि मोदी सरकार 2024 के लोक सभा चुनाव में दुवारा आने से देश का संविधान को समाप्त कर देगा.इस सरकार को उखाड़ फेंकने को लेकर 15 जून को प्रखंड़ मुख्यालय पर दिन के 11 वजे से केंद्र सरकार के विरोध में धरना प्रदर्शन कर आम जनताओं को जागरूक कर उस सरकार को पोल खोलने का काम किया जाएगा. इस बैठक के दौरान कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता विशेश्वर झा एव शुशील झा ने केंद्र सरकार द्वारा दलित,पिछड़ो की आरक्षण में कटौती की साजिश प्रधानमंत्री मोदी ने अनवरत जारी है. उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की नौ साल में आम जनताओं को लूटने का काम किया है उसे वेनकाब कर आमलोगों को जागरूक करना है. इस मौके पर प्रखंड़ जदयू अध्यक्ष रामबाबू सिंह, सांसद प्रतिनिधि शत्रुघ्न राउत, काग्रेस के वरिष्ठ नेता शुशील झा,विशेश्वर झा, राजद प्रखंड़ अध्यक्ष राम सागर पासवान, युवा राजद अध्यक्ष मिथिलेश कुमार यादव, लक्ष्मण पंडित,डा. पवन कुमार सिंह,राहराम यादव, शिव कुमार सिंह,बालेश्वर पासवान,अमर कुमार राण, राम प्रसाद दास,श्याम चंद्र झा,आलोक कुमार , मनोज शर्मा, धीरेन्द्र प्रसास यादव, रामसति देवी,राम कृपाल ठाकुर,दीनानाथ सिंह सहित दर्जनों महागठबंधन कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अज्ञात वाहन की ठोकर से घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

प्रात : किरण, संवाददाता

बखरी, बेगूसराय। बखरी प्रखंड के बागबन पंचायत अंतर्गत अभुआर ग्राम निवासी रामजपो सदा के पुत्र दिलो कुमार को अज्ञात वाहन की ठोकर लग गई। घायल अवस्था में इलाज के दौरान मौत हो गई। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक युवक 12 जून को सुबह के 8 बजे अभुआर से दवा लाने के लिए बखरी जा रहा था। रास्ते में अभुआर और बागबन के बीच अज्ञात वाहन ने सामने से श धक्का मारकर भाग गया। ग्रामीणों के द्वारा बखरी पीएचसी लाया गया। डॉक्टर ने सदर अस्पताल बेगूसराय रेफर कर दिया। वहां इलाज के दौरान डॉक्टर ने दिलो कुमार को मृत घोषित कर दिया। मंगलवार की सुबह जब पोस्टमार्टम प्रक्रिया पूरा कर युवक का शव गांव आया तो परिवार एवं ग्रामीणों के करुण क्रंदन से पूरा गांव गमगीन हो गया। वहीं मृतक की गर्भवती पत्नी एवं माता-पिता का रो-रोकर बुरा हाल है। बागवन के मुखिया योगेंद्र राय ने पीड़ित परिवार से मिलकर तत्काल दाह संस्कार के लिए आर्थिक सहयोग किया और आगे सरकारी मुआवजा दिलाने की पीड़ित परिवार को आश्वासन दिया।

खादी मेला में उद्यमी संवाद खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को मिलेगी 10 लाख रुपए तक की सब्सिडी

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा स्थानीय आरडीएस कॉलेज प्रांगण में लगाए गए खादी मेला एवं उद्यमी बाजार में जिला उद्योग केंद्र मुजफ्फरपुर द्वारा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों के मार्गदर्शन के लिए संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक धर्मेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में नई औद्योगिक इकाइयों को लगाने तथा पुरानी औद्योगिक इकाइयों को उन्नत बनाने के लिए पीएम एफएफएमई योजना एक विशिष्ट योजना है जिसका क्रियान्वयन बिहार सरकार के खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय द्वारा किया जाता है। उन्होंने उद्यमियों को बताया कि यह क्रेडिट लिंक योजना है जिसमें औद्योगिक इकाइयों को अधिकतम 10 लाख तक की सब्सिडी प्रदान की जाती है। इस योजना के तहत मार्केटिंग और ब्रांडिंग के लिए भी सब्सिडी का प्रावधान किया गया है। किसानों की प्रड्यूसर कंपनियों तथा सेल्फ हेल्प ग्रुप के लिए भी अनेक प्रावधान इस योजना के तहत किए गए हैं। इस योजना के तहत खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में काम करने वाले सेल्फ हेल्प ग्रुप के सदस्यों को 40000 प्रति सदस्य की मदद की जाती है। उन्होंने कहा कि उद्यमियों को आवेदन प्रक्रिया में मदद करने के लिए उद्योग विभाग द्वारा जिला संसाधन सेवी बहाल किए गए हैं जिनकी सेवा निशुल्क उपलब्ध है। आवेदन करने से लेकर ऋण स्वीकृति और ऋण वितरण तक के कार्य में जिला संसाधन सेवी द्वारा सहायता दी जाती है। कार्यक्रम में मुजफ्फरपुर के जिला खादी ग्रामोद्योग पदाधिकारी कमलेश कुमार त्रिवेदी, उद्योग विस्तार पदाधिकारी अमरेंद्र कुमार, नरेश पासवान, राजेश कुमार श्रीवास्तव, चंद्रप्रकाश चौधरी और अनेक जिला संसाधन सेवियों ने भी हिस्सा लिया।

सामाजिक कार्यों में बेहतर भूमिका निभाने वाला गुलशन ने गांधी फेलोशीप में मारी बाजी

प्रात : किरण, संवाददाता

बेगूसराय। सदर प्रखंड के इनियार निवासी राम प्रवेश सिंह के छोटे सुपुत्र गुलशन कुमार का चयन गांधी फेलोशीप में हुआ है ।विद्यालय के दिनों से ही इनकी भूमिका सामाजिक कार्यों में अग्रणी रही है।

एनएसएस से जुड़कर गुलशन कुमार ने स्वास्थ्य, साफ-सफाई, सड़क-सुरक्षा के क्षेत्र में अद्भुत कार्य किया।

वहीं 2019 से शाम के समय में झोपड़पट्टी में माया कौशल्या फाउंडेशन द्वारा संचालित बच्चों की पाठशाला के बच्चों के बीच लगातार निःशुल्क शिक्षा देने का काम कर रहे हैं।

गुलशन कुमार की शिक्षा दीक्षा शहर के सेंट जोसेफ पब्लिक स्कूल से हुई। स्नातक इन्होंने जीडी कॉलेज बेगूसराय से किया। युनिसेफ, नेहरू युवा केंद्र जैसे संगठनों के कार्यक्रमों में भी इनकी प्रमुखता से भागिदारी रही है। गांधी फेलोशिप में चयन पर सेंट जोसेफ पब्लिक स्कूल बेगूसराय के निदेशक अभिषेक सिंह, भारद्वाज गुरूकुल के निदेशक शिवप्रकाश भारद्वाज, बाइट कम्प्यूटर के निदेशक संजय सिंह, शिक्षक रजनीकांत, अशोक कुमार, सामाजिक कार्यकर्ता अमित जायसवाल सहित बच्चों की पाठशाला की पूरी टीम ने बधाई दी है।

जिले में कल से काम करेगा कंट्रोल रूम, 20 तक होगा नावों का निबंधन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के मद्येनजर समाहरणालय सभागार में जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक हुई। आपदा के अपर समाहर्ता अजय कुमार ने पीपीटी के माध्यम से उपस्थित सदस्यों के सामने आपदा के तैयारी की रूप रेखा रखी। कहा गया कि सभी प्रखंडों में वर्षा मापक यंत्र कार्यरत होने के संबंध में निरीक्षण कर ले। प्रतिदिन सुबह 8 बजे वर्षा माप के समन्वय प्रतिवेदन करे। संकटग्रस्त की पहचान करे साथ ही धात्री एवं गर्भवती महिलाओं को चिन्हित कर सूचीबद्ध करने का निदेश दिया गया। तटबंधों की सुरक्षा को लेकर कार्यपालक अभियंता को निरीक्षण करने साथ ही 3 दिन के भीतर सभी संबंधित अंचलाधिकारी को प्रतिवेदन देने का निर्देश दिया गया।अनुमंडल पदाधिकारी और कार्यपालक अभियंता को संयुक्त रूप से निरीक्षण करने को कहा गया। कंट्रोल रूम 15 जून से लगातार कार्यशील रहेगा। जानकारी दी गई कि जिला आपातकालीन संचालन केन्द्र चालू है। आपातकालीन संचालन केन्द्र से प्रतिदिन कर्मी आपदा को लेकर प्रतिवेदित करेंगें। नाव का रजिस्ट्रेशन, परमिट, फिटनेस तथा उसके एकरारनामा को अद्यतन करने का निदेश दिया गया। निर्देश दिया गया कि 20 जून तक वांछित नावों का पंजीकरण करा ले। शरण स्थल पर शौचालय, पेयजल, बैनर, आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करने का भी निदेश दिया । कैंप इंचार्ज को भी चिन्हित करने तथा अगलगी, वज्रपात का ससमय रिपोर्ट भेजने का निदेश सीओं दिया गया। बैठक में एडीएम राजस्व संजीव कुमार, एडीएम आपदा परीक्ष्यमान आईएस साराअशरफ, डीटीओ, आपदा प्रभारी तथा संबंधित पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

पुलिस ने चोर को गिरफ्तार करने के साथ चोरी के जेवरात और लूटे बाइक को बरामद

प्रात : किरण, संवाददाता

मंसूरचक, बेगूसराय। पुलिस ने रविवार की रात जिला चोर गिरोह के सरगना एवं मंसूरचक पंचायत के वार्ड संख्या 11 निवासी मो. मुबारक उर्फ धन्ना को लोडेड पिस्तौल और चोरी के जेवरात के साथ समसा पुल के निकट से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार सरगना धन्ना से पूछताछ करने पर विभूतिपुर थाना क्षेत्र से एक लूटी हुई पैशन प्रो मोटरसाइकिल के साथ अपने दो साथी वार्ड संख्या 15 निवासी रंजीत शाह का पुत्र राहुल कुमार उर्फ रहुआ एवं वार्ड संख्या 14 निवासी नागेश्वर शाह का पुत्र सोनू कुमार को गिरफ्तार कर लिया। दोनों गिरफ्तार अभियुक्तों के पास से भी जेवरात एवं विभूतिपुर थाना में मोटरसाइकिल छिनतई में उपयोग किया गया स्प्लेंडर मोटरसाइकिल बरामद कर लिया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों ने डीएसपी तेघड़ा रविंद्र मोहन प्रसाद, मंसूरचक थानाध्यक्ष रंजन ठाकुर, सअनि अशोक कुमार के समक्ष दलसिंहसराय थाना क्षेत्र के वीआईपी कॉलोनी में बंद मकान में हुये लाखों की चोरी, मंसूरचक निवासी मदन कुरैशी के दरवाजे पर से चोरी हुये लालरंग की अपाची मोटरसाइकिल की चोरी, विभूतिपुर थाना क्षेत्र से कई मोटरसाइकिल की लूट आदि की घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार किया। गिरफ्तार अभियुक्त से बड़ी संख्या में चोरी के जेवरात एवं मोटरसाइकिल बरामद किया गया। जो सीमावर्ती दलसिंहसरायपुर थाना क्षेत्र के चोरी के थे। गिरफ्तार अभियुक्तों पर मंसूरचक दलसिंहसराय विभूतिपुर थाना में आधे दर्जन से अधिक मामला दर्ज है। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों को सोमवार को बेगूसराय न्यायालय भेज दिया। उक्त चोरों की गिरफ्तारी से मंसूरचक के व्यवसायियों में हर्ष देखने को मिल रहा है।

भारी मात्रा में शराब समेत 08 मोटरसाइकिल वाहन जप्त

- शराब के अलग अलग मामले में दो शराब तस्कर गिरफ्तार
- मादक पदार्थ मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

मधुबनी जयनगर थाना पुलिस के शराब के अलग अलग मामले में करवाई करते हुए भारी मात्रा में कुल 2466 बोतल शराब समेत दो 08 मोटरसाइकिल वाहन के साथ दो शराब तस्कर को।

गिरफ्तार किया गया। वही पुलिस द्वारा तीसरे मामले में करवाई करते हुए मादक पदार्थ मामले के एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया। पुलिस के द्वारा शराब मामले समेत मादक पदार्थ मामले के एक आरोपी की गई गिरफ्तारी करवाई को लेकर थाना अध्यक्ष अमित कुमार के द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक शराब मामले एक मामले में थाना क्षेत्र में पुलिस पदाधिकारी मुकेश कुमार और पैंथर पार्टी एवं सशस्त्र पुलिस बल के द्वारा चार मोटरसाइकिल पर लदी भारी मात्रा शराब की खेप को बरामद किया गया। शराब लदी मोटरसाइकिल को जप्त कर आगे की करवाई हेतू थाना लाया गया।

जप्त शराब में तीन सौ एम एल का 1530 बोतल कुल 459 लीटर नेपाली देशी शराब है। मामला दर्ज कर शराब तस्करों की पहचान हेतू आगे की करवाई की जा रही है। वही शराब के दूसरे मामले में पुलिस पदाधिकारी रौशन कुमार और पैंथर पार्टी एवं सशस्त्र पुलिस बल द्वारा थाना क्षेत्र में गस्ती के दौरान थाना क्षेत्र कब फरदाही बांध के पास से चार मोटरसाइकिल पर लदी भारी मात्रा शराब की खेप के साथ मामले में दो शराब तस्कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया।

शराब लदी वाहनों को जप्त कर मामले में गिरफ्तार आरोपी को आगे की करवाई हेतू थाना लाया गया। मामले में गिरफ्तार आरोपी में थाना क्षेत्र खैरामठ(ग)गांव निवासी इन्द्रजीत कुमार एवं देवधा थाना क्षेत्र के अकौन्हा निवासी मो.रामजानी बताया जाता है।

मामला दर्ज जप्त शराब मामले अन्य शराब तस्करों की पहचान हेतू आगे की करवाई की जा रही है। जप्त शराब में तीन सौ एम एल का 900 बोतल नेपाली देशी शराब और 36 बोतल बियर की बोतलें है।

दोनों शराब मामले में कुल 08 मोटरसाइकिल और कुल 2466 बोतल नेपाली देशी शराब और बियर की बोतलें शामिल है।

वही तीसरे मामले कांड संख्या 61/23 मादक पदार्थ के पूर्व मामले के एक आरोपी को पुलिस बल द्वारा गिरफ्तार किया गया गिरफ्तार आरोपी थाना क्षेत्र के पिपरा टोल निवासी बलराम यादव बताया जाता है। गिरफ्तार आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

संक्षिप्त खबरें

देसी कट्टा के साथ युवक हुआ गिरफ्तार

भागलपुर। जगदीशपुर थाना पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान एक युवक को देसी कट्टा तथा एक जिंदा कारतूस के साथ रंगेहाथ गिरफ्तार किया है, साथ ही एक मोटरसाइकिल भी जप्त किया गया है। मामले को लेकर बताया जा रहा है कि देर रात्रि थाना क्षेत्र के सनहौला मोड़ पर एक बाइक को रोक कर तलाशी ली गई तो बाइक सवार बांका जिला अंतर्गत रजौन थाना क्षेत्र के लोढिया गोपालपुर के विपिन यादव के पुत्र कुंदन कुमार के पास से एक देसी कट्टा व एक जिंदा गोली बरामद किया गया। इसी दौरान बाइक पर सवार अन्य दो युवक मौके से भागने में सफल हो गया। वही पुलिस ने फरार दोनों युवकों की पहचान रजौन थाना क्षेत्र के कठौन गांव के गोल्डन दास व चकफरिया गांव के मदन कुमार हरिजन के रूप में की है। वही पुलिस फरार हुए अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए दबिश देने की कवायद शुरू कर दी है। वही पुलिस ने गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई पूरी कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

पत्नी ने अपने पति सास और ससुर पर दर्ज कराई प्राथमिकी

हवेली खड़गपुर। थाना क्षेत्र के बनगामा पंचायत अंतर्गत लौहरा गांव में एक महिला ने घरेलू हिंसा मारपीट और प्रताड़ना करने को लेकर अपने ही पति सास और ससुर के खिलाफ एक आवेदन थाना को देकर प्राथमिकी दर्ज कराई है। अपने आवेदन में उद्देश्य मांझी की पत्नी कंचन देवी ने कहा है कि उसका पति उद्देश्य मांझी ससुर पांचों मांझी तथा सास शीला देवी आए दिन उसके साथ मारपीट करते हैं बार-बार छोटी सी बात प्रताड़ित करते हैं। आवेदन में कहा गया है कि तीन-चार दिन तक कमरे में बंद कर रखता है मेरा छोटा बच्चा है वही कमरे में बंद करने के कारण मेरे बच्चे को तकलीफ होती है प्रभारी थाना अध्यक्ष कीर्ति कमल ने बताया कि महिला के आवेदन पर उनके पति सास और ससुर के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है पुलिस मामले की छानबीन रही है।

लखनपुर का दौरा का क्षेत्रीय विधायक ने ग्रामीणों से लिया फीडबैक

तारापुर। तारापुर थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत मानिकपुर अंतर्गत मुस्लिम बहुल क्षेत्र लखनपुर का दौरा क्षेत्रीय विधायक राजीव कुमार सिंह ने किया जहां विधायक ने ग्रामीणों से बातचीत कर उनकी समस्याओं की जानकारी ली इस दौरान ग्रामीणों ने विधायक को क्षेत्र में साफ सफाई बिजली पक्की सड़क वाले आदि समस्याओं से अवगत कराया साथ ही ग्रामीणों ने गांव के बीचों-बीच बीच गुजरने वाली दरगाही नदी के सफाई का अनुरोध किया। ग्रामीणों ने प्रधानमंत्री आवास योजना से संबंधित समस्याओं से भी विधायक को अवगत कराया। ग्रामीणों की समस्या से रूबरू होते हुए विधायक ने तत्काल संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को ग्रामीण क समस्या के समाधान का निर्देश दिया है।

14 जून से दस बजे खुलेगा हरि सिंह महाविद्यालय

हवेली खड़गपुर। हरि सिंह महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य ने एक सूचना संख्या 38/2023 जारी कर महाविद्यालय को 10:00 बजे पूर्वाहन से खोलने का निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय में नामांकन लेने वाले छात्र-छात्राओं की समस्या को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। प्रभारी प्राचार्य ने बताया कि बीए पार्ट01- वर्ष2023 - 2027 में नामांकन के लिए छात्र छात्राओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बुधवार 14 जून 2023 से महाविद्यालय को 10:00 बजे से खोला जाएगा।

निक्षय मित्र योजना के तहत गोद लिए पांच टीबी रोगियों के बीच किया गया पोषाहार का वितरण

पूर्णिया/ बीकोठी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बी. कोठी में सहायक चिकित्सा पदाधिकारी डॉ के के शर्मा की अध्यक्षता में प्रखंड के पांच टीवी रोगियों के बीच टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत पोषण सहायता के लिए निश्चय मित्र के द्वारा पोषाहार वितरण किया गया। बताते चले कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बड़हरा कोठी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अजय कुमार निश्चय मित्र बनते हुए समाज को एक प्रेरणा दिया है। निक्षय मित्र बनते हुए डॉ अजय कुमार दो टीबी रोगियों क्रमशः बड़हरा पंचायत निवासी कृष्ण आनंद राम एवं ठाड़ी पंचायत निवासी शंकर किस्कू को गोद लिया। यक्ष्मा सहायक श्री कमल चौधरी दो टीबी रोगियों क्रमशः सुखसेना पंचायत निवासी संजय मुर्मू और अर्बन्ना चकला निवासी मंजुला देवी को गोद लिया। वरिया यक्ष्मा प्रयोगशाला पर्यवेक्षक श्री दिलीप कुमार सिंह एक टीबी रोगी सुखसेना पंचायत के सभागाछी टोला निवासी महेंद्र कुमार मंडल को गोद लिया है। इस अवसर पर सहायक चिकित्सा पदाधिकारी डॉ के के शर्मा ने कहा कि, टीबी रोगियों को छह महीने तक पौष्टिक आहार की भी व्यवस्था की जाएगी ताकि रोगी जल्द से जल्द ठीक होकर अपना सुखमय जीवन परिवार के साथ बिता सकें। और उन्होंने आम जनों को संबोधित करते हुए कहा कि, टीबी रोगियों को लगातार छह माह तक सरकारी दवाई का सेवन करना और साथ में पौष्टिक भोजन लेना बेहद जरूरी है।

अज्ञात अपराधियों ने एक युवक को उतारा मौत के घाट

रामपुरखुर्द चकदाहा बहियार में एक युवक की हत्या, इलाके में फैली सनसनी

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले भर में अपराधी अपनी करतूतों को अंजाम देने से बाज नहीं आ रहे इसी कड़ी में एक ओर अपराधी द्वारा आए दिन क्षेत्र के कई इलाकों में गोलीबारी की घटना लगातार अंजाम दे खूनी खेल को दिनदहाड़े आजम दे रहे है जो थमने का नाम नही ले रहा है। एक तरफ जहां वरीय पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार डीआईजी विवेकानंद जैसे प्रतिष्ठित पुलिस अफसर भागलपुर की कमान संभालने के साथ ही अपराधियों पर नकेल कसने के लिए कई हथकंडे अपना रहे हैं, वही क्षेत्र में चल रहे अपराधिक घटनाओं पर नकेल कसने की जद्दोजहद में जिले परिक्षेत्र के सभी थानाध्यक्षों के साथ लगातार बैठक कर रणनीति बनाई जा रही है तो वहीं दूसरी ओर अपराधी अपने अपराधिक घटना को अंजाम देने से बाज नहीं आ रहे है। जिले में फिर एक बार गोलीबारी की घटना घटित होने का मामला सामने आया है। नाथनगर थाना क्षेत्र के रामपुरखुर्द गांव के मधुसुदनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत चकदाहा बहियार में अज्ञात अपराधियों ने एक युवक को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया और बीच बहियार में मृतक युवक के शव को फेंक दिया है। वही अहली सुबह गांव वालों के शोर-शराबे से उक्त घटना की जानकारी का पता चल पाया है, कि किसी युवक को गोली मारकर खेत में फेंक दिया गया है। कुछ देर बाद उक्त मृत युवक की पहचान नाथनगर के रहने रामपुरखुर्द पंचायत के रामपुर हरिजन टोला के अनिल दास के 32 वर्षीय पुत्र नवीन कुमार के रूप में हुई है। घटना को लेकर बताया जाता है कि नवीन सेंटरिंग मजदूरी का काम किया करता था, उनके तीन बच्चे है। वही घटना को लेकर उसकी पत्नी ने बताया कि हमारे पति 12 जून को 5:00 बजे शाम से ही गायब थे और मोबाइल लेकर निकले थे, हम लोगों को जब पता चला तो घटनास्थल पर आकर देखते हैं कि उसकी गोली मारकर किसी ने हत्या कर दी है, और उसके पास जो मोबाइल था वह भी नहीं है, साथ ही उन्होंने कहा हम लोग रात भर अपने पति को ढूंढ रहे थे। हमें क्या पता अपराधियों ने हमारे पति के साथ यह कांड कर दिया है, जबकि मेरे पति से किसी की कोई दुश्मनी नहीं थी। वही मृतक 32 वर्षीय नवीन कुमार अपने पीछे अपनी पत्नी और 3 बच्चे को छोड़कर चला गया है। वही घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची स्थानीय थाना पुलिस ने मृतक नवीन के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है, और घटना के शिनाख्त करने में जुट गई है। वही घटना से आहत हुए परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। फिलहाल हत्या के कारणों का पता नहीं चल पाया है, जबकि हत्या होने से इलाके में सनसनी फैल गई है। वही घटना को लेकर सिटी डीएसपी अजय चौधरी ने बताया कि प्रथम दृष्टि में यह प्रतीत हो रहा है कि सेंट्रीग मिस्त्री नवीन से कुछ लोगों ने पैसे और मोबाइल सिम छिनतई की घटना को अंजाम देने की बात कही है और उसी में अपराधियों और नवीन में झड़प हुई है, जिसके चलते उसको गोली मारी गई है। घटना की जांच में पुलिस जुट गई है, वही घटना स्थल व आसपास के क्षेत्र इलाके की जांच व अपराधियों की निशानदेही को लेकर डॉग स्क्वायड व फॉरेंसिक जांच टीम की मदद के साथ घटनास्थल की जांच की जा रही हैं, उम्मीद है जल्द सब कुछ सामने होगा।

तिथि बढ़ाने की मांग हेतू अभाविप ने परीक्षा नियंत्रण की अपील

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भागलपुर इकाई द्वारा पार्ट 1 की परीक्षा तिथि को बिना विलंब शुल्क के आगे बढ़ाने व पीजी नामांकन में पुनः नये छात्रों को फॉर्म भरने का मौका देने की मांग को लेकर एक प्रतिनिधि मंडल परीक्षा नियंत्रक पदाधिकारी से मुलाकात की। मामले को लेकर विश्वविद्यालय संयोजक आशुतोष सिंह तोमर ने बताया कि इस मामले में परीक्षा नियंत्रक ने सकारात्मक निर्णय लेते हुए फॉर्म भरने हेतु तिथि विस्तार के नोटिफिकेशन जारी करने की बात कही है। छात्र नेता की मांग थी कि 5 जून से फॉर्म भरा जाना था, लेकिन तिथि जारी होने के 2 दिन तक पोर्टल नहीं खुला था इसलिए छात्र हित को ध्यान में रखते हुए तिथि को बढ़ाया जाए। वहीं पीजी छात्रों को नामांकन में पुनः फॉर्म अप्लाई करने दिए जाने की मांग को लेकर भी डीएसडब्ल्यू के पास पहुंचे थे और नामांकन में नये छात्रों को मौका दिए जाने की मांग की। जिसपर डीएसडब्ल्यू ने कहा की नामांकन प्रक्रिया तय समय में पूरा करना है, इसलिए तिथि को बढ़ाना संभव नहीं है, लेकिन छात्र नेताओं ने जब ये कहा की अभी भी कई छात्र ऑनलाइन प्रक्रिया से कम्प्यूज होकर अप्लाई नहीं कर पाए है, तो उक्त मामले पर डीएसडब्ल्यू ने कहा है कि पीजी के फर्स्ट लिस्ट के जारी होने के बाद पोर्टल खुलेगा तो उसमे फ्रेश कैंडिडेट्स को भी अप्लाई का मौका दिया जायेगा। जिसपर छात्र नेताओं ने भी सहमति जताई है। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल में विभाग सह संयोजक कुणाल पांडे, जिला संयोजक रोहित राज एवं रोहित कुमार सहित अन्य छात्रनेता मौजूद थे।

राहुल गांधी देश को जोड़ने का करते हैं काम तो वही भाजपा फैलाती है धार्मिक उन्माद : प्रवीण सिंह

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। कांग्रेस नेता प्रवीण सिंह कुशवाहा ने अपने आवास पर आयोजित प्रेसवार्ता के क्रम में विपक्ष भाजपा नेता के दिये दाढ़ी पर बयान को लेकर उन्होंने कहा कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दंगाई मानसिकता के हैं, इसलिए तो उन्हें राहुल गांधी की दाढ़ी को देखकर ओसामा बिन लादेन की याद आने की बात कही हैं। उन्होंने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पर कटाक्ष करते हुए कहा कि दाढ़ी तो भारतीय सभ्यता और संस्कृति का द्योतक है। वही उन्होंने सम्राट चौधरी के दाढ़ी को लेकर सवाल करते हुए कहा कि सम्राट चौधरी को अपनी दाढ़ी की क्वालिटी को भी बताना चाहिए कि उनकी दाढ़ी आशाराम की है, या फिर हाफिज सईद के स्टाइल की। साथ ही उन्होंने कहा कि दाढ़ी तो साधु-संत भी रखते हैं। भारत में तो सिक्ख समुदाय में दाढ़ी रखने की परंपरा तो पुरानी और धार्मिक है। दाढ़ी को लेकर दिये गये बयान से सारे हिन्दुस्तान के लोगों को जलील करने का काम किया है। दाढ़ी को लेकर दिये गये बयान के लिए उन्हें देश की जनता से माफी मांगना चाहिए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने राहुल गांधी की दाढ़ी पर बयान देकर सारे दाढ़ी रखने वालों को आतंकवादी से संबोधित करने का काम किया है, और अपमानित किया है। साथ ही उन्होंने कड़े शब्दों में कहा था सम्राट चौधरी बड़े ही ज्ञानी पुरुष हैं तो जरा ये बता दें कि अपने विधानसभा क्षेत्र में प्रत्येक प्रखंड में कितनी यूनिवर्सिटी और कॉलेज खुलवाये हैं, जो वह अब पूरे बिहार के पंचायत लेवल पर यूनिवर्सिटी और कॉलेज खुलवाने चले हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य पर जोर देकर कहा कि सारा हिन्दुस्तान जानता है कि भाजपा धर्म के नाम पर केवल लड़वाने का काम करती है और उस आग में अपनी रोटी सेंकती है। इसका जबाव जनता समय आने पर जरूर देगी।

मीडिया से बात करते हुए बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रवीण सिंह कुशवाहा ने राहुल गांधी के बारे में कहा कि वह हिंदुस्तान के लोगों से बेइंतहा मोहब्बत करते हैं, जिसके चलते उन्होंने 4000 किलोमीटर भारत जोड़ो पदयात्रा की। वहीं भारतीय जनता पार्टी लोगों में उन्माद और जातिवाद फैलाने का काम करते हैं, यह कहीं से सही नहीं है, आगामी 2024 के चुनाव में जनता इसका जवाब देगी।

कांवरिया पथ में जिला प्रशासन के निर्देशन में अतिक्रमणकारियों पर चला बुलडोजर

शाहकुंड (भागलपुर)। सुलतानगंज में विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला की तैयारी को लेकर जिला प्रशासन के निर्देश पर अंचल अधिकार अमित राज, थानाध्यक्ष प्रिय रंजन के नेतृत्व में कांवरिया पथ में बिहार सरकार के जमीन पर अबैध कब्जा कर रह रहे लोगों पर जिला प्रशासन का बुलडोजर चल पड़ा है। स्थानीय जिला प्रशासन व भारी संख्या में पुलिस बलों की मौजूदगी में बुलडोजर के माध्यम से सैकड़ों अतिक्रमण कर संचालित दुकानें को ध्वस्त कर जमीन मुक्त कराया गया। इस दौरान अंचल अधिकारी अमित राज ने बताया कि श्रावणी मेला तैयारी को लेकर जिला प्रशासन के निर्देश पर कांवरिया पथ में जबरन बिहार सरकार के जमीन पर रह रहे लोगों द्वारा अतिक्रमण किये जमीन पर रहने वाले लोगों को बुलडोजर के माध्यम से लगी दुकान को हटाते हुए अतिक्रमण मुक्त कार्य किया जा रहा है, और शहर में अतिक्रमण मुक्त कब किया जाएगा के सवाल पर कहा कि उसकी तैयारी की जा रही है।

जनसेवक नियुक्ति की मांग को लेकर किया धरना सह हल्ला बोल प्रदर्शन जारी

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। बिहार प्रदेश किसान सलाहकार संघ जिला इकाई भागलपुर व बिहार राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ के बैनर तले अपनी मांगों को लेकर राज्य स्तरीय एक दिवसीय धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने अपनी मांगों को लेकर जिला कृषि कार्यालय संयुक्त कृषि भवन भागलपुर परिसर में आवाज बुलंद करते हुए जमकर प्रदर्शन किया। वहीं प्रदर्शन के दौरान धरनार्थी किसान सलाहकार ने कहा है कि किसान सलाहकार को जनसेवक के पद पर जल्द से जल्द नियुक्त किया जाए और उसे उसका मूल वेतन दिया जाए साथ ही साथ इस कार्य को जल्द से जल्द करने की बात कही है। प्रदर्शन कार्यक्रम में जिला परिक्षेत्र के कई प्रखंडों से आये दर्जनों किसान सलाहकार मौजूद थे। वही धरनार्थी किसान सलाहकार के जिला अध्यक्ष जितेंद्र कुमार ने कहा कि हम लोग विगत 13 वर्षों से किसान सलाहकार के रूप में लोगों की सेवा कर रहे हैं, लेकिन हम लोगों को वेतन के रूप में मात्र 13 हजार रुपए मिलते हैं, जिससे घर चलाना काफी मुश्किल हो रहा है। वही बच्चों के स्कूल व ट्यूशन फी देने में भी काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हम लोगों की मांग है कि जल्द से जल्द हम लोगों को जनसेवक के पद पर बहाल कर क्षेत्र कार्य में नियुक्त किया जाए, जिससे हम लोगों की आमदनी भी बढ़ेगी और हम लोग अपने विभाग के लिए दिल से काम भी कर पाएंगे।

सारण में प्रखंडस्तर पर हाथीपाँव के मरीजों के बीच एमएमडीपी किट का हो रहा वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। फाइलेरिया एक गंभीर बीमारी जिसे हाथीपांव के नाम से भी जाना जाता है। यह क्यूलेक्स मच्छर के काटने से होता है। इस बीमारी से संक्रमित होने के बाद लोगों में कई वर्ष के बाद यह हाथीपांव, बढ़े हुए हाइड्रोसील, महिलाओं के स्तनों में सूजन इत्यादि के रूप में लक्षण दिखाई देता है। जो कालांतर में मरीज को दिव्यांगता की ओर ले जाता है। जिसे लोगों को बचाने और फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर सरकार और विभाग पूरी तरह से तत्पर है। जिसको लेकर सारण जिले के सभी प्रखंडों में मोरबिडिटी मैनेजमेंट एंड डिसेबिलिटी प्रीवेंशन (एमएमडीपी) क्लिनिक खोला जा रहा है। साथ ही, फाइलेरिया के हाथीपांव मरीजों के बीच एमएमडीपी किट का वितरण किया जा रहा है। ताकि, किट का इस्तेमाल कर फाइलेरिया मरीज अपनी बीमारी की रोकथाम कर सकें। इसको लेकर स्वास्थ्य विभाग के द्वारा प्रखंड स्तर पर माइक्रोप्लान तैयार किया गया। डीएमओ डॉ दिलीप कुमार सिंह ने बताया कि फाइलेरिया मरीजों की देखभाल को स्वास्थ्य विभाग एमएमडीपी किट मुफ्त में उपलब्ध करायी जा रही है। किट के प्रयोग से फाइलेरिया मरीजों को काफी राहत मिलती है। उन्होंने बताया कि फाइलेरिया का संक्रमण मच्छरों के काटने से फैलता है। सामान्यतरू यह संक्रमण शुरूआती बचपन में ही हो जरूरी नहीं, यह बीमारी कई वर्षों बाद प्रकट होती है। इस प्रकार, सामान्य एवं स्वस्थ्य दिखनेवाले व्यक्ति को कुछ सालों बाद पैरों , हाथों एवं शरीर के अन्य भाग में अत्यधिक सूजन उत्पन्न होने लगती है।

जिला वेक्टर जनित सलाहकार सुधीर कुमार ने बताया कि इसका प्रभाव अस्वस्थ्य त्वचा पर होता है। इसके कारण प्रभावित अंगों में दर्द, लालपन एवं रोगी को बुखार हो जाता है। हाथ-पैर, अंडकोष व शरीर के अन्य अंगों में सूजन के लक्षण होते हैं। प्रारंभ में या सूजन अस्थायी हो सकता किन्तु बाद में स्थायी और लाइलाज हो जाता है। वहीं गंभीर रूप से पीड़ित फाइलेरिया मरीजों को एमएमडीपी किट निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। फाइलेरिया मरीजों को एमएमडीपी किट के इस्तेमाल की जानकारी दी जा रही है। साथ ही, उन्हें फाइलेरिया के प्रभावित अंगों जैसे हाथों और पैरों की साफ सफाई के साथ उन्हें व्यायाम की भी जानकारी दी गई। किट में एक छोटा टब, मग, साबुन, एंटी सैप्टिक क्रीम, सूती तौलिया इत्यादि सामान शामिल हैं।

रेशम कीट पालन करके पाएं दुगनी आमदनी

मुजफ्फरपुर। स्रआरडीएस कॉलेज में लगाए गए खादी मेला और उद्यमी बाजार में उद्योग विभाग के हथकरघा एवं रेशम निदेशालय द्वारा अंडी रेशम उत्पादन की प्रक्रिया और विभाग से दी जाने वाली सहायता पर प्रदर्शनी सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में रेशम निदेशालय द्वारा बताया गया कि किस तरह से सब्जी के उत्पादन के साथ-साथ रेशम के कोकून का प्रोडक्शन किया जा सकता है। इससे किसानों को दोहरा लाभ होगा। सहायक उद्योग निर्देशक (रेशम) धर्मेंद्र कुमार सिंह ने कार्यशाला में बताया कि सरकार द्वारा रेशम का उत्पादन करने पर कई प्रकार के प्रोत्साहन दिए जाते हैं। बिहार में रेशम के कोकून की काफी अच्छी मांग है। भागलपुर का रेशमी वस्त्र विश्व प्रसिद्ध है। प्रदेश के कई जिलों में रेशम के कीट का पालन किया जाता है और उनसे प्राप्त कोकून से रेशम के धागे तैयार किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि उत्पादक किसान जिला उद्योग केंद्र में आएं और नई तकनीकी की जानकारी हासिल करके रेशम के कीट का पालन प्रारंभ करें जिससे उन्हें 2 गुना लाभ होगा। कार्यक्रम में जिला उद्योग विस्तार पदाधिकारी अमरेंद्र कुमार खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के जिला महाप्रबंधक कमलेश कुमार त्रिवेदी सेरीकल्चर के महेश कुमार प्रसाद राजेश कुमार श्रीवास्तव चंद्र बोस चौधरी नरेश पासवान एवं रेशम के अनेक कीट पालक किसानों ने हिस्सा लिया।

कार से 10पेटी शराब बरामद

मुजफ्फरपुर। स्रगायघाट थाना अन्तर्गत बेनीबाद चौक के समीप पुलिस ने एक कार से दस पेटी विदेशी शराब बरामद किया है। वहीं मौके से कारोबारी व चालक भागने में सफल रहे। बेनीबाद ओपी प्रभारी अध्यक्ष रघुनाथ पासवान ने बताया की बेनीबाद चौक के समीप एनएच 57 पुलिस गस्त दल को देख एक कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई।

केंद्र सरकार की तानाशाही खिलाफ 15 जून को धरना प्रदर्शन

बोचहा। 15 जून के धरना की तैयारी में जुटे नेता मंगलवार को प्रचार गाड़ी को प्रत्येक गांव मोहल्ले में संदेश लेने देने के लिए महागठबंधन के नेताओं ने गाड़ी को रवाना किया। जो हर चौक चौराहे गली मोहल्ले में जाकर 14 जून की शाम तक दर्जनों नुक्कर सभा करेंगे। अन्य कई गाड़ियों पर नेताओं की टीम लोगों से जनसंपर्क भी कर रहे है साथ ही गांव में छोटी छोटी मिटींग कर रहे हैं। इस दौरान जदयू प्रखंड अध्यक्ष श्यामसुंदर पटेल ने कहा कि हजारों की संख्या में लोग भाग लेंगे और धरना स्थल पर पहुंचकर अपनी बातों को रखेंगे केंद्र सरकार की तानाशाही रवैया का उखाड़ फेंकने का काम करेंगे। जनसंपर्क मे महागठबंधन दल के प्रखंड अध्यक्ष रमाकांत सहनी, श्यामसुंदर पटेल, बिन्देश्वर साह, विरेन्द. पासवान, कुंदन कुमार, राजीव कुमार सिंह, अन्य लोग थे।

श्रावणी मेला के मद्देनजर नवनिर्माण निरक्षण भवन का हुआ विधिवत शिलान्यास

प्रात : किरण संवाददाता

शाहकुंड (भागलपुर)। सुलतानगंज के स्टेशन रोड के समीप केला गुदाम में बिहार सरकार भवन निर्माण विभाग के द्वारा डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से निरक्षण भवन का निर्माण कार्य होना है, इसी कड़ी में स्थानीय विधायक प्रो. ललित नारायण मंडल व कार्यपालक अभीयंता विनय प्रसाद सिंह के द्वारा विधिवत रूप से भुमि पुजन करते हुए भवन निर्माण के ईंट की नीव रखकर निर्माण कार्य आरंभ किया। इस दौरान स्थानीय विधायक प्रो. ललित नारायण मंडल ने कहा कि बिहार सरकार के द्वारा अजगैवीनाथ धाम में कांवरियों की सुविधा एंव प्रशासनिक पदाधिकारियों के ठहराव को लेकर डेढ करोड़ रुपये की लागत से निरक्षण भवन की तैयारी को लेकर निर्माण कार्य शुरू कर दी गई है। भवन निर्माण के बाद बाहर से आगन्तु श्रद्धालुओं को कोई परेशानी नही होगी, जिसके लिए बिहार सरकार के सौजन्य से आगन्तु श्रद्धालुओं सहित अधिकारी स्तर के लोगों के लिए ठहराव व्यवस्था की पहल शुरू करने की दिशा में भवन निर्माण कार्य की शुरूआत हुई है। वही कार्यपालक अभीयंता भूमि पूजन कार्यक्रम के बाद विनय कुमार सिंह ने कहा कि डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से बिहार सरकार के निर्देश पर नव निर्मित निरक्षण भवन की तैयारी युद्ध स्तर से शुरू कर दी गई है, जल्द ही आगन्तु श्रद्धालुओं को इसका लाभ मिलेगा। इस दौरान जदयू प्रखंड अध्यक्ष सदानंद कुमार, महागठबंधन के नेता सहित दर्जनों कर्मचारी मौजूद थे।

विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला को लेकर अनुमंडल पदाधिकारी ने जनप्रतिनिधियों के साथ किया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर) 13 जून। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला को लेकर अनुमंडल सभागार तारापुर में एसडीओ राकेश कुमार रंजन की अध्यक्षता में जनप्रतिनिधियों के साथ विशेष बैठक आयोजित किया गया। बैठक के दौरान बारी बारी से मेला को सफल बनाने को लेकर सभी जनप्रतिनिधियों ने अपनी अपनी बातों को विस्तार पूर्वक रखा। वहीं पिछले वर्ष के भांति इस वर्ष श्रद्धालुओं के लिए बेहतर से बेहतर व्यवस्था हो को लेकर सभी लोगों ने अपना राय रखा। मुंगेर जिला के अंतर्गत पड़ने वाले 26 किलोमीटर की दूरी कमरांय से कुमरसार के बीच बिजली पेयजल शौचालय सहित कच्ची कमरिया पथ पर बालू गिराने से लेकर बेहतर चिकित्सा व्यवस्था सुनिश्चित करने को लेकर लोगों ने अपना पक्ष रखा। कावंरिया पथ पर गोगाचक मनिया एवं कुमरसार सरकारी धर्मशाला का रंग रोगन इत्यादि विषयों पर मेला प्रारंभ होने के 10 दिन पूर्व सभी तरह के काम पूरे हो जाने को लेकर चर्चा की गई। बंद पड़े सरकारी जीपीटी चापानल एवं नए जीपीटी चापाकल लगाने को लेकर मेला से पहले ही जगह को चिन्हित करने पर भी विचार विमर्श किया गया। बैठक के दौरान अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार रंजन ने कहा की श्रावणी मेला को देखते हुए कंट्रोल रूम तारापुर थाना को बनाया जाएगा। कंट्रोल रूम में अग्निशमन गाड़ी मजिस्ट्रेट पर्याप्त मात्रा में पुलिस के जवान तैनात रहेंगे। 26 किलोमीटर की दूरी में जगह जगह चिकित्सा शिविर पुलिस चौकी की व्यवस्था बहाल की जाएगी। जहां शिफ्ट वाइज पदाधिकारी से लेकर पुलिसकर्मी अपने ड्यूटी का बेहतर निर्वहन करेंगे। मुख्य रूप से श्रावणी मेला के दौरान कच्ची कमरिया पथ पर बिजली की बेहतर व्यवस्था बहाल हो इस पर विशेष रूप से लोगों ने बल दिया। बैठक में मेला प्रारंभ होने के पूर्व पूरे कमरिया पद का औचक निरीक्षण भी होना है जो समय से पूरी कर ली जाएगी।

बैठक में मुख्य रूप से डीएसपी पंकज कुमार अपर एसडीओ वसीम अकरम डीसीएलआर दीपक कुमार प्रखंड विकास पदाधिकारी संजय कुमार अंचलाधिकारी बंदना कुमारी थाना अध्यक्ष राजेश कुमार रंजन लोजपा के राष्ट्रीय सचिव मिथिलेश कुमार सिंह चंद्रर सिंह राकेश सांसद प्रतिनिधि चंद्रशेखर चौधरी अधिवक्ता हरे कृष्ण वर्मा धर्मवीर भारती मुखिया कासिम रजा सहित दर्जनों जनप्रतिनिधि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

कालाजार रोगी खोज अभियान के लिए 13 प्रखंडों के 132 गांवों का किया गया चयन

पूर्णिया। जिले में सात दिवसीय कालाजार मरीजों की खोज अभियान का शुभारंभ आगामी 20 जून से शुरू होने वाला है। इस अभियान में विशेष रूप से आशा कार्यकर्ता डोर टू डोर भ्रमण कर कालाजार के संभावित मरीजों की खोज करेंगी। क्षेत्र भ्रमण के दौरान आशा कार्यकर्ता 15 दिन या इससे अधिक समय से बुखार पीड़ित वैसे मरीज जिनका बुखार मलेरिया व एंटीबायोटिक दवाओं के सेवन के बावजूद ठीक नहीं हुआ हो। वैसे लोगों को कालाजार बीमारी से संबंधित जांच के लिए प्रेरित करने का काम करेंगी। जिला वेक्टर बॉर्न पदाधिकारी डॉ राजेन्द्र प्रसाद मंडल ने बताया ने बताया कि कालाजार रोगी खोज अभियान के लिए जिले के 13 प्रखंडों के 132 गांवों का चयन किया गया है। जहां हाल के वर्षों में कालाजार के नए मामले या संभावित मरीज सामने आया है। कालाजार खोज अभियान के तहत 178232 जनसंख्या वाले 34991 चिह्नित घरों का सर्वे किया जाना है। इसके लिए 146 आशा कार्यकर्ता एवं 82 आशा फैसिलिटेटर को लगाया जाएगा। जिला वेक्टर बॉर्न पदाधिकारी (डीवीबीओ) डॉ राजेन्द्र प्रसाद मंडल ने बताया कि राज्य मुख्यालय स्थित कार्यालय में वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अपर निदेशक सह एसपीओ डॉ अशोक कुमार ने पत्र जारी कर जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया है। कालाजार प्रभावित गांवों में आगामी 20 जून से डोर टू डोर भ्रमण कर मरीजों की खोज होनी है। जिसके लिए आशा कार्यकताओं के प्रशिक्षण से लेकर अभियान के सफल संचालन तक का गाइड लाइन जारी किया गया है। जिसमें प्रचार प्रसार के लिए माइकिंग, बैनर पोस्टर के अलावा फ्लैक्स के संबंध में दिशा निर्देश दिया गया है। कालाजार लक्षण वाले मरीजों की सरकारी अस्पतालों में आरके-39 किट के द्वारा जांच की जाएगी। वहीं जिन लोगों का पूर्व में कालाजार का इलाज हो चुका हो या उनमें बुखार के साथ कालाजार के लक्षण दिखाई पड़े तो उनकी बोन मैरो व स्पीलिन एसपिरेशन जांच के लिए सदर अस्पताल में रेफर किया जाएगा।

जिला वेक्टर जनित नियंत्रण पदाधिकारी (डीवीबीसीओ) रवि नंदन सिंह ने बताया कि कालाजार रोग को पूर्णतः खत्म करने को लेकर विभागीय स्तर से लगातार प्रयास किया जा रहा है। जिसके लिए ग्रामीण चिकित्सकों द्वारा संभावित मरीजों को जांच के लिए सरकारी अस्पताल भेजे जाने एवं व्यक्ति में रोग की पुष्टि होने पर उन्हें प्रोत्साहन राशि के रूप में 500 रुपये देने का प्रावधान है। क्योंकि कालाजार उन्मूलन में ग्रामीण इलाकों में कार्य करने वाले ग्रामीण चिकित्सकों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है। आगे उन्होंने यह भी बताया कि कालाजार मरीजों के इलाज की सुविधा जिले के सभी सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क उपलब्ध है। मरीजों को सरकारी अस्पतालों में इलाज कराने पर श्रम क्षतिपूर्ति के रूप में सरकार द्वारा 7100 रुपये की राशि दी जाती है। पोस्ट कालाजार डर्मल लीशमैनियासिस (पीकेडीएल) के मरीजों को पूर्ण उपचार के बाद सरकार द्वारा 4000 रुपये श्रम क्षतिपूर्ति के रूप में दिया जाता है।

सलाहकार सोनिया मंडल ने बताया कि 15 दिनों से अधिक समय तक बुखार

संक्षिप्त खबरें

वंदे भारत ट्रेनें के सभी स्टाफ का भाजपा ने किया अभिनंदन

गया।पूर्ण रूप से रेल आत्म निर्भर की ओर बढ़ते कदम भारत का प्रतीक वंदे भारत ट्रेन जो पटना से रांची जाने के क्रम में गया जंक्शन पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया है।इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता,जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर ने ट्रेन के चालक एवं गार्ड सहित ट्रायल में अन्य रेलकर्मी को अभिनंदन कर स्वागत किया गया है।बंदे भारत ट्रेन भारत का स्वदेशी निर्मित ट्रेन का चलना गया वासियों के लिए सुखद का क्षण है देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी एवं रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव को कोटि कोटि बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मोदी के द्वारा 2014में शपथ लेने के बाद घोषणा किए थे की भारत आत्मनिर्भर बनेगा आज इसका प्रतिफल है स्वदेशी टेक्नोलॉजी के द्वारा ट्रेन चलाया जा रहा है गयाजी के महत्व को देखते हुए गया जंक्शन से प्रतिदिन चलना खुशी की बात है वंदे भारत ट्रेन के निर्माण में लगे सभी कर्मी को आज के आगमन एवं प्रस्थान के समय रेल अधिकारी एवं आर पी एफ के सुरक्षा अधिकारी भी मुस्तैद रहे।

अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ बुलंद हौसले के साथ महागठबंधन धरने मे शामिल होगी

गया जिला जनता दल यू अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के साथी बुलंद हौसले के साथ धरना में शामिल होगें।जिला अध्यक्ष विनोद कुमार ने बताया कि सभी सम्मानित साथी 15 जून 2023 को पूर्वाहन 10:00 बजे से अपने-अपने प्रखंड मुख्यालय पर प्रस्तावित धरना कार्यक्रम में गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराएं।आपकी उपस्थिति से केंद्र सरकार के खिलाफ आक्रोश स्पष्ट होगी। केंद्र सरकार जानबूझकर बहुसंख्यक समाज के लोगों के हित में कराए जा रही जातिगत गणना को न्यायालय का शरण लेकर स्थगित कराने का काले करतूत किया गया है।अति पिछड़ा परिवार के लोगों को स्थानीय निकाय चुनाव में मिल रही आरक्षण की सुविधा को समाप्त करने का भी भरपूर प्रयास किया गया है। प्रथम वर्ग से अष्टम वर्ग तक मिल रही प्रोत्साहन राशि बंद कर दी गई है।अन्य मुद्दों को लेकर प्रस्तावित धरना कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति अधिक से अधिक संख्या में दर्ज करानी है।

बाल श्रम उन्मूलन एवं शिक्षा की महत्ता के बारे में गया वासियों को जागरूक रथ को नगर आयुक्त ने किया रवाना

गया।विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर नगर आयुक्त, नगर निगम, गया, अभिलाषा शर्मा द्वारा 02 प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया है। इस अवसर पर श्रम संसाधन विभाग, गया के प्रतिनिधि श्रम अधीक्षक, गया, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, गया सदर, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, टनकुप्पा, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, टिकारी , गया नगर निगम के नगर प्रबंधक, शैलेंद्र सिन्हा, सहायक अभियंता, बिनोद प्रसाद सहायक अभियंता, गौतम कुमार लेखा अधिकारी एवं अन्य कर्मचारीगण एवं चाइल्ड लाईन, गया के प्रतिनिधि मौजूद थे।यह प्रचार वाहन गया नगर निगम कार्यालय से चाँद चौरा, दुर्गा स्थान, गेवल बीघा, पुलिस लाईन के बस्तियों से होते हुए गया रेलवे स्टेशन, डेल्हा, खखुर्रा, कुजापी, के बस्तियों में भी भ्रमण किया है प्रचार प्रसार के क्रम में श्रम संसाधन विभाग द्वारा निर्मित जिंगल बजाया गया, जिसमे बाल श्रम उन्मूलन एवं शिक्षा की महत्ता के बारे में गया वासियों को जागरुक कराया गया है । श्रम विभाग द्वारा पिछले 44 दिनों से बाल श्रम उन्मूलन हेतु पखवाड़ा चलाया जा रहा है एवंउपरोक्त प्रचार वाहन उसी कड़ी का हिस्सा है ।

भाजपा सरकार की पहचान खरीफ फसलों की बढ़ाई दाम

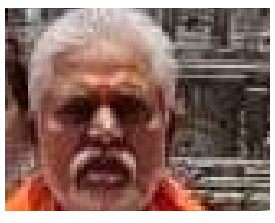

गया।बिहार भाजपा के वरीय नेता व पूर्व कृषि मंत्री डॉ प्रेम कुमार ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार की सोच किसानों का जब होगा उत्थान तभी तो भारत बनेगा फिर से महान है।किसान के चेहरों पर होगा मुस्कान,तभी तो होगा हमें भी स्वाभिमान है।2014-15 में धान का एमएसपी 1,360 था।मोदी जी ने 2023-24 में एमएसपी 2,183 किया।2014-15 में ज्वार का एमएसपी 1,400 था। 2023-24 में ज्वार का एमएसपी 3,180 हुआ है।2014-15 में बाजरा का एमएसपी 1,250 था, तो 2023-24 में एमएससी बढाकर 2,500 किया गया है।2014-15 में मक्का का एमएसपी रुपए 2,090 था 2023-24 में 3,846 एमएसपी मोदी सरकार ने किया।किसानोंका हो रहा है उत्थान,भाजपा सरकार की यही है पहचान है।

भोजपुर में कुंड से लटकन युवक कटा हुआ बरामद

दो दिन पूर्व आत्महत्या करने की जताई जा रही है आशंका, मौत का कारण स्पष्ट नहीं मामले की तफ्तीश में जुटी पुलिस

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के तरारी थाना क्षेत्र के धनगावां गांव में मंगलवार की सुबह पंखे की कुंडी से लटका एक युवक का शव बरामद हुआ है। शव कर मिलने से गांव एवं आसपास के इलाके में सनसनी फैल गई है। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय थाना घटनास्थल पर पहुंची और शव कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। जानकारी के अनुसार मृतक तरारी थाना क्षेत्र के धनगावां गांव निवासी अयोध्या प्रसाद गुप्ता का 25 वर्षीय पुत्र कृष्णा अयोध्या प्रसाद गुप्ता है। वह अपने पूरे परिवार के साथ मुंबई में रहकर प्राइवेट जॉब करता था। इधर मृतक के जीजा संतोष प्रसाद ने बताया कि वह पूरा परिवार कुछ वर्षो से मुंबई में रहकर काम करता था। उसकी शादी इसी वर्ष 14 अप्रैल को सहार थाना क्षेत्र के एकवारी गांव निवासी रीमा कुमारी से हुई थी।

लेकिन उसका गवना नहीं हुआ था। इसके बाद वह वापस मुंबई चला गया 10 दिन पूर्व मुंबई से वापस अपने गांव धनगावां लौटा था। उसने सोचा था कि मैं गांव भी घूम लूंगा और अपनी पत्नी का गवना करा कर वापस उसे मुंबई ले जाऊंगा। जिसको लेकर उसने रविवार को अपनी पत्नी रीमा कुमारी को फोन कर उससे बात की थी और उससे गवना कराने को लेकर कहा। जिसके बाद उसके ससुर ने कहा कि अभी दिन शुभ नहीं है। इसलिए अभी गवना नहीं होगा। जिसके बाद उसने फोन काट दिया। इसी बीच उसने पंखे के कुंडी से लटक कर खुदकुशी कर ली। इसके बाद उसके परिजन द्वारा उसके मोबाइल पर लगातार किया जा रहा था। लेकिन वह फोन नहीं उठा रहा था। जिसके बाद स्थानीय लोगों द्वारा फोन कर मुंबई में उसके परिजनों को सूचना दी गई के उनके बेटे ने खुदकुशी कर ली है। सूचना पाकर परिजन उसके जीजा संतोष कुमार को फोन कर इस घटना की जानकारी दी। सूचना पाकर संतोष कुमार उसके गांव धन्यवाद पहुंचे।इसके पश्चात उन्होंने इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी। जबकि मृतक में फांसी किस दिन व कब एवं किस कारण लगाई। यह अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सका है। लेकिन शव को देखने के बाद रविवार के दिन ही फांसी लगाने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण पूरी तरह स्पष्ट हो पाएगा। बताया जाता है कि मृतक अपने चार भाई वह एक बार में तीसरे स्थान पर था मृतक के परिवार में तीन भाई अर्जुन,रवि प्रिंस एवं एक बहन मनीषा है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। घटी इस घटना के बाद मृतक की पत्नी रीमा देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

भोजपुर में ट्रैक्टर के नीचे दबकर चालक की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के चौरी थाना क्षेत्र के भीखमपुर बाजार के समीप रविवार की शाम ट्रैक्टर के नीचे दबकर चालक की मौत हो गई। घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। जानकारी के अनुसार मृतक मुफस्सिल थाना क्षेत्र के करवां बकरी गांव निवासी जितेंद्र मुसहर का 20 वर्षीय पुत्र दीपक मुसहर एवं पेशे से ट्रैक्टर चालक था। घटना के संबंध में बताया जाता है कि रविवार की शाम वह ट्रैक्टर से अपनी बहन महुली कुमारी के ससुराल घूमने जा रहा था। उसी दौरान भीखमपुर बाजार के समीप अचानक उसकी ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गई। जिससे ट्रैक्टर के नीचे वह दब गया और उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई इसके बाद स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी। सूचना पाकर चौरी थाना इंचार्ज कुमार रजनीकांत पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। इसके बाद उन्होंने इसकी सूचना मृतक के परिजनों को दी। सूचना घटनास्थल पर पहुंचे। जिसके पश्चात पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। बताया जाता है कि मृतक अपने तीन भाई व एक बहन में दूसरे स्थान पर था। मृतक के परिवार में मां नगिया देवी व दो भाई सुरेंद्र,धुरखेली एवं एक बहन महुली कुमारी है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। घटी इस घटना के बाद मृतक की मां नगिया देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत मलेरिया को 2030 तक जिले से मिटाना है : बीएचडब्ल्यू

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जिले में वेक्टर जनित रोगों पर नियंत्रण के लिए वृहद स्तर पर काम किया जा रहा है। चाहे वो मलेरिया हो या फाइलेरिया या फिर कालाजार। सभी प्रखंडों में वेक्टर जनित रोगों को लेकर जागरूकता अभियान के साथ साथ उन्मूलन कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। इस क्रम में मंगलवार को भोजपुर जिले में चरपोखरी प्रखंड स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में वेक्टर जनित रोगों के लिए चलने वाले अभियानों को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें जिला स्तर के अधिकारियों और प्रखंड अंतर्गत सभी एएनएम शामिल हुई।

बैठक में सर्वप्रथम बेसिक हेल्थ वर्कर अभय कुमार सिंह ने राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत मलेरिया को 2030 तक जिले से मिटाना है। थोड़ी सी सतर्कता से हम मलेरिया जैसी जानलेवा बीमारी को मिटा सकते हैं। मलेरिया रोधी माह को लेकर एएनएम को जानकारी दी। बताया कि एक से 30 जून तक स्वास्थ्य विभाग द्वारा मलेरिया रोधी माह मनाया जा रहा है। जिसको लेकर पूरे माह में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर जन समुदाय को जागरूक किया जा रहा है। लेकिन अभियान को गति देने के लिए जन जागरूकता अभियान, गोष्ठियां व रैलियां आयोजित की जानी है।

लक्षण, इलाज और बचाव की दी जाएगी जानकारी : बीएचडब्ल्यू अभय कुमार सिंह ने बताया, मलेरिया को जड़ से मिटाने के लिए प्रखंड के सुदूर इलाकों में स्थित मलिन बस्तियों में घर-घर जाकर जन समुदाय को मलेरिया के लक्षणों और बचने के उपायों के बारे में जानकारी दी जाएगी। ताकि लोगों को मलेरिया के लक्षणों की पहचान, इलाज और बचाव की जानकारी हो सके। उन्होंने बताया कि मलेरिया से संक्रमित व्यक्ति के सिर में तेज दर्द होना, उल्टी या मितली आना, ठंड या कंपकंपी के साथ तेज बुखार आना बीमारी के लक्षण हैं। बुखार का लंबे समय तक रहना या रुक रुक कर आना मलेरिया के लक्षण हैं। इस दौरान मरीज को बार-बार प्यास लगती है। हाथ व पैर में ऐंठन रहना, थकान या कमजोरी महसूस होना, घबराहट व बेचानी भी इसके लक्षणों में है। मलेरिया से बचाव के लिए घर में या आसपास पानी इकट्ठा न होने दें। बारिश से पहले छत पर साफ सफाई कर लें।

एनबीएस को लेकर फ्रंट लाइन वर्कर्स को दी जाएगी ट्रेनिंग : बीएचडब्ल्यू अभय कुमार सिंह ने बताया, जिले में 10 अगस्त को फायलेरिया उन्मूलन को लेकर एमडीए राउंड शुरू होगा। इसके पूर्व नाइट ब्लड सर्वे का कार्य होगा। प्रखंड में दो सेशन साइट बनेगें। एक सेशन साइट से तीन सौ रक्त नमूने लिए जाएंगे। प्रत्येक नाइट ब्लड सर्वे में 20 वर्ष आयु वर्ग से अधिक उम्र के लोगों का ब्लड सैंपल लिया जाएगा। एक नाइट ब्लड सर्वे साइट पर 300 सैंपल जमा किये जायेगे। दो सेशन साइट से छह सौ रक्त के नमूने जांच के लिए जाएंगे। सर्वे कार्य चार दिनों तक चलेगा। सर्वे के दौरान जिन इलाकों व गांवों में एक प्रतिशत से अधिक माइक्रो फाइलेरिया के संक्रमण की पुष्टि होगी, वहां पर मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) अभियान चलाया जाएगा। एक प्रतिशत से कम आने पर उस जगह पर एमडीए अभियान नहीं चलेगा। इसके लिए प्रखंड स्तर पर फ्रंट लाइन वर्कर्स को भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। बैठक में बड़ा बाबू दिलीप कुमार, स्टोर कीपर मनोज कुमार समेत सभी एएनएम शामिल हुईं।

बालू लदे ट्रैक्टर के नीचे दबकर छपरा निवासी की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आरा-छपरा फोरलेन पर बड़हरा थाना क्षेत्र के बबुरा गांव के समीप बालू लदे ट्रैक्टर के नीचे दबकर सारण (छपरा) निवासी चालक की मौत हो गई। घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। घटना की सूचना मिलते ही बड़हरा थाना इंचार्ज जयंत प्रकाश पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। जानकारी के अनुसार मृतक सारण (छपरा) जिला के भेलदी थाना क्षेत्र के सिरसाबली गांव निवासी स्व.अखिलेश राय का 19 वर्षीय पुत्र धीरज कुमार है एवं वह पेशे से ट्रैक्टर चालक था। इधर मृतक के भाई निखिल कुमार ने बताया कि सोमवार की दोपहर वह अपने गांव से ट्रैक्टर लेकर बबुरा स्थित बालू के खदान में ट्रैक्टर पर बालू लोड करने आया था। बालू लोड करने के बाद जब वह सारण (छपरा) जिला के पहाड़पुर गांव बालू गिराने जा रहा था। उसी दौरान बबुरा गांव के समीप ही अचानक बालू लदी ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गई और वह ट्रैक्टर के इंजन के नीचे दब गया। जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। इसके बाद स्थानीय थाना द्वारा इसकी सूचना मृतक के परिजनों को दी गई। सूचना पाकर मृतक के परिजन आरा सदर अस्पताल पहुंचे और शव को दाह-संस्कार के लिए वापस गांव ले गए। बताया जाता है कि मृतक अपने तीन भाइयों में सबसे छोटा था। मृतक के परिवार में मां सीमा कुंवर व दो भाई निखिल कुमार एवं अमीशा कुमार है। घटना के बाद मृतक के घर में हाहाकार मच गया है। घटी इस घटना के बाद मृतक की मां सीमा कुंवर एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

करंट की चपेट में आने से शौच करने के कारपेंटर की मौत

आरा। भोजपुर जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र के बनानी गांव में सोमवार की देर शाम करंट की चपेट में आने से शौच करने गए एक कारपेंटर की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा तफरी का माहौल कायम हो गया। जानकारी के अनुसार मृतक शाहपुर थाना क्षेत्र के बनाही गांव वार्ड नंबर 3 निवासी गणेश शर्मा का 33 वर्षीय पुत्र राजेश शर्मा है। वापी से से कारपेंटर था एवं गांव में ही फर्नीचर बनाने का काम करता था। इधर मृतक का ताला आशीष कुमार ने बताया कि पर सोमवार की देर शाम शौच करने के लिए गांव के बधार में गए हुए थे। उसी दरमियान वह करंट की चपेट में आ गए। जिससे उनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। इसके बाद स्थानीय ग्रामीणों ने जब हो-हल्ला करना शुरू किया तब जाकर इसकी सूचना मृतक के परिजनों को मिली।सूचना पाकर मृतक के परिजन घटनास्थल पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वह मृत अवस्था में पड़ा। जिसके पश्चात उन्होंने इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी। सूचना पाकर स्थानीय थाना मौके पर पहुंच शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। मृतक अपने तीन भाई व बाद में तीसरे स्थान पर था। उसके परिवार में पत्नी आरती देवी व तीन पुत्री आरुषि,मीनू ,रीया एवं एक पुत्र शिवम है। मृतक की मां रुकमणी देवी एवं मेरे बड़े भाई की मौत कुछ वर्ष पूर्व पहले ही हो चुकी है।

प्रदिप अग्रवाल के निधन पर भाजपा जिला मे शोक की लहर

प्रात : किरण संवाददाता

गया।भारतीय जनता पार्टी गया जिला के कोषाध्यक्ष अभिषेक अग्रवाल के पिताजी प्रदीप अग्रवाल का निधन निधन आज सुबह 4:00 बजे शेरघाटी गोला रोड स्थित आवास पर ह्रदय गति रुक जाने से हो गया पर्थिव शरीर का शेरघाटी के घाट पर दाह संस्कार किया गया। पार्थिव शरीर को मुखगनी बड़े पुत्र अमित अग्रवाल ने दिया गया है।दाह संस्कार में भाजपा के नेता एवं कार्यकर्ता सहित कई सामाजिक कार्यकर्ता और परिवार के सदस्य शामिल हुए हैं।पूर्व मंत्री सह विधायक डॉक्टर प्रेम कुमार ने प्रदीप अग्रवाल के निधन पर गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा की सामाजिक कार्यो में अधिक रुचि लेते रहते थे। एवं सामाजिक न्याय का झंडा बुलंद करते थे उनके निधन पर भगवान विष्णु से प्रार्थना करते हैं उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें शोक प्रकट करने वालों में भाजपा के वरिष्ठ नेता सह पूर्व विधान पार्षद कृष्ण कुमार सिंह जी ने गहरा दुःख प्रकट किया है। भारतीय जनता पार्टी जिला अध्यक्ष प्रेमप्रकाश चिंटू सिंह पूर्व जिला अध्यक्ष धनराज शर्मा पूर्व विधायक श्यामदेव पासवान,क्षितिज मोहन सिंह,पूर्व सांसद रामजी मांझी,हरी मांझी भारतीय जनता पार्टी के जिला के उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता,अजय कुमार तन्नी, युगेश कुमार डॉ अनुज कुमार,गजेंद्र दास, समफुल देवी प्रीति सिंह, धीरज रौनीयार करुणा कुमारी जिला महामंत्री गोपाल यादव रंजन कुमार सिंह , संतोष सिंह, राजेंद्र राम, एवं दर्जनों लोगों ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है।

भीषण गर्मी में बिजली कटौती से शहर के लोग हुए त्राहिमाम : भाजपा

गया।गया में भीषण गर्मी में बिजली विभाग के द्वारा लगातार पॉवर काटने से काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दिन तो छोड़ रात्रि 3से 4 बार पॉवर कट कर दिया जाता है, जिससे रात्रि में लोगों को बहुत तकलीफ का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता एवं जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर बिजली विभाग को जो उच्चस्तरीय पदाधिकारी हैं, स्वयं मॉनिटरिंग कर पता करें की रात्रि में ही पॉवर क्यों कट हो जाता है। पावर कट हो जाने से छोटे छोटे बच्चे एवं जिनके पास इन्वेर्टर की सुविधा उपलब्ध नहीं है, वैसे परिवार गर्मी से बेहाल हो जाते हैं, रात में सो नहीं पाने के कारण बीमार हो जा रहे हैं। पुनः मांग करते हैं की पॉवर कट की समस्या का समाधान निकाले नहीं तो गया की जनता को इस भीषण गर्मी में काफी भयानक स्तिथि का सामना करना पड़ सकता है।

महिला हज यात्रियों क लिए जिला प्रशासन ने गया हवाई अड्डा पर महिला हेल्पलाइन का दिया सुविधा

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया हवाई अड्डा पर महिला हज यात्रियों की सेवा के लिए जिला प्रशासन की ओर से महिला हेल्प डेस्क बनाया गया है। इस हेल्पडेस्क में महिला टीचरों को प्रतिनियुक्ति किया गया है।जो महिला हज यात्रियों की सेवा में उपस्थित रहती है और समस्याओं का निदान करती है। महिला हेल्प डेस्क हज यात्रियों के अलावा उनको छोड़ने आने वाली महिलाओं की भी सहायता की जाती है।जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम ने बताया कि इस बार बिहार से जितने हज यात्री मक्का मदीना पवित्र हज के लिए रवाना हो रहे हैं।उनमें 40% महिला हज यात्री है ।इस बार बिहार से बगैर महरम के 44 महिला हज यात्रा पर रवाना हो रही है। महिला हज यात्री जो बिना महरम के हज यात्र पर जाने वाली हैं उन में अब तक 18 हज यात्री मक्का मदीना पहुंच चुकी है। बिहार सरकार की ओर से हज यात्रियों की सेवा में मक्का मदीना भेजे जाने वाले 15 खादिमूल हुज्जाज में पहली बार एक महिला खादिमूल हुज्जाज को भी भेजा गया है। जो वहां मक्का मदीना में महिला हज यात्रियों की सेवा में रहेगी।

जिला पदाधिकारी डॉ त्यागराजन एसएम ने कहा कि महिला हज यात्रियों की संख्या को देखते हुए जिला प्रशासन ने गया हवाई अड्डा पर उनकी सेवा एवं समस्याओं के निदान के लिए महिला हेल्प डेस्क भी बनाया गया है ।महिला हेल्प डेस्क में महिलाओं की ही नियुक्ति की गई है। हेल्प डेस्क में नियुक्त की गई है। सभी महिलाएं पहले से प्रशिक्षण प्राप्त है।जो महिला हज यात्रियों को हज यात्रा से संबंधित जानकारियों के साथ जिन महिलाओं को हेल्थ सुविधा की जरूरत होती यही महिला उन्हें हेल्थ शिविर में ले जाकर दिखाने समेत कई बिंदुओं पर सहयोग कर रही हैं। महिला हज यात्री भी इनकी सराहना करती हैं, हेल्प डेस्क में महिला टीचरों के अलावा महिला पुलिस भी है। इसके अतिरिक्त जो भी कैंप बनाए गए हैं वहां पर पदस्थापित कर्मियों एवं अधिकारियों की ओर से हज यात्रियों की सेवा की जा रही है।

नोडल पदाधिकारी जितेंद्र कुमार ने बताया कि कंट्रोल रूम में लगे टेलीफोन नम्बर पर हज यात्री और उनके संबंधियों का जानकारी एवं सूचना देने के लिए लगातार फोन आते रहते हैं। कल गया के चाकन्द की एक महिला हज यात्री ने कॉल करके बताया के उनका स्वास्थ्य अचानक बिगड़ गया है और वे अस्पताल में भर्ती हैं। जिसके कारण आज उनकी यात्रा संभव नहीं है।महिला हज यात्री घबराई हुई थी के तबीयत खराब होने की वजह कर कहीं पूरी हज यात्रा उनकी रद नहीं कर दी जाए। जिसके बाद नोडल पदाधिकारी ने हज भवन पटना से समन्वय कराकर महिला को अस्वस्थ कराया कि अगर उनका दो तीन दिनों में स्वास्थ्य ठीक हो जाता है तो दूसरे दिन उनको हज यात्रा पर भेज दिया जाएगा , वही आज मंगलवार को 150 हज यात्री रवाना हुए इसमें 109 हज यात्री गया जिला के थे, जिनको रुखसत करने के लिए उनके रिश्तेदार बड़ी संख्या में हवाई अड्डा पर पहुंचे थे।

भाजपा नेता पर जानलेवा हमला बाल बाल बचे

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। शादी समारोह से लौटने के क्रम में भाजपा नेता के ऊपर जानलेवा हमला का प्रयास बाल बाल बचे पंचायती राज प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रवक्ता सत्येंद्र कुमार राय अरवल जिले के खोखडी गाँव के समीप उनके स्कॉर्पियो गाड़ी के ऊपर जानलेवा हमला किया गया किसी तरह अपनी जान को बचाते हुए अरवल सदर थाना में सुरक्षित पहुंचे इस घटना को कड़ी शब्दों में निंदा करता हूं और अरवल पुलिस से मांग किया है बेखौफ घूम रहे अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़े अन्यथा भाजपा के कार्यकर्ता सड़क से सदन तक धरना प्रदर्शन करने का काम करेगा भाजपा कार्यकताओं को जानबूझकर टारगेट किया जा रहा है, बता दें कि इससे पहले पूर्व में भी भाजपा जिला अध्यक्ष के ऊपर जानलेवा हमला किया गया था।

कुमारी सौम्या देश के सबसे प्रतिष्ठित यूपीएससी के सफलता हासिल कर अरवल जिले का मान बढ़ाया: कनौजिया

अरवल। जिले के सुदूरवर्ती सोन तटीय इलाका ग्राम-बेलावं की बिटिया कुमारी सौम्या ने प्रथम प्रयास में ही यूपीएससी परीक्षा मे सफलता हासिल कर अरवल जिले को गौरवान्वित किया है। इस सफलता की खुशी में महात्मा बुद्ध विहार रोजा पर अरवल में महागठबंधन के नेताओं ने उन्हें बधाई दिया है। इस मौके पर जदयू जिलाध्यक्ष रामकिशोर वर्मा ने कुमारी सौम्या को अंग वस्त्र एवं अशोक स्तंभ देकर सम्मानित किया, वहीं राजद पंचायती राज्य प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष रविंद्र कनौजिया ने कलम और डायरी देकर उज्जवल भविष्य की कामना किया एवं उन्हें हमेशा न्याय के पक्ष में खड़े रहने तथा गांव से जुड़े रहने का आग्रह किया। इस मौके पर राज नारायण चौधरी, सुजीत मौर्या, विकास पटेल, रमेश कुशवाहा मौजूद थे।

बाढ एवं सुखाड़ के पूर्व तैयारी को लेकर डीएम ने अधिकारियों के साथ किया समीक्षा बैठक

पूर्णिया । डीएम कुन्दन कुमार द्वारा लगातार बाढ़ एवं सुखाड़ की पूर्व तयारी को लेकर समीक्षा बैठक एवं क्षेत्र भ्रमण तथा स्थल निरीक्षण कर संबन्धित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा निदेश दिए जा रहे है। पूर्व में दिए गए दिशा निदेर्शो का अनुपालन को लेकर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आपदा प्रबंधन विभाग की समीक्षात्मक बैठक समाहरणालय सभाकक्ष में आयोजित की गई। उक्त बैठक में अपर समाहर्ता, पूर्णिया, प्रभारी पदाधिकारी, आपदा प्रबंधन, सभी अनुमंडल पदाधिकारी एवम् सभी अंचलाधिकारी सभागार कक्ष में मौजूद थे। बताते चले की जिलाधिकारी महोदय द्वारा पूर्व में सभी अंचल एवं अनुमंडल पदाधिकारी एवं सभी प्रखण्डों के नोडल पदाधिकारियों को संभावित बाढ़ एवं सुखाड़ के मद्देनजर निर्देश दिया गया था की सभी संबंधित अधिकारी अपने अपने क्षेत्रों में जनप्रतिनिधियों एवं आमजनों के साथ बैठक कर बिंदुवार बाढ़ एवं सुखाड़ के समय होने वाले परेशानियों एवं उसके निदान को लेकर बैठक करेंगे।

नगर आयुक्त ने रोड काटकर मिलाने का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

गया। बरसात के पहले जल जमाव को गम्भीरता से लेते हुए मंगलवार को नगर निगम आयुक्त अभिलाषा शर्मा गया नगर निगम क्षेत्र के बड़े नालो की ऊडाही एवं वार्डवार हो रहे, छोटे झ छोटे नालियों की सफाई का समीक्षा बैठक की गई है। इस बैठक में उप नगर आयुक्त, नोडल पदाधिकारी, सफाई,उप नोडल पदाधिकारी सफाई, किशोर प्रसाद कनीय अभियंता, देवनंदन प्रसाद कनीय अभियंता, सुबोध सिंह कनीय अभियंता, चंद्रमोहन वार्ड निरीक्षक, सिंधु शेखर वार्ड निरीक्षक एवं अन्य कर्मी उपस्थित थे बड़े नालों मनसर्वा नाला, बॉटम नाला, नदरगंज नाला, कुजापी नाला,एकबलनगर नाला, मानपुर सूर्यदेव नगर नाला की उड़ाही की समीक्षा की गई है।नोडल पदाधिकारी द्वारा बताया गया की बड़े नालों में मनसर्वा नाला की सफाई पूर्ण हो गई है मशीन से कुछ काम शेष है जो मशीन लगा हुआ है सूर्यदेव नगर नाला में शेष भाग में मजदूर से सफाई कराई जा रही है। स्लीपर फैक्ट्री के पास भी नाला सफाई कराई जाएगी, कुजपी एवं पाइन नाला में भी सफाई चल रही है।जल्द से जल्द सफाई पूर्ण करा लेने का निर्देश दिया गया है।

वार्डवार नालियों की सफाई भी लगभग पूर्ण हो गई है।कुछ शेष है। जिसे पूर्व आवंटित मानव बल से बचे हुए मानव बल कराने हेतु आदेश दिया जाय, वार्ड में बचे हुए शेष नालियों की सफाई अविलंब करा दें,

और आगे बताया गया की गदालोल नाला की सफाई बची हुई है। इसपर निर्देश दिया गया की कल से ही मशीन से गदालोल नाला की सफाई कराना सुनिश्चित करें, भूगर्व नाला की सफाई की समीक्षा में निर्देश दिया गया की कैचपिट एवं वार्ड नं 15,16 के भुगर्व की सफाई अविलंब कराएं, वार्ड 15,16 में भूगर्व नाला का चैंबर बनाने हेतु कनीय अभियंता को निर्देश दिया गया। वार्ड नं छः में लाल बाबा के पास रोड काटकर मिलाने का निर्देश दिया गया है। इसके लिए आरसीडी से अनुमति ले लेंगे

भविष्य में जल जमाव की स्थिति के लिए क्युआरटी टीम का कल से गठन कर सुरक्षित रखने का निर्देश दिया गया है।

कनीय अभियंता द्वारा बताया गया कि बॉटम नाला की सफाई पूर्ण करा ली गई है।केवल अब सिर्फ मात्र जी. बी रोड के जंक्शन पर सफाई कराए जाने की बात बताई गई है। आगे यह भी निर्देश दिया गया है की अविलंब सफाई करा लें एवं नए बसावटों में जल जमाव न हो इसके लिए कनीय अभियंता को कच्चा नाला काटकर जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया गया है।

जिला प्रशासन के द्वारा वलिदाद मे दलित परिवारों के घर पर बुलडोजर चलाना असंवैधानिक:सत्येन्द्र रंजन

अरवल। जिला के वलिदाद में दलित परिवारों के घर पर जिला प्रशासन के द्वारा बुलडोजर से घर को तोड़कर बेघर किये जाने पर अरवल जिला लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के जिलाध्यक्ष सत्येन्द्र रंजन ने तीखी प्रतिक्रिया करते हुए प्रेस ब्यान जारी कर कहा कि जहां एक ओर बिहार सरकार दलित परिवारों को घर बनाने के लिए पांच डिसमिल जमीन देती है वहीं पर जिला प्रशासन गरीब दलित परिवारों के घर बुलडोजर से बेघर कर देना निंदनीय एवं दुर्भाग्यपूर्ण है , इसकी जितनी भी निंदा किया जाय वह कम होगा । जिला प्रशासन को पहले गरीब दलित परिवारों को रहने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था करनी चाहिए थी ,जिस जमीन पर वर्षो से मकान बना हुआ है वह जमीन भारत सरकार के हिन्द केसर जमीन है , लेकिन अरवल पूरा शहर ही हिन्द केसर जमीन पर बसा हुआ है तो क्या अरवल शहर को बुलडोजर से तोड़कर मैदान बना दिया जायेगा । वलीदाद के जमीन पर जो सरकारी संस्थान बनाने का निर्णय लिया गया है , अन्य जगहों पर बनाया जा सकता है ,अरवल में सरकारी जमीन की कमी नहीं है । बसे हुए लोगों को घर से बेघर करना किसी भी दृष्टिकोण से उचित नही है , पुनः एक बार जिला प्रशासन को इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करते हुए बुलडोजर चलवाना बन्द कर दे अन्यथा लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के कार्यकताओं को बाध्य होकर आंदोलन करना पड़ेगा ।

रिविलगंज में सैकड़ो दिव्यांग को मिला ट्राइसाइकिल व अन्य उपकरण

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। स्थानीय प्रख

राजीव चंद्रशेखर बोले- डिजिटल अर्थव्यवस्था में सुरक्षा का मुद्दा वैश्विक चुनौती, आर्थिक वृद्धि पर असर

नई दिल्ली, एजेंसी। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर ने सोमवार को कहा कि डिजिटल अर्थव्यवस्था में सुरक्षा का मुद्दा एक वैश्विक चुनौती है और इससे निपटने के लिए मिलजुलकर काम करने की जरूरत है। वह यहां महाराष्ट्र में तीसरी डिजिटल इकोनॉमी वर्किंग ग्रुप की बैठक में ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) शिखर सम्मेलन में जी-20 प्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे थे।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि डिजिटल अर्थव्यवस्था की सुरक्षा कोई घरेलू मुद्दा नहीं है और न ही इसमें चुनिंदा सहयोग से काम चल पाएगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि डिजिटल अर्थव्यवस्था में सुरक्षा के घरेलू, कानूनी, तकनीकी और आर्थिक पहलुओं में सुधार के लिए एक साझा समझ तैयार करनी होगी।

उपभोक्ता के विश्वास और व्यापार की विश्वसनीयता को नुकसान: उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य-प्रौद्योगिकी, वित्तीय-प्रौद्योगिकी, ई-कॉमर्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इंटरनेट आधारित कंपनियों के पास अब उपभोक्ताओं के बारे में तमाम संवेदनशील एवं व्यक्तिगत जानकारियां हैं। इनमें साइबर अपराध के सबसे ज्यादा मामले वित्तीय सेवा क्षेत्र में सामने आते हैं जबकि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र और सोशल मीडिया से संबंधित अपराध उसके बाद हैं। मंत्री ने कहा कि ये प्रमुख क्षेत्र हैं जहां डाटा का उल्लंघन न केवल आर्थिक लागत का कारण बनता है बल्कि उपभोक्ता के विश्वास और व्यापार की विश्वसनीयता को भी नुकसान पहुंचाता है।

डिजिटल कायाकल्प एवं आर्थिक वृद्धि पर असर: चंद्रशेखर ने कहा, इन कंपनियों के पास मौजूद आंकड़े में सेंधमारी, फिरौती के लिए साइबर हमले और सेवा रोकने वाले हमले आम लोगों, व्यवसायों के साथ सरकारों के लिए भी खतरा पैदा करते हैं। ऐसे अपराधों से उपभोक्ताओं का भरोसा कम होने का असर आखिरकार डिजिटल कायाकल्प एवं आर्थिक वृद्धि पर ही पड़ेगा।

चंद्रशेखर ने कहा कि बड़ी कंपनियों के पास लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए अपने सुरक्षा तंत्र को लगातार अपडेट करने के संसाधन हैं, लेकिन छोटे व्यवसायों यानी स्टार्टअप और एमएसएमई से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती है, जो नवाचार में सबसे आगे हैं। उन्होंने कहा, चूंकि डिजिटल अर्थव्यवस्था में सुरक्षा एक वैश्विक चुनौती है और इससे निपटने के लिए एक साझेदारी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जिसमें विश्वास बनाने, जागरूकता में सुधार करने और डिजिटल समाधान प्रदान करने के लिए सरकारें, व्यवसाय और विकास संस्थान शामिल हों।

सुरक्षा एजेंडे के बारे में विस्तार से बताते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सबसे पहले, सरकार के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह उन सुरक्षा खतरों का पता लगाए जो नवाचार में बाधा डालते हैं और आवश्यक सेवाओं पर भरोसा करें। चंद्रशेखर ने यह भी कहा कि डिजिटलीकरण के वर्तमान युग में यह महत्वपूर्ण है कि देश उद्योग की बदलती मांगों के अनुसार डिजिटल स्किलिंग, अपस्किलिंग और रीस्किलिंग के लिए अपनी रणनीतियों का पुनर्मूल्यांकन और सुधार करने में निवेश करे।

उन्होंने कहा, मेरा दृढ़ विश्वास है कि जी20 को सक्रिय रूप से इन मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए और वैश्विक कार्यबल को लाभ पहुंचाने वाले परिणामों को प्राप्त करने की दिशा में काम करना चाहिए। मंत्री ने कहा कि यह शिखर सम्मेलन डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) कार्यान्वयन के ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करने और वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था की उन्नति के लिए एक उत्कृष्ट अवसर है।

उन्होंने कहा कि भारत कार्यक्रमों को सक्षम बनाने के अपने प्रयासों के साथ-साथ वैश्विक मानक साइबर कानून ढांचे के लिए भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए कई नीतियों पर भी सक्रिय रूप से काम कर रहा है। चंद्रशेखर ने नौ देशों के मंत्रियों की उपस्थिति में वैश्विक डीपीआई शिखर सम्मेलन और वैश्विक डीपीआई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। वैश्विक डीपीआई शिखर सम्मेलन में लगभग 50 देशों और 150 विदेशी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। नौ देशों ने मंत्री स्तर पर भाग लिया।

सट्टेबाजी व लत से जुड़े ऑनलाइन गेम पर लगेगी पाबंदी - चंद्रशेखर: केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने सोमवार को कहा कि सरकार ने पहली बार ऑनलाइन गेमिंग को लेकर एक रूपरेखा तैयार की है। इससे सट्टेबाजी, उपयोगकर्ताओं के लिए हानिकारक और लत से जुड़े गेम को देश में प्रतिबंधित किया जाएगा।

चंद्रशेखर ने कहा कि रूपरेखा के तहत हम देश में 3 तरह के खेलों की इजाजत नहीं देंगे। ऐसे खेल जिनमें सट्टेबाजी शामिल है या उपयोगकर्ता के लिए हानिकारक हो सकता है और जिसमें लत का कारक शामिल है, देश में प्रतिबंधित कर किए जाएंगे। हालांकि उन्होंने इन खेलों की सूची नहीं बताई। इससे पहले शुक्रवार को उन्होंने कहा था कि सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक को विनियमित करेगी कि यह 'डिजिटल नागरिकों' को नुकसान न पहुंचाए।

ओटीटी प्लेटफार्म पर अपना दबदबा बढ़ाना चाहते हैं अंबानी

जिओ सिनेमा के प्रीमियम प्लान के साथ उतरे बाजार में

नेटफ्लिक्स और अमेजन प्राइम को देंगे सीधी टक्कर

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया के अरबपतियों में शुमार लगातार अपने बिजनस को आगे बढ़ा रहे हैं। मुकेश अंबानी अब तेजी से उभर रही ऑनलाइन स्ट्रीमिंग सर्विस में तहलका मचाने की तैयारी कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुकेश अंबानी अब नेटफ्लिक्स और अमेजन प्राइम का दबदबा खत्म करने की प्लानिंग कर रहे हैं। मुकेश अंबानी ने जिओ सिनेमा के प्रीमियम कंटेंट के प्लान का खुलासा किया है। अंबानी इस कदम से ओटीटी प्लेटफार्म पर अपना वर्चस्व बढ़ाना चाहते हैं। बता दें कि जियो सिनेमा, जिसका नेतृत्व मुकेश अंबानी के बेटे आकाश अंबानी कर रहे हैं, उन्होंने पहले ही अपनी लाइब्रेरी में वार्नर ब्रदर्स और एचबीओ के स्पेशल शो शामिल कर लिए हैं। जियो सिनेमा सब्सक्राइबर्स को अब कई बेहद लोकप्रिय एचबीओ प्रोग्राम देखने का विकल्प मिल गया है।

मुकेश अंबानी के जियो सिनेमा का प्रीमियम सब्सक्रिप्शन स्पेस में प्रवेश करने का निर्णय रुपये के रूप में महत्वपूर्ण है। 999 रुपये में, जियो सिनेमा नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम वीडियो और डिज़्नी + हॉटस्टार जैसे अपने प्रतिद्वंद्वियों को सीधी चुनौती देने के लिए तैयार है। इधर नेटफ्लिक्स वार्षिक सदस्यता का विकल्प नहीं देता है। यह 149 रुपये से प्लान की शुरुआत कर रहा है। वहीं अमेज़न प्राइम वीडियो की वार्षिक सदस्यता रु 1499 और हाटस्टार के प्रीमियम वार्षिक सब्सक्रिप्शन की कीमत भी 1499 रुपये है। जियो सिनेमा का प्रीमियम सब्सक्रिप्शन कई सुविधाएं दे रहा है, जैसे एक साथ 4 डिवाइस पर कंटेंट स्ट्रीम करने की सुविधा उपलब्ध कराना।

आईपीएल से बढ़ाया कारोबार: जियो सिनेमा ने आइपीएल 2023 की मुफ्त लाइव स्ट्रीमिंग द्वारा भारत में एक आधार स्थापित करने में कामयाबी हासिल की है। जियो सिनेमा द्वारा वार्नर ब्रदर्स और एचबीओ से सामग्री जोड़ने का निर्णय केवल प्लेटफॉर्म की ओर अधिक ग्राहकों को आकर्षित करने वाला है। अब आने वाले महीनों में स्ट्रीमिंग में और लड़ाई देखने को मिलने वाली है। यह देखा जाना बाकी है कि कैसे नेटफ्लिक्स, अमेज़ॅन प्राइम और डिज़्नी हॉटस्टार + जियो सिनेमा द्वारा उन्हें दी गई चुनौतियों का मुकाबला करेंगे।

चीनी के निर्यात पर अभी लगा रहेगा बैन

सरकार निर्यात पर लगे बैन को आगे बढ़ा सकती है, चीनी का उत्पादन कम होने की है आशंका

नई दिल्ली, एजेंसी। चीनी के एक्पोर्ट पर अभी रोक लगी हुई है। अब सरकार से आगे बढ़ा सकती है। इकोनॉमिक टाइम्स की खबर के मुताबिक, भारत कम से कम अगले सीजन की पहली छमाही तक चीनी निर्यात की परमीशन नहीं देने पर विचार कर रहा है। दरअसल इस साल भारत में मानसून के दौरान सामान?य बारिश के बीच अल नीनो की स्थिति उत?पन?न होने की आशंका ने चिंता बढ़ा दी है। सरकार को चिंता है कि अल नीनो के चलते प्रोडक्शन पर असर पड़ सकता है और इसमें गिरावट आ सकती है। अल नीनो की स्थितियां मानसून के दौरान विकसित हो सकती हैं और मानसून के दूसरे चरण में इसका असर महसूस हो सकता है। कृषि क्षेत्र फसल उत्पादन के लिए मानसून की बारिश पर बहुत अधिक निर्भर करता है। अगर आसान भाषा में समझा जाए तो अल नीनो की वजह से तापमान गर्म होता है। वहीं

ला नीना के कारण तापमान ठंडा हो जाता है। अल नीनो प्रशांत महासागर में असामान्य रूप से गर्म पानी की मौजूदगी के जलवायु प्रभाव का नाम है। अल नीनो के दौरान, मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में सतह का पानी असामान्य रूप से गर्म होता है। भारत से शिपमेंट में देरी से वैश्विक स्तर पर चीनी की कीमतों में उछाल आ सकता है। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के मुताबिक, मौसम एक बड़ा नकारात्मक कारक है। पिछले साल मानसून की अच्छी बारिश के बावजूद चीनी उत्पादन में गिरावट आई थी। इस साल एल नीनो के साथ, हम जल्द निर्यात की अनुमति देने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं।

टाटा ने अपने कर्मचारियों को दिया छप्परफाड़ इनाम, 62 परसेंट तक उछल गई सैलरी

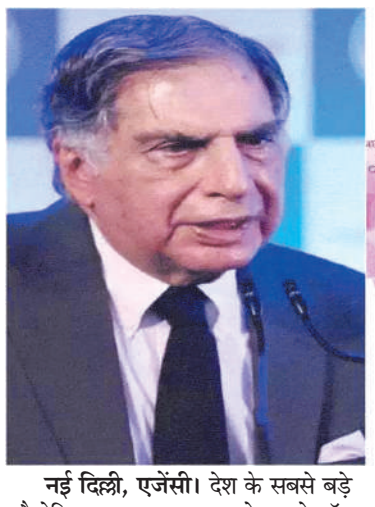

नई दिल्ली, एजेंसी। देश के सबसे बड़े औद्योगिक समूह टाटा ग्रुप ने अपने टॉप एग्जीक्यूटिव्स को छप्परफाड़ इनाम दिया है। ग्रुप ने इस साल इन अधिकारियों को 62 फीसदी तक सैलरी हाइक दिया है। सबसे ज्यादा बढ़ोतरी ट्रेंट, इंडियन होटल्स और टाटा कंज्यूमर जैसे हाई ग्रोथ बिजनसेज के टॉप अधिकारियों की सैलरी में हुई है। 2022-23 में टाटा ग्रुप का सेल्स रेवेन्यू 97 अरब डॉलर रहा जो अब तक का रेकॉर्ड है। इस दौरान ग्रुप की अधिकांश कंपनियों की ग्रोथ 20 फीसदी से अधिक रही। ग्रुप के होल्डिंग कंपनी टाटा संस के बोर्ड में इन कंपनियों के टॉप अधिकारियों को इस शानदार प्रदर्शन का इनाम दिया है। टोटल पैकेज में सैलरी, कमीशन और दूसरे बेनिफिट्स शामिल हैं। सबसे ज्यादा हाइक ग्रुप की रिटेल चेन ट्रेंट के सीईओ पी वेंकटसेलू को दिया गया है। उन्हें 5.12 करोड़ रुपये की सैलरी के साथ कुल 62 परसेंट हाइक दिया गया है।

ट्रेंट का नेट प्रॉफिट पिछले साल 10 गुना बढ़कर 394 करोड़ रुपये रहा जबकि रेवेन्यू 80 फीसदी बढ़कर 8,242 करोड़ रुपये पहुंच गया। इंडियन होटल्स के सीईओ पुनीत चटवाल को 18.23 करोड़ रुपये की सैलरी के साथ 37 फीसदी हाइक मिली है। टाटा कंज्यूमर के सीईओ सुनील डिसूजा को 24 परसेंट हाइक मिला है और उनकी सैलरी अब 9.5 करोड़ रुपये पहुंच गई है। वोल्टास के प्रदीप बख्शी को 22 फीसदी और टाटा केमिकल्स के आर मुकुंदन तथा टाटा पावर के प्रवीर सिन्हा को 16-16 परसेंट हाइक मिला है। सबसे कम हाइक टीसीएस के राजेश गोपीनाथन को मिला। उनकी सैलरी में 13 फीसदी बढ़ोतरी हुई और यह 29.1 करोड़ पहुंच गई। हालांकि गोपीनाथन अब टीसीएस छोड़ चुके हैं।

टाटा ग्रुप का कारोबार कई सेक्टर्स में फैला है। इनमें टेक्नोलॉजी, स्टील, ऑटोमोटिव, कंज्यूमर एंड रिटेल, इन्फ्रास्ट्रक्चर, फाइनेंशियल सर्विसेज, एयरोस्पेस एंड डिफेंस, टूरिज्म एंड ट्रेवल, टेलिकॉम एंड मीडिया, ट्रेडिंग और इन्वेस्टमेंट शामिल है। ग्रुप के कंपनियों की संख्या 30 पहुंच गई है। टाटा ग्रुप के एक अधिकारी ने कहा कि साल 2023 ग्रुप के लिए बेहद शानदार रहा। पिछले दो साल में टाटा की 28 लिस्टेड कंपनियों में से 26 ने मार्केट से बेहतर प्रदर्शन किया है। इस दौरान ग्रुप के मार्केट कैप में 300,000 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। 28 में से 17 लिस्टेड कंपनियों ने पिछले फाइनेंशियल ईयर में 11 से 90 फीसदी रेवेन्यू ग्रोथ हासिल किया।

टाटा मोटर्स ने डिविडेंड के लिए रिकॉर्ड डेट का किया ऐलान

नई दिल्ली, एजेंसी। टाटा ग्रुप की कंपनी टाटा मोटर्स ने डिविड्रेंड देने का फैसाल किया है। कंपनी ने हर ऑर्डिनरी शेयर पर 2 रुपये और ए ऑर्डिनरी शेयर पर 2 रुपये का डिविडेंड देने का फैसला किया है। कंपनी ने इस डिविडेंड के लिए अब रिकॉर्ड डेट का ऐलान भी कर दिया है। मंगलवार की सुबह कंपनी के शेयर 1 प्रतिशत तक चढ़ गए थे। बता दें, 11 बजे के करीब टाटा मोटर्स के शेयर बीएसई में 0.76 प्रतिशत की तेजी के साथ 569 रुपये के लेवल पर आकर ट्रेड कर रहे थे। शेयर बाजार को दी जानकारी में टाटा मोटर्स ने बताया है कि 29 जुलाई 2023 की तारीख को डिविडेंड के लिए रिकॉर्ड डेट तय किया गया है। यानी जिस किसी निवेशक का नाम कंपनी के रिकॉर्ड बुक में इस दिन रहेगा उसे ही डिविडेंड का लाभ मिलेगा। पिछले एक महीने के दौरान टाटा मोटर्स के शेयरों की कीमतों में 6.60 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखने को मिली है। वहीं, साल 2023 के शुरुआत में टाटा ग्रुप के इस स्टॉक को खरीद कर होल्ड रखने वाले निवेशकों को अबतक 43.28 प्रतिशत का लाभ हो चुका है। शेयर बाजार में टाटा मोटर्स का 52 वीक हाई 576.65 रुपये है।

मर्जर की खबर के बाद रॉकेट बन गया यह एनर्जी शेयर, 19 प्रतिशत चढ़ गया भाव

नई दिल्ली, एजेंसी। आईनॉक्स विंड एनर्जी के शेयर 19 पर्सेंट की तेजी के साथ 2,150 रुपये की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया। वहीं, आईनॉक्स विंड एनर्जी के साथ विलय को बोर्ड की मंजूरी के बाद आईनॉक्स विंड 5 फीसदी फिसलकर 138.50 रुपये पर आ गया। आपको बता दें कि प्रमुख विंड एनर्जी सॉल्यूशंस प्रोवाइडर, आईनॉक्स विंड ने सोमवार को घोषणा की कि रणनीतिक निर्णय तहत कंपनी के निदेशक मंडल ने आईनॉक्स विंड एनर्जी को आईनॉक्स विंड में मर्ज करने की योजना को मंजूरी दे दी है। विलय विभिन्न रेगुलेटरी अप्रूवल के अधीन है।

क्या है उद्देश्य: बोर्ड ने आईनॉक्स विंड एनर्जी के प्रत्येक 10 इक्विटी शेयरों के लिए 54 रुपये के इश्यू प्राइस के साथ जारी किए जाने वाले आईनॉक्स विंड के 158 इक्विटी शेयरों के साथ प्रस्तावित विलय के लिए स्वैप रेशियो को मंजूरी दे दी है, जबकि आईनॉक्स विंड एनर्जी के 10 शेयर 847 रुपये की कीमत पर जारी किए जाएंगे। आईनॉक्स विंड ने कहा कि इस मर्जर का उद्देश्य लिस्टेड संस्थाओं की संख्या को कम करके समूह की संरचना को सरल और कारगर बनाना है। आईनॉक्स विंड एनर्जी पवन ऊर्जा के प्रोडक्शन और बिक्री के कारोबार में लगी हुई है। यह पवन फार्मों के निर्माण, खरीद और कमीशनिंग (ईपीसी) के लिए सेवाएं प्रदान करती है और नवीकरणीय ऊर्जा में एक रणनीतिक व्यावसायिक हित रखती है। आईनॉक्स विंड विंड टर्बाइन जेनरेटर (डब्ल्यूटीजी) के निर्माण और बिक्री के कारोबार में लगी हुई है। यह डब्ल्यूटीजी और पवन फार्म विकास सेवाओं के लिए ईपीसी, संचालन और रखरखाव (ओ एंड एम) और सामान्य बुनियादी सुविधाएं सेवाएं भी प्रदान करता है।

टाटा का स्टॉक नई ऊंचाईयों पर

नई दिल्ली, एजेंसी। टाटा ग्रुप की कंपनी ट्रेंट के शेयरों में आज 5 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। जिसके बाद कंपनी के एक शेयर का भाव 1678.35 रुपये के लेवल तक पहुंच गया था। यह ट्रेंट का नया 52 वीक हाई है। कंपनी के शेयरों में आई इस तेजी की बड़ी वजह कंपनी विस्तार प्लान को माना जा रहा है। आइए विस्तार से जानते हैं टाटा ग्रुप के विषय में -

आईपीओ ने निवेशकों को बनाया हकीकत, लिस्टिंग के बाद लगा अपर सर्किट : कंपनी वित्त वर्ष 2024 में तेजी के साथ विस्तार का प्लान बना रही है। ट्रेंट का रिटेल ब्रांड इस वित्त वर्ष करीब 200 नए स्टोर खोल सकता है। पिछले एक महीने के दौरान टाटा ग्रुप की इस कंपनी के शेयरों की कीमतों में 10 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखने को मिली है। वहीं, 6 महीने पहले जिस किसी निवेशक ने कंपनी के शेयरों पर दांव लगाकार होल्ड रखा होगा उन्हें अबतक 15 प्रतिशत से अधिक का रिटर्न मिला है। बता दें, ट्रेंट के शेयरों की कीमतों में पिछले एक साल के दौरान 55 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखने को मिली है।

विदेश जाकर छुट्टियां मनाने के लिए ज्यादा ढीली करनी पड़ेगी जेब, भारत में सबसे महंगा फ्लाइट टिकट

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में एविएशन सेक्टर में उधर-पुथल का दौरा जारी है। गो फर्स्ट के दिवालिया होने के बाद डोमेस्टिक एयरलाइंस ने फ्लाइट टिकटों में इजाफा कर दिया। खासकर उन रूटों पर फ्लाइट टिकट के दाम में तेजी से बढ़ोतरी हुई है, जिनपर गो फर्स्ट एयरलाइन का दबदबा था। सिर्फ घरेलू ही नहीं बल्कि इंटरनेशनल फ्लाइट टिकटों में भी तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इंटरनेशनल एयर फेयर में अब तक की सबसे बड़ी बढ़ोतरी देखने को मिली है। एयरपोर्ट्स काउंसिल इंटरनेशल के मुताबिक एशिया पैसिफिक में फ्लाइट टिकटों के फेयर में अब तक की सबसे बड़ी तेजी देखने को मिली है।

ACI एशिया पैसिफिक ने कहा कि उन्होंने स्टडी में पाया है कि इंटरनेशनल एयरफेयर में 50 फीसदी तक की बढ़ोतरी हुई है। जबकि डोमेस्टिक रूट्स पर किराए में 10 फीसदी से कम की बढ़ोतरी हुई है। एसीए ने दुनिया के टॉप

10 एविएशन मार्केट के 36000 रूट्स पर ये स्टडी की। उन्होंने अपनी स्टडी में पाया है कि बीते कुछ सालों में इंटरनेशल एयर फेयर में जबरदस्त तेजी देखने को मिली है। जिन एविएशन मार्केट में इंटरनेशनल एयरफेयर में सबसे ज्यादा तेजी देखने को मिली है, उसमें भारत पहले नंबर पर है। ष्टढ्ढ के मुताबिक भारत में एयर फेयर में 41 फीसदी तक की बढ़ोतरी हुई है। वहीं, श्व में 34 फीसदी, सिंगापुर में 30 फीसदी और ऑस्ट्रेलिया में 23 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। कोरोना के बाद साल 2021 के अंत में इंटरनेशनल फ्लाइट एक बार फिर से शुरू हुए। पोस्ट कोविड हवाई किराए में सबसे ज्यादा तेजी आई है। वैश्विक स्तर इंटरनेशनल फ्लाइटकिराए में रॉकेट के रफ्तार से तेजी देखने को मिली है। डिमांड का असर फ्लाइट टिकटों के किराए पर देखने को मिला है।

2000 प्रतिशत चढ़ गए इलेक्ट्रिक बस बनाने वाली कंपनी के शेयर, 1000 करोड़ रुपये का मिला है ऑर्डर

नई दिल्ली, एजेंसी। इलेक्ट्रिक बस बनाने वाली कंपनी ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयरों में मंगलवार को तूफानी तेजी आई है। ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयर मंगलवार को 10 पर्सेंट से ज्यादा की तेजी के साथ 940.55 रुपये पर पहुंच गए हैं। कंपनी के शेयरों का यह 52 हफ्ते का नया हाई लेवल है। ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 374.35 रुपये है। कंपनी के शेयरों में पिछले 3 साल में 2000 पर्सेंट से ज्यादा की तेजी आई है।

42 रुपये से 900 के पार पहुंचे कंपनी के शेयर: ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयर 27 मार्च 2020 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में 42.35 रुपये पर थे। कंपनी के शेयर 13 जून 2023 को बीएसई में 940.55 रुपये पर पहुंच गए हैं।

ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयरों ने इस पीरियड में 2060 पर्सेंट का रिटर्न दिया है। अगर किसी व्यक्ति ने 27 मार्च 2020 को ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयरों में 1 लाख रुपये लगाए होते और कंपनी के शेयर न बेचे होते तो मौजूदा समय में इन शेयरों की वैल्यू 22.21 लाख रुपये होती।

इस साल अब तक शेयरों में 75 प्रतिशत से ज्यादा की तेजी: ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयरों में इस साल अब तक 75 पर्सेंट से ज्यादा की तेजी आई है। कंपनी के शेयर 2 जनवरी 2023 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में 518.05 रुपये पर थे, जो कि अब 940.55 रुपये पर पहुंच गए हैं। पिछले एक महीने में ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक के शेयरों में करीब 39 पर्सेंट का उछाल आया है।

1000 करोड़ रुपये की इलेक्ट्रिक बसें सप्लाई करने का ऑर्डर: मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड की सहायक कंपनी ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक ने पिछले दिनों बताया था कि उसे तेलंगाना स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन से 550 इलेक्ट्रिक बसें सप्लाई करने के लिए 1000 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला है। इन बसों की डिलीवरी 16 महीने में की जानी है।

विंडीज दौरे से पुजारा-उमेश होंगे बाहर

टेस्ट में यशस्वी और टी20 में रिंकू-जितेश को मिल सकता है मौका

मुंबई । भारत की विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल में लगातार दूसरी हार के बाद अगले महीने दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए वेस्टइंडीज दौरे पर जाने वाली टीम से अनुभवी खिलाड़ी चेतेश्वर पुजारा और उमेश यादव का पत्ता कट सकता है। चयन समिति भविष्य के मुश्किल दौरों के लिए खिलाड़ियों की अगली पीढ़ी को तैयार करना चाहती है। ऐसे में युवा बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और तेज गेंदबाज मुकेश कुमार को पुजारा और उमेश का रिप्लेसमेंट माना जा रहा है।

शिव सुंदर दास की अगुआई वाली चयन समिति और मुख्य कोच राहुल द्रविड़ अगले ङ्खञ्जष्ट साइकिल में जाने से पहले कुछ विकल्पों पर विचार कर रहे हैं, जो कि कैरेबियन में सीरीज के साथ शुरू हो सकता है। ऐसा माना जा रहा है कि इस टेस्ट चैंपियनशिप साइकिल में दो कमजोर कड़ी पुजारा और उमेश साबित हुए, जो लंबे समय से कुछ खास करने में नाकाम रहे हैं।

पूर्व राष्ट्रीय चयनकर्ता देवांग गांधी ने पीटीआई से कहा- आपको युवाओं और अनुभव के बीच एक संतुलन बनाने की जरूरत है। विचार दीर्घकालिक होना चाहिए और आपको अभी दो साल के टेस्ट साइकिल को देखना होगा। मेरा मानना है कि यशस्वी जायसवाल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के लिए तैयार हैं। उन्होंने रणजी, ईरानी और दलीप ट्रॉफी में दोहरा शतक बनाया है। .

एक अन्य पूर्व राष्ट्रीय चयनकर्ता ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि पिछले दिसंबर में बांग्लादेश के दौरे के बाद से बीसीसीआई ने कोई भी ए टूर प्रोग्राम नहीं कराया जो कि गलत है। उन्होंने कहा- देखिए, उमेश अपने करियर के अंतिम पड़ाव पर हैं. लेकिन बिना ए टूर कार्यक्रम के आप नहीं जानते कि कौन तैयार है। एक समय था जब लगातार ए

टूर और शैडो सीरीज से हमारे पास मयंक अग्रवाल, ऋषभ पंत, हनुमा विहारी, मोहम्मद सिराज, नवदीप सैनी तैयार थे।

क्या रोहित दो साल तक टेस्ट क्रिकेट खेलेंगे – केएल राहुल सर्जरी के बाद कब वापसी करेंगे, इसकी तारीक तय नहीं है। इसके साथ ही वह कैप्टेंसी की दावेदारी में भी नहीं हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या कप्तान रोहित शर्मा अपने मौजूदा फॉर्म और फिटनेस को देखते हुए दो साल और टेस्ट क्रिकेट खेलना जारी रखेंगे और अगला टेस्ट साइकिल पूरा करेंगे, जबकि वह तब तक लगभग 38 साल के हो चुके होंगे? फिलहाल यह एक बड़ा सवाल है।

एक और सवाल यह है कि अगर पुजारा को बाहर कर दिया जाता है तो अगले एक साल में उप-कप्तान के रूप में कौन बेहतर होगा, क्योंकि वेस्टइंडीज एक ऐसी टेस्ट टीम है जिसके खिलाफ एक युवा खिलाड़ी बतौर उपकप्तान आसानी से शुरुआत कर सकता है। पूर्व चयनकर्ता ने कहा- समस्या यह है कि आप पुजारा को वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट में मौका देते हैं और अगर वह रन बनाते हैं तो आपको उनके साथ एक और साल तक बने रहना होगा क्योंकि इसके बाद दिसंबर तक कोई टेस्ट नहीं है।

कई क्रिकेट एक्सपर्ट्स का मानना है कि 23 साल के शुभमन गिल को बतौर उपकप्तान तैयार करने का यही सही मौका है। अगर टीम मैनेजमेंट इस रोल के लिए किसी अनुभवी खिलाड़ी को ढूंढ रहा है तो रवींद्र जडेजा जैसे ऑल फॉर्मेट प्लेयर एक सही विकल्प साबित हो सकता है। हालांकि, देवांग गांधी ने यह भी कहा कि रविचंद्रन अश्विन जैसा खिलाड़ी भी इस रोल के एकदम सही साबित हो सकता है। इसके अलावा अजिंक्य रहाणे भी सही विकल्प हो सकते हैं।

भारत का वेस्टइंडीज का एक महीने का दौरा होगा। दौरे का आगाज 12 जुलाई से दो मैचों की टेस्ट सीरीज से होगा। टीम इसके बाद तीन वनडे और पांच टी-20 मैचों की सीरीज खेलेगी जिसमें हार्दिक पांड्या की कप्तानी में युवा खिलाड़ियों की टीम मैदान में उतर सकती है। इस टीम में आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मौका मिल सकता है।

टी-20 अंतरराष्ट्रीय ऐसा प्रारूप है जहां टीम चयन के लिए चयनकर्ताओं के पास विकल्प की कोई कमी नहीं होगी। अगले साल अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी-20 वर्ल्ड कप में हार्दिक पांड्या का कप्तान रहना लगभग तय है। टी-20 अंतरराष्ट्रीय टीम में आईपीएल में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मौका मिल सकता है। इनमें रिंकू सिंह और जितेश शर्मा जैसे खिलाड़ियों को जगह मिलना लगभग तय है।

टीम में ऋतुराज गायकवाड़ की वापसी के साथ जायसवाल को मौका मिल सकता है। आईपीएल में 27 विकेट लेने वाले मोहित शर्मा भी टीम वापसी कर सकते हैं। रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे खिलाड़ियों को टी20 में आराम दिया जा सकता है। वहीं, वर्कलोड मैनेजमेंट के तहत मोहम्मद शमी और मोहम्मद सिराज को आराम दिया जा सकता है। अलीगढ़ के रिंकू सिंह ने कोलकाता नाइट राइडर्स से खेलते हुए गुजरात के खिलाफ अंतिम ओवर में पांच गेंदों में पांच छक्के मारे थे।

तुषार देशपांडे ने नाभा के साथ की सगाई, स्कूल में हुआ था प्यार

नई दिल्ली । आईपीएल 2023 में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए शानदार गेंदबाजी करने वाले तुषार देशपांडे ने सगाई कर ली है। तुषार ने नाभा गदमवार के साथ सगाई की है। नाभा और तुषार बचपन के दोस्त हैं। तुषार स्कूल के दिनों से ही नाभा को पसंद करते थे। सगाई के बाद उन्होंने खुद फोटो शेयर कर इसकी जानकारी दी। तुषार की सगाई में टेस्ट क्रिकेट में इस्तेमाल होने वाली लाल लेदर गेंद भी रखी गई थी। इसी के ऊपर दोनों अंगूठियां रखकर तुषार और नाभा ने फोटो खिंचाई। इसके बाद दोनों ने एक-दूसरे को अंगूठी पहनाई।

तुषार देशपांडे की सगाई में चेन्नई के ऑलराउंडर शिवम दुबे और उनकी पत्नी अंजुम खान भी पहुंची थीं। क्रिकेटर ध्रुमिल भी इस सगाई समारोह का हिस्सा बने। अंजुम ने इस सगाई की तस्वीरें भी सोशल मीडिया में शेयर की हैं। शिवम दुबे और तुषार काफी अच्छे दोस्त हैं। इस साल चेन्नई को जीत दिलाने में दोनों का अहम योगदान रहा है। तुषार देशपांडे आईपीएल इतिहास के पहले इंपैक्ट प्लेयर रहे हैं। वहीं, शिवम दुबे ने अधिकतर मैचों में इंपैक्ट प्लेयर के रूप में कमाल का प्रदर्शन किया है।

आईपीएल 2023 में तुषार का कमाल

तुषार देशपांडे ने आईपीएल 2023 में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने 16 मैच में 21 विकेट अपने नाम किए। वह अपनी टीम के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज थे। वहीं, टूर्नामेंट में विकेट लेने के मामले में वह छठे नंबर पर रहे। आईपीएल में कुल 23 मैच खेलने वाले तुषार ने इस सीजन ही शानदार प्रदर्शन किया है। इससे पहले उन्होंने कुल सात आईपीएल मैच खेले थे और चार ही विकेट ले पाए थे। इस सीजन शानदार प्रदर्शन के बाद उनके भारतीय टीम में आने की संभावना भी बढ़ गई है।

बारिश में खुली बस में परेड के साथ मैनचेस्टर सिटी ने मनाया जीत का जश्न

मैनचेस्टर। बारिश और शैंपेन में भीगते हुए मैनचेस्टर सिटी के खिलाड़ियों ने हजारों प्रशंसकों के बीच खुली बस में शहर की परेड के साथ चैम्पियंस लीग फुटबॉल खिताब जीतने का जश्न मनाया। परेड की शुरूआत में खराब मौसम और बारिश के कारण विलंब हुआ लेकिन प्रीमियर लीग, एफए कप और चैम्पियंस लीग खिताबों से लैस दो नीली बसें शहर की सड़कों पर घूमती रही जिसमें खिलाड़ी, सिगार पीजे मैनेजर पेप गार्डियोला बैठे थे।

उनकी टीशर्ट पर लिखा था, ''ट्रेबल विनर्स।'' गार्डियोला ने कहा, '' इस बारिश में ही यह परेड होनी थी वरना यह मैनचेस्टर नहीं है। हमें धूप नहीं, बारिश चाहिये थी और यह परफेक्ट है।'' सिटी ने इंटर मिलान को 1 . 0 से हराकर चैम्पियंस लीग फाइनल जीता। यह उनका पहला चैम्पियंस लीग खिताब है लेकिन टीम छह साल में पांच प्रीमियर लीग खिताब और दूसरा एफए कप जीत चुकी है।

चीन में हिरासत में लिए गए दिग्गज फुटबॉल स्टार मेसी!

बीजिंग । फुटबॉल स्टार लियोनेल मेसी को चीन में एयरपोर्ट पर रोका गया था, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ है। लियोनेल मेसी के पासपोर्ट और वीजा को लेकर कुछ दिक्कत थी जिस कारण उन्हें रोका गया था, मगर बाद में मामला सुलझ गया।

अर्जेंटीना के फुटबॉल स्टार लियोनेल मेसी चीन में मुश्किल में फंस गए है। चीन के एयरपोर्ट पर स्टार फुटबॉलर को हिरासत में लिया गया है। एयरपोर्ट पर हिरासत में लिए जाने का वीडियो भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। चीन पुलिस ने मेसी को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ की है। वीडियो में दिख रहा है कि लियोनेल मेसी बीजिंग एयरपोर्ट पर चीनी पुलिसवालों से घिरे हुए है। दरअसल इन दिनों लियोनेल मेसी अर्जेंटीना और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाले एक फ्रेंडली मैच में खेलने के लिए चीन गए है। दोनों टीमों के बीच ये मुकाबला 15 जून को होना है। इस मुकाबले में हिस्सा लेने के लिए जब वो बीजिंग एयरपोर्ट पर पहुंचे तो एयरपोर्ट से बाहर निकलने के दौरान पुलिस ने उन्हें रोक दिया।

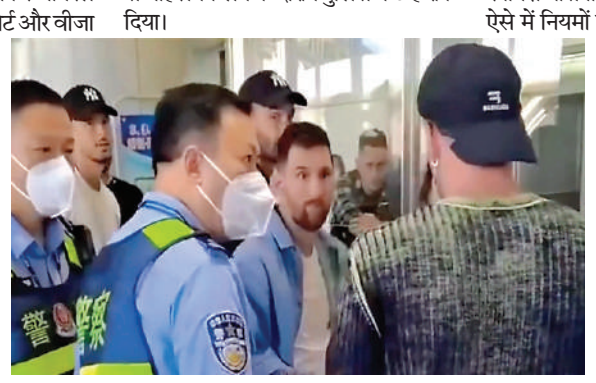

जानकारी के मुताबिक पुलिस ने 10 जून को लियोनेल मेसी को हिरासत में लिया था, जिसका वीडियो अब वायरल हो रहा है। पुलिस ने लियोनेल मेसी को उनके पासपोर्ट की वजह से हिरासत में लिया था। लियोनेल मेसी के पास अर्जेंटीना और स्पेनिश दोनों ही देशों के पासपोर्ट है। चीन की यात्रा करने के दौरान लियोनेल मेसी अर्जेंटीना के नहीं बल्कि स्पेनिश पासपोर्ट से यात्रा कर रहे थे। वहीं स्पेनिश पासपोर्ट पर चीन का वीजा नहीं था। ऐसे में नियमों का पालन न होने पर ही चीनी पुलिस अधिकारियों ने एयरपोर्ट पर लियोनेल मेसी को रोका था।

फैंस को था मेसी का इंतजार – लियोनेल मेसी को अर्जेंटीना के पासपोर्ट की जगह स्पेन के पासपोर्ट से यात्रा करने के कारण कुछ समय के लिए एयरपोर्ट पर रुकना पड़ा था। इस पूरे मसले को सुलझने में करीब आधे घंटे का समय लगा था, जिसके बाद चीन में एंट्री का वीजा लियोनेल मेसी को दिया गया। वीजा मिलने के बाद ही मेसी चीन में एंट्री कर सके। वहीं चीन में भी स्टार फुटबॉलर की दमदार फॉलोइंग है। ऐसे में फैंस एयरपोर्ट के बाहर उनका इंतजार करते रहे। बता दें कि ये सातवीं बार है जब लियोनेल मेसी चीन के दौरे पर है।

सिंधू और प्रणय प्री क्वार्टर फाइनल में, त्रीशा-गायत्री बाहर

जकार्ता। भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने मंगलवार को यहां इंडोनेशिया ओपन विश्व टूर सुपर 1000 प्रतियोगिता के पहले दौर में स्थानीय दावेदार ग्रिगोरिया मारिस्का तुंजुंग के खिलाफ सीधे गेम में जीत दर्ज की। पिछली दो प्रतियोगिताओं के पहले दौर से बाहर होने वाली दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधू ने इंडोनेशिया की विरोधी खिलाड़ी को 38 मिनट में 21-19 21-15 से हराकर प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। सिंधू की ग्रिगोरिया के खिलाफ पिछले तीन मैच में यह पहली जीत है। उन्हें इंडोनेशिया की इस खिलाड़ी के खिलाफ इसी साल मैड्रिड मास्टर्स और मलेशिया मास्टर्स में हार का सामना करना पड़ा था।

विश्व रैंकिंग में 13वें स्थान पर खिसकी सिंधू के खिलाफ ग्रिगोरिया ने पहले गेम में अच्छी शुरुआत करते हुए 9-7 की बढ़त बनाई लेकिन भारतीय खिलाड़ी ने अपनी लंबाई का फायदा उठाते हुछ अच्छे अंक जुटाए और ग्रिगोरिया की लगातार तीन गलतियों से ब्रेक तक 11-10 की बढ़त बना ली और फिर गेम जीतने में सफल रही। दूसरे गेम में सिंधू बेहतर लय में नजर आईं। ग्रिगोरिया ने भी काफी गलतियां भी की जिसका फायदा उठाकर सिंधू गेम और मैच जीतने में सफल रही। सिंधू की ग्रिगोरिया के खिलाफ 10 मैच में यह आठवीं जीत है जबकि उन्हें दो बार हार का सामना करना पड़ा है। सिंधू की आगे की राह आसान नहीं होगी क्योंकि अगले दौर में उन्हें तीसरी वरीय ताइ जू यिंग से भिड़ना है।

अश्विन को ड्रॉप करने के फैसले पर सुनील गावस्कर हुए आग बाबूला, सरेआम रोहित-द्रविड़ की लगाई क्लास

नई दिल्ली । भारतीय टीम को वर्ल्ड चैंपियनशिप के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के हाथों 209रनों से करारी शिक्सत मिली। इस हार के बाद टीम इंडिया का एक बार फिर से ङ्खञ्जष्ट स्नद्बठ्ठड्डद्य जीतने का सपना अधूरा रह गया।

भले ही इस बात को दो दिन बीत चुके हो, लेकिन अभी तक इस हार का दर्द भारतीय फैंस और दिग्गज भुला नहीं पा रहे है।

रोहित शर्मा और राहुल द्रविड़ पर कई दिग्गज से लेकर फैंस अपनी भड़ास निकाल रहे है। वहीं, प्लेइंग-11 में रविचंद्रन अश्विन को शामिल नहीं करने के फैसले पर हाल ही में पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि अश्विन जैसा बर्ताव इस टीम में किसी के साथ नहीं हुआ है। आइए जानते हैं रविचंद्रन अश्विन को मौका नहीं मिलने पर सुनील गावस्कर ने क्या कहा है?

दरअसल, डब्ल्यूटीसी के फाइनल मैच में भारतीय टीम की हार के बाद टीम इंडिया के पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने रविचंद्रन अश्विन (को प्लेइंग-11 से बाहर रखने के फैसले पर अपनी भड़ास निकाली है। गावस्कर ने इस फैसले पर कप्तान रोहित शर्मा, कोच राहुल द्रविड़ और विराट कोहली से लेकर रवि शास्त्री को लपेट लिया है।

अश्विन को प्लेइंग-11 से बाहर रखने के फैसले पर महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने भी हैरानी जताई थी। उन्होंने कहा था कि टीम मैनजमैंट का ये फैसला उनके समझ से परे है।

इस कड़ी में गावस्कर ने एक कॉलम में लिखा, ÷आईसीसी की टेस्ट रैंकिंग में नंबर-1 भारतीय गेंदबाज आर अश्विन को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की प्लेइंग-ङ्गढ्ढ से ड्रॉप करने का फैसला सही नहीं था। ऑस्ट्रेलियाई टीम के पास 5 बाएं हाथ के बैटर्स थे और जबकि एक बाएं हाथ के खिलाड़ी ट्रेविस हेड मौजूद थे, जिन्होंने पहली पारी में शतक जड़ा था, दूसरे बाएं हाथ के बल्लेबाज एलेक्स कैरी ने पहली पारी में 48 और दूसरी में नाबाद 66 रन ठोके थे। इस दौरान अश्विन के साथ जैसा बर्ताव हुआ ऐसा किसी के सा नहीं हुआ।

चैम्पियंस ट्रॉफी से पहले पाकिस्तान हॉकी को आर्थिक मदद

कराची। चेन्नई में अगस्त में होने वाली एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में भागीदारी का मार्ग प्रशस्त करते हुए पाकिस्तान हॉकी महासंघ को सरकार ने ढाई करोड़ रूपये आवंटित किये हैं। पाकिस्तान खेल बोर्ड के एक अधिकारी ने बताया कि ओमान में एशियाई जूनियर कप में राष्ट्रीय जूनियर टीम के अच्छे प्रदर्शन के बाद अंतर प्रांत समन्वय मंत्री अहसान मजारी ने इस सहायता को मंजूरी दी। अधिकारी ने कहा, '' इस धनराशि से जूनियर टीम के खिलाड़ियों और अधिकारियों को दैनिक भत्ते और एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में भागीदारी का खर्च दिया जायेगा।''

उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तानी टीम के डच कोच सीगफ्राइड एकमैन की तनख्वाह भी जल्दी ही दी जायेगी। एकमैन महीनों से वेतन नहीं मिलने के कारण टीम को छोड़कर स्वदेश लौट गए हैं। पीएसबी और पीएचएफ के बीच चुनाव और संवैधानिक मसलों पर मतभेद होने के कारण सरकार की ओर से आर्थिक सहायता बंद हो गई थी। अब मसला सुलझने के कारण धनराशि आवंटित की गई है।

दो साल में चार शतक लगा पाए हैं रोहित, विराट और पुजारा: भारतीय टेस्ट टीम में बड़े बदलाव की जरूरत!

नई दिल्ली । विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में भारत की लगातार दूसरी हार ने शिवसुंदर दास की अगुवाई वाली चयन समिति की माथा-पच्ची को बढ़ा दिया है। टेस्ट चैंपियनशिप का अगला फाइनल दो साल बाद 2025 में खेला जाना है। 2023-25 की टेस्ट चैंपियनशिप को ध्यान में रखते हुए चयन समिति को अभी से कड़े फैसले लेने होंगे। खासतौर पर बिग थ्री कप्तान रोहित शर्मा (उम्र 36 साल), विराट कोहली (उम्र 34 साल) और चेतेश्वर पुजारा (उम्र 35 साल) की उम्र, फॉर्म, पिछला प्रदर्शन और उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए मंथन करने का वक्त आ गया है। टेस्ट चैंपियनशिप की फाइनल की हार का सबसे बड़ा असर पुजारा और उमेश यादव पर पड़ने जा रहा है। विशुद्ध टेस्ट बल्लेबाज पुजारा 2021-23 की टेस्ट चैंपियनशिप के चक्र में 17 टेस्ट में 32 की औसत से सिर्फ 932 रन बना पाए, जिसमें एक शतक शामिल रहा।

इंग्लैंड में खेलने के बावजूद नहीं चले पुजारा – ओवल में खेलने वाली भारतीय टीम में पुजारा एकमात्र ऐसे बल्लेबाज थे, जिन्हें फाइनल में तैयारी का पूरा मौका मिला। वह ससेक्स के लिए काउंटी क्रिकेट खेले और जमकर रन भी बनाए, लेकिन फाइनल में वह नहीं चले। चयनकर्ता नंबर तीन के महत्वपूर्ण स्थान पर पुजारा पर लगातार भरोसा करते आए हैं, लेकिन सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2021 में उनकी 77 रन की पारी और चट्टोग्राम में बांग्लादेश के खिलाफ बनाए गए 90 और 102 रन के अलावा उनके बल्ले ने निराश ही किया।

रणजी, ईरानी, दलीप ट्रॉफी दोहरे शतक लगाए हैं यशस्वी ने – जुलाई में भारत को वेस्टइंडीज में उसके खिलाफ दो टेस्ट खेलने हैं। देखने वाली बात यह होगी कि इस सीरीज के लिए 35 साल के पुजारा को मौका दिया जाता है या फिर रणजी, ईरानी और दलीप ट्रॉफी में दोहरा शतक लगाने वाले यशस्वी जायसवाल जैसे युवा को आजमाया जाता है। पुजारा को अगर इस सीरीज में मौका मिला और उन्होंने वहां रन बनाए तो उन्हें दिसंबर, 2023 में होने वाली अगली सीरीज में भी मौका मिलेगा। ऐसे में नंबर तीन की जगह पर किसी युवा को मौका देने में देर भी हो सकती है। पूर्व चयनकर्ता देबांग गांधी तो यशस्वी की वकालत करते हुए कहते हैं कि उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौका देने का वक्त आ गया है। उनका संयम जबरदस्त रहा है। उनको अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहन देने का यह सही समय है।

उमेश का विकल्प भी आजमाने का समय – उमेश यादव भी 35 साल के हो चुके हैं। घर में तो उनका प्रदर्शन फिर भी ठीक रहा है, लेकिन विदेशी धरती पर वह प्रभाव नहीं छोड़ पाए हैं। एक पूर्व चयनकर्ता का कहना है कि उमेश अपने कॅरिअर के अंतिम दौर में हैं, लेकिन उनके विकल्प मौजूद नहीं हैं। इंडिया ए कार्यक्रम के तहत हमारे पास एक समय हनुमा विहारी, ऋषभ पंत, मोहम्मद सिराज, नवदीप सैनी, मयंक अग्रवाल जैसे विकल्प मौजूद रहते थे, लेकिन वर्तमान में ऐसा नहीं है। बंगाल के मुकेश कुमार जरूर विकल्प दिख रहे हैं, लेकिन उनके पास तेजी नहीं है। ऑस्ट्रेलिया को उसी की धरती पर हराने वाली टीम इंडिया के सदस्य रहे टी नटराजन पर बाद में विश्वास नहीं दिखाया गया।

भारतीय कप्तान बनने वाले हैं पिता, मैदान में जीत के बाद फैंस के साथ ऐसे शेयर की गुड न्यूज

नई दिल्ली । भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान सुनील छेत्री जल्द ही पापा बनने वाले है। इस गुड न्यूज को सुनील छेत्री ने मैच में जीत हासिल करने के बाद मैदान पर खास अंदाज में दर्शकों के साथ साझा किया। इंटरकांटिनेंटल कप के दूसरे मुकाबले में भारतीय टीम ने 12 जून को वनुआतु को 1-0 से मात दी। इस मुकाबले में इकलौता गोल सुनील छेत्री ने किया, जिसकी बदौलत भारतीय टीम का फाइनल का टिकट पक्का हुआ। भारतीय टीम इस पूरे मकुाबले के दौरान वनुआतु की टीम पर हावी रही। भारतीय टीम ने इस मुकाबले में विश्व रैंकिंग में 164 वें स्थान पर काबिज वनुआतु को मात दी है। इस मुकाबले में सुनील छेत्री ने 81वें मिनट पर गोल किया और टीम को जीत दिलाई। इस मुकाबले के दौरान सुनील छेत्री ने गेंद को अपने जर्सी में छिपा लिया। उन्होंने स्टेडियम में मौजूद अपनी पत्नी को देखते हुए खास अंदाज में जश्न मनाया। वहीं जिस तरह से छेत्री ने मैदान पर जश्न मनाया उससे उन्होंने बता दिया है कि वो पिता बनने के लिए बेहद उत्साहित है।

पत्नी को देखकर जताई खुशी – इस मैच के दौरान सुनील छेत्री ने अपनी पत्नी सोनम भट्टाचार्य को देखकर खुशी जताई और उन्हें फ्लाइंग किस भी किया। वहीं सुनील छेत्री की पत्नी ने भी जीत के बाद पति की हौसलाअफजाई की और उनके लिए तालियां भी बजाई। इस दौरान सोनम भी बेबी बंप के साथ नजर आई थी।

ऐसा रहा था मुकाबला – करिश्माई खिलाड़ी और कप्तान सुनील छेत्री के गोल के दम पर भारत ने इंटरकांटिनेंटल कप के अपने दूसरे मुकाबले में सोमवार को यहां वनुआतु को

1-0 से शिकस्त देकर फाइनल का टिकट पक्का किया। भारतीय टीम पूरे मैच के दौरान हावी रही लेकिन विश्व रैंकिंग में 164 वें स्थान पर काबिज वनुआतु की रक्षापंक्ति ने उसे काफी देर तक बढ़त लेने से रोके रखा। छेत्री ने मैच के 81वें मिनट में शुभाशीष बोस के द्वारा बायें किनारे से बॉक्स की ओर भेजी गयी गेंद को अपने बायें पैर से गोल पोस्ट में डाल दिया। टीम गुरुवार को अपने आखिरी राउंड रोबिन मैच में लेबनान का सामना करेगी। विश्व रैंकिंग में 101वें स्थान पर काबिज भारत पूरे मैच में हावी रहा। टीम ने शुरुआती हाफ में 62 प्रतिशत समय तक गेंद को अपने नियंत्रण में रखा और गोल करने के 13 प्रयास किये। दुनिया में 164 वें स्थान पर काबिज वनुआतु की टीम इस दौरान एक बार भी भारतीय गोल पोस्ट पर निशाना नहीं साध सकी। पदार्पण कर रहे नंदकुमार सेकर ने प्रभावित किया लेकिन उन्होंने गोल करने के कई मौके भी गंवाये। उनके पास 36वें मिनट में महेश नौरेम के बनाये मौके पर भारत को बढ़त दिलाने का सुनहरा मौका था लेकिन उन्होंने गेंद का गोलपोस्ट से दूर मार दी। नौरेम ने इसके बाद अग्रिम पंक्ति के खिलाड़ियों के लिए कई मौके बनाये। मैच के 40वें मिनट में दायें ओर से लगाये उनके क्रास को छेत्री गोल में नहीं बदल सके।दूसरे हाफ में भी नौरेम के एक और प्रयास पर छेत्री का हेडर गोल पोस्ट के ऊपर से निकल गया। गोल की तलाश में भारतीय कोच इगोर स्टिमक ने पांच मिनट के अंदर चार बदलाव करते हुए अनिरुद्ध थापा, जैक्सन सिंह और सहल अब्दुल समद और लल्लिंजुआला छांगते को मैदान में उतारा। खिलाड़ियों को बदलने के बाद टीम के आक्रमण को गति मिली लेकिन भारतीय खिलाड़ी वनुआतु के शारीरिक रूप से मजबूत खिलाड़ियों की रक्षापंक्ति को नहीं भेद पा रहे थे। छेत्री ने मैच के आखिरी 10 मिनट में एक बार करिश्मा करते हुए टीम को जीत दिला दी।

संक्षिप्त समाचार

तेलंगाना में नर्स की मौत पर रहस्य बरकरार

हैदराबाद, एजेंसी। तेलंगाना के विकाराबाद जिले में 19 वर्षीय एक नर्स की मौत पर रहस्य बना हुआ है। पुलिस मामले में हत्या और आत्महत्या के बीच उलझी हुई है। पुलिस को संदेह है कि नर्स सिरिशा ने पानी की टंकी में कूदकर आत्महत्या की है, लेकिन ग्रामीणों का आरोप है कि उसकी हत्या की गई है। रविवार की सुबह परिगी थाना क्षेत्र के कल्लापुर गांव के पास तालाब में सिरिशा का शव मिला। शव पर चोट के कई निशान थे। शनिवार की रात पिता और देवर से झगड़े के बाद वह घर से निकली थी। पोस्टमार्टम रविवार को किया गया, लेकिन पुलिस के अनुरोध पर एक महिला चिकित्सा अधिकारी ने सोमवार को गांव का दौरा किया और फिर से शव की जांच की। उनकी राय में, मौत पानी के कारण सांस नली के अवरुद्ध होने के कारण हुई। पुलिस ने सिरिशा के पिता जगैया और उसके देवर अनिल से पूछताछ की, जिन्होंने खाना बनाने से इनकार करने पर कथित तौर पर उसकी पिटाई की थी। पुलिस ने सिरिशा के कॉल डेटा का भी विश्लेषण किया लेकिन कुछ भी संदिग्ध नहीं लगा। जांच में पता चला कि सिरीशा अपने पिता और देवर द्वारा उसे प्रताड़ित करने और उसका मोबाइल फोन छीनने के बाद से परेशान थी। उसने घर पर आत्महत्या का प्रयास किया लेकिन उन्होंने उसे रोक दिया। कुछ देर बाद सिरिशा घर से चली गई और जब वह देर रात तक नहीं लौटी तो उसके परिजनों ने तलाश शुरू की। उनकी कोशिश नाकाम रही तो उन्होंने पुलिस से संपर्क किया। अगले दिन सुबह सिरिशा का शव गांव के पास पानी की टंकी में मिला। पुलिस को शक है कि वह टंकी में कूद गई और डूबने से उसकी मौत हो गई। सर्किल इंस्पेक्टर वेंकटरमैया ने कहा कि वे सभी एंगल से मामले की जांच कर रहे हैं। इस बीच, राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) ने तेलंगाना के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को सिरीशा की मौत पर एक रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया है। एनसीडब्ल्यू की चेयरपर्सन रेखा शर्मा ने डीजीपी अंजनी कुमार को पत्र लिखकर तीन दिन में रिपोर्ट देने को कहा है। उन्होंने डीजीपी से दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है।

दिल्ली में टैक्सी ड्राइवर की गोली मार कर हत्या

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के द्वारका इलाके में निजी दुश्मनी को लेकर एक व्यक्ति ने 38 साल के एक टैक्सी ड्राइवर की उसकी कार के अंदर गोली मारकर हत्या कर दी। एक अधिकारी ने मंगलवार को ये जानकारी दी। मृतक की पहचान गालिबपुर निवासी धीरेंद्र के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार सोमवार की शाम साढ़े सात बजे खैरा मोड़ के पास हत्या की वारदात हुई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, धीरेंद्र अपनी टैक्सी में मृत पाया गया। उसके शरीर पर बंदूक की गोली के निशान थे। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि एक संदिग्ध खैरा मोड़ पर उससे मिलने आया था। दोनों धीरेंद्र की कार में बैठे और बातचीत कर रहे थे, इस दौरान संदिग्ध ने धीरेंद्र को गोली मार दी। अधिकारी ने कहा, आरोपी को पकड़ने के लिए हमने कई टीमों का गठन किया है। हमारे पास इस मामले में महत्वपूर्ण सुराग हैं। प्रथम दृष्टया, व्यक्तिगत दुश्मनी हत्या के पीछे संदिग्ध कारण है।

बेंगलुरु में मां की हत्या कर ट्रॉली बैग में शव लेकर महिला पहुंची थाने

बेंगलुरु, एजेंसी। एक चौंकाने वाली घटना में बेंगलुरु में एक महिला ने अपनी ही मां की हत्या कर दी और फिर शव को एक ट्रॉली बैग में भरकर पुलिस स्टेशन ले आई। पुलिस ने मंगलवार को ये जानकारी दी। आरोपी महिला की पहचान 39 वर्षीय सेनाली सेन के रूप में हुई है, जो बिलेकहल्ली इलाके के एनएसआर ग्रीन अपार्टमेंट में रहती है। वह पश्चिम बंगाल की रहने वाली है और छह साल से यहां रह रही है। मृतका की पहचान 70 वर्षीय विभा पाल के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, अपार्टमेंट में सेनाली अपनी मां, पति और सास के साथ रहती थी। मृतका विभा पाल और सेनाली की सास में लगभग हर दिन झगड़ा होता था और एक समय तो विभा पाल ने धमकी भी दी थी कि वह नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या कर लेगी। पुलिस ने कहा कि रोज-रोज के झगड़ों से निराश सेनाली ने जबरदस्ती अपनी मां को नींद की 90 गोलियां खिला दीं और जब विभा पाल ने पेट दर्द की शिकायत की तो उसने कथित तौर पर दुपट्टे से गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी। बाद में आरोपी महिला शव को एक ट्रॉली बैग में भरकर सीधे थाने आ गई। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जांच शुरू कर दी है।

बृजभूषण मामले में दिल्ली पुलिस ने 3 देशों से मांगी मदद, जुटा रही सीसीटीवी और फोटोज

नई दिल्ली, एजेंसी। डब्ल्यूएफआई यानी भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह के खिलाफ दिल्ली पुलिस की जांच जारी है। खबर है कि पहलवानों और सरकार के बीच बातचीत में 15 जून तक का समय तय हुआ है। खास बात है कि इस जांच में अब तीन और देशों (कजाकिस्तान, मंगोलिया और इंडोनेशिया) की एंट्री होती नजर आ रही है। दिल्ली पुलिस इन देशों की मदद से सबूत जुटा रही है। कई पहलवानों ने सिंह पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए हैं। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली पुलिस ने तीनों देशों में कुश्ती संघों को नोटिस भेजा है। यहां सीसीटीवी फुटेज और तस्वीरें देने के लिए कहा गया है। दरअसल, महिला पहलवानों ने 2016, 2018 और 2022 में यहां पर यौन उत्पीड़न किए जाने के आरोप लगाए हैं। पहलवानों ने जंतर मंतर पर जारी अपने धरना प्रदर्शन को हाल ही में खत्म कर दिया है। इधर, कुश्ती महासंघ में चुनाव की तैयारियां जारी हैं। फेडरेशन ने सोमवार को जानकारी दी है कि 4 जुलाई को चुनाव आयोजित होंगे। इसके लिए हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश महेश मित्तल को रिटर्निंग ऑफिसर बनाया गया है। खास बात है कि सिंह यह चुनाव नहीं लड़ सकेंगे। इसकी वजह उनका तीन बार का अध्यक्ष के तौर पर कार्यकाल है। नियमों के तहत वह किसी पद के लिए चुनाव नहीं लड़ सकते हैं। हाल ही में कुछ पहलवानों ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की थी। उसके बाद कुछ पहलवान धरना प्रदर्शन खत्म कर वापस हो गए थे। अब कहा जा रहा है कि पहलवानों को 15 जून तक आरोपपत्र दाखिल होने का इंतजार है। इसके बाद आंदोलन को लेकर बड़ा ऐलान किया जा सकता है। रेसलर विनेश फोगाट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर खेल मंत्री अनुराग ठाकुर तक पर सवाल उठा चुकी हैं। इससे पहले भी सरकार की तरफ से जांच के लिए कमेटी गठित की जा चुकी थी। शुरुआत में पहलवान सिंह के खिलाफ मामला दर्ज करने की मांग कर रहे थे। फिलहाल, दिल्ली पुलिस ने उनके खिलाफ दो स्न्ढ्ढक्रदर्ज की हैं।

एनआईए ने जेल में बंद अलगाववादी हुर्रियत नेता की संपत्ति कुर्क की

श्रीनगर, एजेंसी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने मंगलवार को जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर जेल में बंद अलगाववादी हुर्रियत नेता अयाज अकबर की संपत्ति कुर्क कर ली। एनआईए सूत्रों ने बताया कि दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट के आदेश से लैस एजेंसी के अधिकारियों ने जिले के शाल्टेंग इलाके में अकबर की संपत्ति को कुर्क कर लिया। सूत्रों ने कहा, आम जनता को सूचना देने के लिए कुर्क की गई संपत्ति पर नोटिस लगाया गया है। अकबर पिछले छह साल से जेल में है। एनआईए ने सोमवार को कुपवाड़ा जिले में जहूर अहमद वटाली की संपत्ति कुर्क की थी।

लेब्राडोर ने घर में घुसकर बच्चे को नोचा, घसीटकर हड्डी तोड़ी; मालिक ने दी धमकी

नई दिल्ली, एजेंसी।
गीता कॉलोनी में पालतू कुत्ते ने घर में घुसकर पांच साल के मासूम पर हमला कर दिया। उसके बाएं हाथ पर काटा और घसीटकर हाथ की हड्डी तोड़ दी। शोर सुनकर परिजन दौड़े और बच्चे को कुत्ते के चंगुल से छुड़ाया। परिजन बच्चे को अस्पताल लेकर गए, जहां सोमवार को उसके हाथ की सर्जरी की गई। आरोप है कि इसका विरोध करने पर कुत्ते के मालिक और उसके रिश्तेदारों ने गाली-गलौज की और धमकी दी। बच्चे के पिता की शिकायत पर पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

पीड़ित बच्चा परिवार के साथ गीता कॉलोनी के शास्त्री नगर इलाके में रहता है। पिता निजी

कंपनी में काम करते हैं। बच्चे के 39 वर्षीय पिता ने बताया कि शनिवार शाम को वह दफ्तर गए थे। उनका बेटा और अन्य लोग घर में मौजूद थे। घर का दरवाजा खुला हुआ था और उनका बेटा घर में खेल रहा था। शाम करीब 7.30 बजे पड़ोसी का पालतू कुत्ता (लेब्राडोर मादा) अचानक से घर में घुस गया और बेटे पर हमला कर दिया। उनके बेटे का बायां हाथ दांतों से पकड़ लिया और काटते हुए इधर-उधर घसीटने लगा।

शोर सुनकर परिजन दौड़े और कुत्ते को भगाकर बच्चे को बचाया। बच्चे के हाथ से खून निकल रहा था और वह दर्द से चीख रहा था। परिजन तुरंत बच्चे को यमुना बाजार स्थित संत परमानंद अस्पताल लेकर गए, जहां उसका उपचार किया जा रहा है। पीड़ित परिजनों को आरोप है कि घटना के बाद जब उन्होंने कुत्ता मालिक से उपचार कराने के लिए कहा तो वह भड़क गया। आसपास रहने वाले उसके रिश्तेदार भी पहुंच गए और उनके साथ गाली-गलौच करने लगे। इसके बाद धमकी भी देने लगे। वह झगड़े से बचने के लिए तुरंत अपने बच्चे लेकर अस्पताल चले गए और पुलिस को सूचना दी। बच्चे के पिता का आरोप है कि कुत्ता मालिक ने शाम को घुमाने के दौरान कुत्ते को खुला छोड़ रखा था। जिससे कुत्ता उनके घर में घुस गया और बच्चे को निशाना बनाया। अगर कुत्ते को घुमाते समय पकड़कर रखते तो ऐसा नहीं होता। वहीं अगर वह कुत्ते के साथ में रहते तो भी उसके घुसते ही काबू कर सकते थे और ऐसी घटना नहीं होती। बच्चे के पिता ने बताया कि बेटे के बाएं हाथ की हड्डी टूटी है। इसके बाद सोमवार को कई घंटे की सर्जरी के दौरान उसके हाथ में तार डाले गए। बाद में उसे ऑपरेशन थियेटर से निकालाकर वॉर्ड में शिफ्ट किया गया। उनका बेटा अभी कुछ दिनों तक अस्पताल में रहेगा। उसे ठीक होने में लंबा समय गेगा।

मुंबई के जुहू में चार नाबालिग लड़के डूबे, दो का शव बरामद

मुंबई, एजेंसी।
बीएमसी आपदा नियंत्रण ने मंगलवार को बताया कि मुंबई पुलिस ने जुहू के पास समुद्र में बह गए चार नाबालिक लड़कों में से दो के शव बरामद कर लिए हैं और दो अन्यकी तलाश फिर से शुरू की गई है। जुहू कोलीवाड़ा इलाके में ये सभी लड़के सोमवार शाम अरब सागर में बह गए थे। पुलिस ने धर्मेश वलजी फौजिया और शुभम योगेश भोगानिया, दोनों 16 के शव बरामद किए और उन्हें आर.एन. कूपर अस्पताल भेज दिया। दो अन्य, मनीष योगेश भोगानिया (12) और जय रोशन ताजबरिया (15) अभी भी समुद्र में लापता हैं। बिपोरजोय चक्रवाती तूफान से पहले समुद्र उफान पर है और ऊंची लहरें उठ रही हैं। सोमवार शाम डूबने वाले कुल पांच पीड़ितों में से एक लड़के को स्थानीय लोगों और मछुआरों ने बचा लिया था।

गुरुग्राम में नए मेट्रो रूट पर बनेंगे 27 आधुनिक स्टेशन, यात्री उठा सकेंगे लजीज खाने से लेकर शॉपिंग तक का मजा

गुरुग्राम, एजेंसी।
गुरुग्राम में हुडा सिटी सेंटर से लेकर साइबर सिटी तक नए मेट्रो रूट पर 27 आधुनिक स्टेशन बनाए जाएंगे। हरियाणा मास रैपिड ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचएमआरटीसी) ने इस पर तेजी से काम करना शुरू कर दिया है। मेट्रो स्टेशन में मॉल, फूड कोर्ट और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स भी खुलेंगे, ताकि यहां पर यात्री सफर के साथ-साथ खरीदारी भी कर पाएंगे । टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी है। जल्द ही कंपनी को मेट्रो रूट और स्टेशन का डिजाइन करने के लिए कार्य आंवटन किया जाएगा। बता दें कि सात जून को केंद्रीय कैबिनेट ने 28.50 किलोमीटर लंबे इस रूट को मंजूरी दे दी थी। स्टेशन और रूट को डिजाइन करेगी कंपनी = एचएमआरटीसी ने स्टेशन और रूट डिजाइन करने के लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली है। जल्द ही कंपनी का चयन कर काम आवंटित कर दिया जाएगा। कंपनी मेट्रो रूट के 27 स्टेशन और एक डिपो के रूट का भी डिजाइन तैयार करेगी। इसके लिए कंपनी को एचएमआरटीसी की तरफ से हिदायत दी गई है कि वह आधुनिक मेट्रो स्टेशन और रूट का डिजाइन तैयार करें। इसमें स्टेशन में फूड कोर्ट,मॉल की तरफ कंपनियों के आउटलेट और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स की भी सुविधा हो। यात्रियों से प्रतिक्रिया भी ली जाएगी = मेट्रो स्टेशन पर यात्रियों के लिए हर सुविधा उपलब्ध होगी। लोगों से फीडबैक भी लिया जाएगा। हर मेट्रो स्टेशन पर यात्रियों की बेहतर सुविधाओं के लिए लिफ्ट,एक्सीलेटर,शिकायत केंद्र,सहायता केंद्र, टिकट मशीन के साथ-साथ व्हील चेयर भी होगी। स्टेशन पर लिफ्ट और एक्सीलेटर के लिए एचएमआरटीसी 135.47 करोड़ रुपये का अलग से बजट रखा है। 27 मेट्रो स्टेशन किस लोकेशन पर बनेंगे, वहां पर पार्किंग के लिए सुविधा अर्जित की जा सकती है भी या नहीं, इसका भी अध्ययन किया जाएगा। उसके बाद रिपोर्ट साझा होगी। ऐसे में पूराने गुरुग्राम में बनने वाले मेट्रो स्टेशन के आसपास पार्किंग के लिए जगह मिल पाना काफी मुश्किल होगा।

वीडियो कॉल कर न्यूड हुई महिला, रिटायर्ड जज का बेटा बना सेक्सटॉर्शन का शिकार

गुरुग्राम, एजेंसी। गुरुग्राम में एक रिटायर्ड जज के बेटे को सेक्सटॉर्शन का शिकार बनाए जाने का मामला सामने आया है। आरोपियों ने रिटायर्ड जज के बेटे को वीडियो कॉल कर उनका आपत्तिजनक वीडियो बनाकर उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया है। आरोपी ने उन्हें कॉल कर ब्लैकमेल भी किया। रिटायर्ड जज की शिकायत पर इस संबंध में गुरुग्राम के सेक्टर-17/18 थाने में पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में रिटायर्ड सेशन जज ने कहा कि उनका बेटा वकील है। 11 जून को वह अपने बेटे के साथ घर के साथ बने अपने दफ्तर में बैठकर बात कर रहे थे, तभी बेटे के मोबाइल पर एक वीडियो कॉल आई, कॉल रिसीव करते ही दूसरी ओर से एक महिला दिखाई दी, जिसने तुरंत अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए। वह कुछ समझ पाते इससे पहले ही आरोपियों ने इसका वीडियो रिकॉर्ड कर लिया और कुछ देर बाद फोन करने वाली उस महिला ने उनके बेटे के मोबाइल पर उन्हें यह आपत्तिजनक वीडियो के पास भेज दी।

2660 फर्जी कंपनियां...15 हजार करोड़ का घोटाला, इस तरह सरकारी खजाने को लगाते थे चूना

नई दिल्ली, एजेंसी।
फर्जी तरीके से कंपनियों का रजिस्ट्रेशन कराकर 15 हजार करोड़ रुपये से अधिक का फजीवाड़ा करने वालों ने तीन टीम बना रखी थी। नोएडा पुलिस अब टीम सी को दबोचने की तैयारी में है। टीम बी के शेष और टीम सी के सभी आरोपियों की सूची तैयार की जा रही है। रिमांड के दौरान गिरफ्तार में आए आरोपियों से हुई पूछताछ में टीम सी की जानकारी मिली है।

डीसीपी हरीश चंदर ने बताया कि आरोपी तीन टीम में काम करते थे। पहली और दूसरी टीम के अधिकतर आरोपियों को दबोच लिया गया है। टीम ए में वह लोग शामिल थे, जो फर्जी तरीके से सिम सक्रिय कराते थे और उसे टीम बी को बेच देते थे। टीम बी संबंधित पेन कार्ड और सिम का इस्तेमाल कर फर्जी कपंनी बनाती थी।

फर्जी कंपनी को टीम बी टीम सी को दे देती थी। इसके लिए वह लाखों रुपये अदा करते थे। टीम

सी में कई कारोबारी और सफेदपोश के नाम होने की जानकारी भी पुलिस को मिली है। टीम सी में शामिल आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए नोएडा पुलिस ने दो अलग टीम बनाई हैं। गिरफ्त में आए आरोपियों की संपत्ति की भी जांच चल रही है। इनके खिलाफ नोएडा पुलिस गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई करने की तैयारी कर रही है। टीम सी की तलाश एसटीएफ की टीम को भी है। एडिशनल डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि आरोपियों से पूछताछ के दौरान, जो तथ्य निकलकर सामने आए हैं, उस आधार पर दबिश का दौर आगे भी जारी रहेगा। अन्य फरार आरोपियों की तलाश में सोमवार को भी पुलिस की आठ टीमों ने राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा और गुजरात में दबिश दी। यूपी के कई शहरों में सिलसिलेवार दबिश चल रही है। हालांकि, सोमवार को कोई अन्य आरोपी दबोचा नहीं जा सका है। नोएडा पुलिस ने 11 दिन पहले 2660 फर्जी कंपनी बना जीएसटी में रजिस्ट्रेशन कराकर 15 हजार करोड़ से अधिक का फ्रॉड करने वाले एक अंतरराज्यीय रैकेट का खुलासा किया था।

तेजी से गायब हो रहीं पेरू की महिलाएं, लोग बोले- यही हाल रहा तो देश में एक भी लड़की नहीं बचेगी

पेरू एजेंसी।
दक्षिण अमेरिकी देश पेरू इन दिनों एक अलग किस्म की चुनौती से जूझ रहा है। सिर्फ 3.2 करोड़ की आबादी वाले इस देश में हर साल लगभग 5 हजार महिलाएं गायब हो जाती हैं। इसमें से ज्यादातर की कभी कोई खबर नहीं मिलती। गायब हुई ज्यादातर लड़कियां नाबालिग या फिर कम उम्र की होती हैं। छोटी-सी आबादी में हर साल बड़ी संख्या में महिलाओं के गायब होने के बाद लोग चिंतित हैं। वहां के महिला संगठन प्रशासन के विरोध में उतर आए हैं। उनका कहना है कि यही स्थिति रही तो एक दिन ऐसा आएगा जब पेरू में कोई महिला नहीं रह जाएगी। देश में तेजी से गायब होती महिलाओं के बीच एक रिपोर्ट आई है। 'व्हाट हैपेंस टू देम' नाम की इस रिपोर्ट में गायब हुई महिलाओं से संबंधित आंकड़े बताए गए हैं।

इस रिपोर्ट के मुताबिक पेरू में साल 2022 में कुल 5380 महिलाएं गायब हुई थीं। जबकि इस साल के शुरूआती चार महीनों में ही 3500 से ज्यादा महिलाएं गायब हो चुकी हैं। हर साल हजारों लड़कियों के गायब होने की रिपोर्ट लिखाई जाती है। बावजूद इसके पुलिस महज कुछ सौ लड़कियों को ही ढूंढ पाती है। गायब होने वाली लड़िकयों के बारे में पेरू और दुनिया भर के मीडिया में कई तरह की बातें

कही जाती हैं। पेरू की पुलिस का तर्क है कि ज्यादातर लड़कियां अपनी मर्जी से जाती हैं और देश के किसी सुदूर हिस्से में गुमनामी में जीवन बसर करती हैं। लेकिन पेरू में ही पुलिस की इस थ्योरी पर भरोसा नहीं किया जाता। वहां काम करने वाले नारीवादी संगठनों का दावा है कि ज्यादातर लड़कियों के गायब होने के पीछ संगठित अपराधी गिरोह हैं। जो रेप और मानव तस्करी के लिए लड़कियों का अपहरण करते हैं; और अपने मकसद में कामयाब नहीं होने पर लड़कियों की हत्या भी कर देते हैं।

जबकि कई लोगों का यह मानना है कि मेडिकल माफिया लड़कियों के अपहरण के बाद बॉडी से जरूरी अंग निकालकर उनकी हत्या कर देते हैं। इन अंगों को ब्लैक मार्केट के जरिए अमीर देशों को भेजा जाता है। 2016 में 24 साल की स्टेफनी डियाज अपनी दो छोटी बच्चियों के साथ एक बर्थडे पार्टी में गई थीं। उनकी बड़ी बेटी की उम्र 5 साल तो छोटी सिर्फ 8 महीने की थी। उस पार्टी के बाद स्टेफनी और उनके बच्चे कभी घर नहीं लौटे। 7 साल बाद भी पुलिस उनके बारे में कोई सुराग नहीं ढूंढ पाई है।

भारतीय पत्रकारों को चीन में रहने की मंजूरी नहीं: आखिरी जर्नलिस्ट से देश छोड़ने को कहा

बीजिंग, एजेंसी।
चीन ने भारत के आखिरी पत्रकार को भी देश छोड़ने का आदेश दे दिया है। यह पत्रकार न्यूज एजेंसी पीटीआइ का है और उसके चीन में रहने से संबंधित डॉक्यूमेंट्स को रिन्यू नहीं किया गया है।

चीन का आरोप है कि भारत में उसके जर्नलिस्ट्स से सही बर्ताव नहीं किया जाता। लिहाजा, वो भी सख्त कदम उठाने पर मजबूर है। हालांकि सोमवार को चीन के रुख में कुछ नरमी देखी गई। उसकी फॉरेन मिनिस्ट्री ने कहा- उम्मीद है, दोनों देश इस तनाव को दूर करने के लिए बीच का रास्ता निकाल लेंगे।

बहरहाल, भारत से पहले यही सलूक अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के साथ भी किया जा चुका है। डोनाल्ड ट्रम्प जब प्रेसिडेंट थे, तब उन्होंने चीन की इन हरकतों का माकूल जवाब दिया था। सोमवार को पहली बार चीन के विदेश मंत्रालय ने दोनों देशों में पत्रकारों को लेकर चल रहे तनाव पर रिएक्शन दिया। फॉरेन मिनिस्ट्री के स्पोक्सपर्सन वांग वेनबिन ने कहा- हालिया कुछ सालों में चीन के पत्रकारों के साथ भारत में सही बर्ताव नहीं किया गया। वह भेदभाव का शिकार हुए। इसके बावजूद हमें उम्मीद है कि भारत हमारे पत्रकारों को वीजा जारी करता रहेगा। वांग ने आगे कहा- हम ये भी उम्मीद करते हैं कि भारत में हमारे जर्नलिस्ट्स के लिए जो परेशानियां पैदा की जाती हैं, उन्हें खत्म किया जाएगा। ऐसे हालात बनाए जाएंगे, जिससे दोनों देशों के पत्रकार एक-दूसरे के देश में सुकून से काम कर सकें। दो महीने पहले तक चीन में भारत के कुल तीन पत्रकार थे। पिछले दिनों चीन सरकार ने 2 जर्नलिस्ट्स के वीजा डॉक्यूमेंट्स और बाकी जरूरी पेपर्स रिन्यू करने से इनकार कर दिया। लिहाजा, इन दोनों को भारत लौटना पड़ा। चीन की तरफ से कहा गया कि भारत भी उसके पत्रकारों के साथ यही सलूक करता है।

पाकिस्तानी फौजी अफसर आतंकी संगठन के साथ जुड़े,कैप्टन, वायुसेना के चीफ टेक्नीशियन तक बागी, सरकार की नीतियों से खफा जवान

इस्लामाबाद, एजेंसी।
पाकिस्तान में सेना और सुरक्षाबलों को निशाना बनाने वाला आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान मजबूत होता जा रहा है। इस कड़ी में उसके साथ सेना के वे लोग भी जुड़ रहे हैं, जो सरकार की नीतियों से असंतुष्ट हैं। बागी होने वालों में आर्मी, नेवी, एयरफोर्स सभी के अफसर भी शामिल हैं। ने ऐसे लोगों के नामों का ऐलान जिहादी चैनल तकबीर मीडिया पर किया है। वीडियो में उनके नाम और फोटो दिखाए गए हैं। नाम न छापने की शर्त पर एक सुरक्षा विश्लेषक ने कहा, ने मेजर जनरल (रिटायर्ड) जहीर उल इस्लाम अब्बासी का नाम गुप्त रखा है। अब्बासी की तालिबान से जुड़ाव की बात उस वक्त भी उजागर नहीं की गई, जब उसका कोर्ट मार्शल किया जा रहा था। अब्बासी को 1995 में बेनजीर भुट्टो की सरकार के खिलाफ एक तख्तापलट की साजिश में शामिल होने के लिए 7 साल की सजा मिली थी।

उसने तख्तापलट को 'ऑपरेशन खिलाफ' नाम दिया था, जो नाकाम रहा था। रिहाई के बाद उसने 1999 में मुशर्रफ के कहने पर 'हिज्ब अल्लाह पाकिस्तान' नाम से एक धार्मिक-राजनीतिक पार्टी बनाई। सुरक्षा विश्लेषक ने प्रतिबंधित में शामिल होने वाले सशस्त्र बलों के जवानों के नाम उजागर करना गंभीर बताया है। उन्होंने कहा, 'यह तालिबान द्वारा सशस्त्र बलों के कर्मियों की भर्ती करने का बड़ा प्रयास है। सुरक्षा बल इन भगोड़ों के खिलाफ अभियान चलाकर उनके सफाए का प्रयास करेंगे। अब्बासी पूर्व आर्मी कमांडर रहा है। सियाचिन क्षेत्र में तैनाती के दौरान उसने भारतीय सेना की चौकियों पर हमले की योजना बनाई और अंजाम दिया। विश्लेषक अब्बासी को आतंक का पर्याय बताते हैं। वह अपने हिज्ब अल्लाह पाकिस्तान गुट के जरिए शरिया कानून लागू करना चाहता था।

अमेरिका में समुद्र किनारे मरी हुई मिली लाखों मछलियां, इनमें ज्यादातर मैनहेडन प्रजाति की, ज्यादा गर्मी के चलते पानी में दम घुटा

वॉशिंगटन एजेंसी। अमेरिका के टेक्सास राज्य में लाखों मछलियां समुद्र के किनारे मरी हुई मिली हैं। मामला ह्विंटाना बीच का है। अधिकारियों के मुताबिक इन मछलियां की मौत तापमान बढ़ने के चलते पानी में सांस नहीं ले पाने के कारण हुई। टेक्सास में वाइल्ड लाइफ डिपार्टमेंट के अधिकारी के मुताबिक गर्म पानी में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।

इससे मछलियों को सांस लेना मुश्किल होता है और वो मर जाती हैं। इस प्रोसेस की वजह से मरने वाली ज्यादातर मछलियां मैनहेडन प्रजाति की हैं। सोशल मीडिया पर इनके वीडियो वायरल हो रहे हैं।

न्यूयॉर्क पोस्ट के मुताबिक गर्मियों में इस तरह से इन मछलियों का मरना आम है। समुद्र में गहरे पानी के मुकाबले किनारे का पानी ज्यादा तेजी से गर्म होता है। कई बार मछलियां

किनारे के पास वाले पानी मे फंस जाती हैं और वापस नहीं लौट पाती हैं। मछलियों के मरने से पहले वो पानी के ऊपर आकर ऑक्सीजन लेने की कोशिश करती हैं, जबकि कुछ ठंड के लिए बिल्कुल तलहटी में चली जाती हैं। टेक्सास में मरी हुई मछलियों को किनारे पर आना शुक्रवार से जारी है। हालांकि, प्रशासन ने कहा है कि वो इन्हें हटाते जा रहे हैं और बीच साफ कर रहे हैं। न्यूयॉर्क पोस्ट के मुताबिक गर्मियों में इस तरह से इन मछलियों का मरना आम है। समुद्र में गहरे पानी के मुकाबले किनारे का पानी ज्यादा तेजी से गर्म होता है। कई बार मछलियां किनारे के पास वाले पानी मे फंस जाती हैं और वापस नहीं लौट पाती हैं। मछलियों के मरने से पहले वो पानी के ऊपर आकर ऑक्सीजन लेने की कोशिश करती हैं, जबकि कुछ ठंड के लिए बिल्कुल तलहटी में चली जाती हैं। टेक्सास में मरी हुई मछलियों को किनारे पर आना शुक्रवार से जारी है। हालांकि, प्रशासन ने कहा है कि वो इन्हें हटाते जा रहे हैं और बीच साफ कर रहे हैं।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129